देशान्तर

पश्चिमके इक्कीस देशोंकी
एक सौ इकसठ आधुनिक कविताएँ

देशान्तर

*

धर्मवीर भारती
द्वारा
अनूदित और संकलित



भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला ग्रन्थाक-१२०
सम्पादक एव नियामक
लक्ष्मीचन्द्र जैन

Lokodaya Series Title No 120
DESHANTAR
(Poems)
Translated and Compiled
by
Dr Dharmaveer Bharti
Bharatiya Jnanpith
Publication
Second Edition 1965
Price Rs 12 00

भारतीय ज्ञानपीठ
प्रकाशन
प्रधान कार्यालय
९ अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७
प्रकाशन कार्यालय
दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-५
विक्रय केन्द्र
३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली ६
द्वितीय संस्करण १९६५
मूल्य १२ ००

सन्मति मुद्रणालय, वाराणसी-५

शान्ति को
अमित ममता आर
आभार से

मुझमें बसे हुए स्मृतिबिम्ब, सुदूर महसूस किये हुए दृश्य
मीनारें, नगर, सेतु और रास्तों के
अप्रकाशित घुमाव और देवताओं की बस्ती
वाले रहस्यमय देशो का इ द्रजाल

—'रिल्क'

वक्तव्य



प्रस्तुत सकलनमें यूरोप और अमेरिका (उत्तर और दक्षिण) के इक्कीस देशोकी एक सौ इकसठ कविताओकी हिन्दी छायाएँ प्रस्तुत हैं। ये कविताएँ केवल उन कवियोकी हैं जो २०वी शताब्दीमें प्रख्यात हुए। आज जिसे हम आधुनिक काव्यबोध कहते हैं, उसे निर्मित करनेमें इन सबका हाथ रहा है। सकलित कवियोमें-से कुछ अपनी भाषाके सर्वश्रेष्ठ आधुनिक कवि माने जाते हैं, कुछको लेकर काफी वाद विवाद चलता रहा ह, कुछमें सम्भावनाएँ हैं पर अभी वे पूर्णत प्रतिष्ठित नही हो पाये और कुछकी सम्भावनाएँ उनकी असमय मृत्युके कारण पूर्णत विकसित नही हो पायी। कुछ कवि ऐसे भी है जो अपेक्षाकृत अल्पख्यात है किन्तु उनकी कतिपय कृतियां आधुनिक भावभूमिके किसी विशेष क्षेत्रका उदघाटन करती ह, अत वे सकलनीय नहीं। कुछ महत्त्वपूर्ण कवि ऐसे भी हैं जिनका अनुवाद करना सम्भव नही प्रतीत हो सका, अत उनकी कृतियाँ सम्मिलित नहीं की जा सकीं।

कि यह सकलन समूचे आधुनिक काव्यका सर्वांग सम्पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है यह मेरा दावा कतई नही है। यह केवल उसकी वैविध्यकी बानगी प्रस्तुत करता ह।

या तो जब कभी दो सास्कृतिक धाराओमें परस्पर सम्मिलन हुआ ह, अनुवाद बराबर आदान प्रदानका एक उपयोगी माध्यम रहा ह। लेकिन आधुनिक सन्दर्भमें नये कविके लिए काव्यका अनुवाद एक दूसरा महत्त्व भी रखता ह। क्या कारण ह कि एजरा पाउण्डसे बोरिस पस्तरनाक तक विन्हीं विशेष स्थितियोमें अनुवाद कार्यकी ओर झुकते देख पडते हैं।

इसका एक विशेष कारण ह।

मध्ययुगमें कवि कमका एक आवश्यक और महत्त्वपूण अग था—गुरु शिष्य परम्परा। प्रत्येक उदीयमान कवि किसी रससिद्ध कविको गुरुके रूपमें स्वीकारता था जिसे इस्लाह (परामर्श) देने, शिष्यके लेखनमें

संशोधन (नरमीम) करनेका पूरा अधिकार रहता था। इन परामर्शोंके अनुसार कवि अभ्यास करता था और परिपक्वता और प्रौढ़ता तक पहुँचते पहुँचते स्वयं अपनी निजी शैलीको खोजता और प्रतिष्ठित करता था।

आधुनिक कविता जिस क्रान्तिकारी भावभूमिमें पनपी उसमें यह गुरु निर्देशित अनुशासित अभ्यासकी परम्परा न केवल अनावश्यक वरन बाधक और हानिकर प्रतीत हुई और समाप्त हो गयी। यही नहीं वरन काव्य सम्प्रदाय जितनी तेजीसे बदले उसमें गुरु शिष्यका तो प्रश्न दूर रहा नयी पीढ़ीने तो अनिवार्यतः अपनेको पुरानी पीढ़ीसे मनसा पृथक पाया। ऐसी स्थितिमें प्रत्येक नया कवि कबीरकी भाषामें न केवल 'निगुरा' रहा वरन काव्यके क्षेत्रमें अपने निगुरेपनको गर्वकी वस्तु मानता रहा।

लेकिन ऊर्णनाभकी भाँति केवल अपने अन्दरसे ही सारे अनुशासन बुन लेना, या तो मकड़ी ही के लिए सम्भव है या केवल ब्रह्मके लिए। प्रत्येक नये कविको (चाहे वह स्वीकार करे या न करे) निर्देश, अनुशासन और अभ्यासकी आवश्यकता होती है और समय समयपर वह इसे महसूस भी करता है। ऐसी अवस्थामें अगर वह अपने तत्काल पूर्ववर्ती काव्य सम्प्रदायसे निजको सहमत नहीं पाता तो उनसे भी और पहलेके कवियोंमें से अपनी प्रकृतिके अनुकूल कवियोंको चुनकर उनके काव्यका अवगाहन करता है, उनका अनुवाद कर अभ्यास करता है और इस तरह अपनी अभिव्यक्तिको समृद्ध बनाता है। यह उसीकी रचना प्रक्रियाका एक आवश्यक अंग है। मसलन रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा पहले ब्रजबूलिके कवियों और बादमें कबीर तथा बाउलोंकी खोज। कभी कभी इस खोजके लिए कवि देश देशान्तरके काव्यकी ओर निगाह दौड़ाता है और उसमें से अपनी प्रकृतिके अनुकूल काव्य कृतियोंको खोजता है मसलन एज़रा पाउण्ड द्वारा चीनी कविताओंकी खोज।

किन्तु यहाँपर एक बात कहना चाहूँगा। आधुनिक प्रकृति उतने निष्क्रिय समर्पणकी नहीं है कि जिस क्षण ' भई रे पूता गुरू सौं भेंट ' उसी क्षण अपना दायित्व समाप्त समझ ले। आधुनिक प्रकृतिके अनुसार यह खोज उन अर्थोंमें अब गुरुकी खोज न होकर एक सफल और समर्थ 'समानधर्मा' की खोज होती है। यह समानधर्मी कृतित्व खोजता है, वह

एक कविमें मिले या कई कवियोंमें, एक भाषामें मिले या कई भाषाओंमें, एक काव्यधारामें मिले या कई काव्यधाराओंमें।

जब कहीं किसी दूसरी भाषामें भी इस तरहके किसी कृतित्वकी उपलब्धि नये कविको होती है तो उसका सहज उत्साह उस कृतित्वको अपनी भाषामें पुनः प्रस्तुत करना चाहता है। उसको सहसा यह लगता है कि 'अरे सचमुच बिलकुल यही बात तो वह कहना चाहता था पर कहने का इतना सटीक ढंग उसे नहीं आ पा रहा था।' और वह काव्य कृति स्वयम् उसमें एक रचनात्मक उत्साह जगा देती है और अनुवाद उसीका परिणाम होता है। लेकिन यहींपर एक कठिनाई भी आ खड़ी होती है। मूल कृतिमें और उसके अनुवादके बीचमें दीवारें बहुत खड़ी रहती हैं। पृथक् संस्कार, पृथक् काव्य रूढ़ियाँ, पृथक् बिम्ब समूह। जोड़नेवाला तत्त्व बहुत क्षीण रहता है। और ऐसी स्थितिमें सफल अनुवाद प्रस्तुत करें तो वह शाब्दिक अनुवाद नहीं हो पाता और शाब्दिक अनुवाद प्रस्तुत करें तो वह सफल नहीं हो पाता। और काव्य कला ऐसी कला है जिसमें शब्द बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण है।

इसी स्थितिको लक्षित कर एक अनुवादकने कहा था कि 'काव्यानुवादकी प्रकृति बिलकुल स्त्री प्रकृति होती है। जितनी सुन्दर होगी उतनी ही अविश्वसनीय।" स्त्री प्रकृतिके बारेमें तो इस कथनसे पूर्णतया सहमत हूँ पर अनुवादोंके सम्बन्धमें मेरे खयालमें एक बीचका रास्ता निकालनेकी गुंजायश है। मैंने भरसक कोशिश की है कि अनुवाद सुन्दर भी बनें और विश्वसनीय भी।

इन अनुवादोंको प्रस्तुत करते समय स्वयम् इन महान कवियोंकी वाणी में डूबनेकी जो सुखद अनुभूति मिली है, जिस प्रकार कभी कभी मेरे अन्दर कहीं कुछ जो बन्द था खुलता हुआ लगा है, जिस प्रकार मुझे आत्मीयता और समानधर्मी तत्त्व मिले हैं उनके लिए मेरा मन आदर और आभारसे नत है।

१६ जून १९६०

धर्मवीर भारती

अनुक्रम

फोष्टारिका

ग्रीस

चिली

नीग्रो

प्यूर्टोरिको

पेरू

देशान्तर

कवि-परिचय

• •

अमेरिका

एज़रा पाउण्ड ज० १८८५। अँगरेजीभाषी देशोंमें आधुनिक काव्यधाराका जन्मदाता। ईलियट, हेमिंग्वे, जेम्स ज्वायस-जैसी प्रतिभाओंका प्रोत्साहक। अनेक काव्यान्दोलनोंका प्रवर्त्तक।

वैलेस स्टीवेन्स ज० १८७९। एक बड़ी व्यावसायिक कम्पनीका उपाध्यक्ष। उसने आधुनिक नागरिक सभ्यताके उपकरणोंसे एक स्वतन्त्र स्वप्नलोक सृजन करनेकी चेष्टा की है।

कार्ल सैण्डबर्ग ज० १८७८। वाल्ट ह्विटमैनका अनुयायी।

एडना सेण्ट वी० मिले ज० १८९२। आधुनिक काव्यमें स्वच्छन्दतावादी सौन्दर्योपासनाकी प्रवृत्तिकी ओर विशेष झुकाववाली कवयित्री।

ई० ई० कमिंग्स ज० १८९४। नये प्रयोगोंका सफल कवि।

केनेथ पचेन ज० १९११। आश्चर्यजनक सफलताओंका कवि। तानाशाहीका विरोध, लेकिन मानवीय नियतिके उज्ज्वल भविष्यमें अदम्य आस्था।

विलियम कार्लोस विलियम्स ज० १८८३। चिकित्सक। अपने समकालीनोंमें सम्मान प्राप्त कवि।

जॉर्ज स्टार अण्टर मेयेर ज० १८८६। पत्रकार अध्यापक।

आर्चीबाल्ड मैक्लीश ज० १८९२। पत्रकार। युद्धमें भाग लिया। विदेश भ्रमण और रेडियो छन्दरूपकोंमें ख्याति प्राप्त की।

अर्जेण्टाइना

राफाएल अल्बर्टो एरियेटा ज० १८८९। ला प्लाटा विश्वविद्यालयमें यूरोपीय साहित्यका अध्यापन।

कोरॉदा नले राकग्रोलो ज० १९००। जेनेवामें शिक्षा। स्पेनमें रहकर अत्याधुनिकवादका नेतृत्व। १९२१ में अर्जेण्टाइनामें आकर नयी काव्यधाराका प्रवर्तन।

एल्फाजिना स्तोर्नी ज० १८९२–मृ० १९३८। स्विट्ज़रलैण्डमें जन्म। अध्यापन तथा पत्रकारिता। शैली और विषयके कारण अत्यन्त लोकप्रिय कवयित्री।

जार्ज लुइस बोरजे ज० १८९८। ब्यूनो आयर्सकी समितिसे काव्यपुरस्कार प्राप्त।

लुइस कने ज० १८९७। १७वीं शतीकी बैलेड शैलीको अपनाकर नये विषयोंपर काव्य प्रयोग।

लुइस एल० फ्रान्को ज० १८९८। स्थानीय लोकगीतोंके प्रभाव ग्रहण।

फ्रान्सिस्को लोपेस मेरिनो ज० १९०४–मृ० १९२८। सुकुमार और उदास कविताओंके कारण प्रख्यात। अल्प वयमें मृत्यु।

रयापाल्डो मेरेशल ज० १९००। प्रमुख साहित्यिक पत्रिका 'लिबरा'का सम्पादन।

इक्वाडोर

जार्ज करेरा आन्द्रादे ज० १९०३। १९ वर्षकी आयुमें ही एक पत्रिकाके सम्पादनसे साहित्यिक जीवनका आरम्भ। सम्पूर्ण आयु पत्रकार और राजदूतके कार्यमें बीती है। सन् १९२० के बाद जर्मनी, फ्रांस और स्पेनकी यात्रा। १९३८ में जापानकी यात्रा और हाइकू शैलीमें नये काव्य प्रयोग। १९३९-४० में चीन यात्रा और चीनी दृश्याकनोंका काव्यमें प्रभाव।

इंग्लैण्ड

रूपर्ट ब्रुक ज० १८८७–मृ० १९१५। प्रथम महायुद्धमें मृत्यु।

जेम्स ज्वायस ज० १८८२। प्रख्यात अवचेतन प्रधान कथाकार। सन् १९४१में फ्रांसमें मृत्यु।

डी० एच० लॉरेन्स ज० १८८५–मृ० १९३०। अत्यन्त प्रतिभाशाली कथाकार, कवि तथा मौलिक चिन्तक। निम्नवर्गसे उठा और उग्र विचारोंके कारण रूढ़िवादियों और साम्यवादियोंकी समान रूपसे आलोचना करता रहा।

वाल्टर डि ला मेयर ज० १८७३। कल्पना और सुकुमार भावनाओं, गूढ़ शैलियों और सहज अभिव्यक्तियोंके लिए ख्यात।

एडिथ सिटवेल ज० १८८७। इंग्लैण्डके एक अभिजात्य परिवारमें उत्पन्न। रहस्यवाद तथा नयी काव्य शैलीकी सफल प्रयोगकर्त्री।

टी० एस० ईलियट ज० १८८८। अमेरिकामें उत्पन्न। एज़रा पाउण्डसे प्रभाव ग्रहण। १९१३ से लन्दनमें निवास। पहले बैंकमें क्लर्क। फिर अध्यापन। इस समय एक प्रकाशन संस्थाका संचालन। समकालीन अँगरेज़ी कवियोंमें उच्चतम स्थान। नोबेल पुरस्कार प्राप्त।

डब्ल्यू० एच० आडेन ज० १९०७। बीसवीं शतीके तीसरे दशकसे ऑक्सफोर्ड गोष्ठीका प्रवर्तक। पहले मार्क्सवाद, बादमें धर्मकी ओर झुकाव।

सेसिल डे ल्युइस ज० १९०४। आडेन गोष्ठीका सम्मानित सदस्य। अध्यापन और समीक्षा।

लुइ मैकनीस ज० १९०७। आडेन गोष्ठीका प्रारम्भिक सदस्य। प्रवाहशील काव्य। बी०बी०सी० में पद्यरूपकोंका प्रणेता और प्रस्तुतकर्ता।

डिलन टामस ज० १९१४–मृ १९५७। एक नयी काव्य भाषाका प्रवतक। अल्प वयमें मृत्यु।

एलिज़ाबेथ जेनिंग सन् ४० के उपरान्त प्रकाश होनेवाले कवि-वर्गमें प्रतिष्ठित स्थान।

इटली

अन्तोन्यो रिनाल्दी ज० १९१४। अध्यापन। १९४७ में काव्यपर पुरस्कार प्राप्त।

जीपेस उंगारेत्ती ज० १८८८। मिस्रमें उत्पन्न। इटलीका वर्तमान महाकवि।

क्यूबा

निकोलस गीलियन क्यूबाके लोक साहित्यका विशेषज्ञ। अध्यापक पत्रकार, मेयर और राज्याधिकारी रह चुका है। प्रारम्भिक कविताओंपर दिलों और बोदलेयरका प्रभाव।

रजिनो पेद्रोसो चीनी और नीग्रो रक्तका मिश्रण। श्रमजीवी। दावर और इस्पातके कारखानोंमें जीवन भर काम किया है।

कोष्टारिका

राफ़ाएल एस्त्रादा ज० १९०१—मृ० १९३४। संगीतज्ञ। कानूनका विशेषज्ञ।

दुरासीने बाबाल (हैटो) पेरिसमें शिक्षा प्राप्त। न्यायाधीश। लन्दन और हवानामें प्रतिनिधि - मण्डलका अध्यक्ष। प्रतीकवादी धाराका प्रथम कवि।

राफ़ाएल आरेवालो मार्टिनेज़ (ग्वाटेमाला) राष्ट्रीय पुस्तकालयका अध्यक्ष। चिर-परिचितको रसमय और काव्यात्मक बनानेमें कुशल।

ग्रीस

ज्योज्यिस द्रोसिनिस ज० १८५९। 'एस्टिया' नामक पत्रिकाका संस्थापक। शिक्षा विभागका संचालक रहा।

सी० पी० कवफी ज० १८६८-मृ० १९३३। इंग्लण्डमें शिक्षा प्राप्त। जीवनमें केवल दो बार एथेन्स जा पाया किन्तु ग्रीसमें आधुनिक काव्य-धाराका सक्षम प्रवर्तक।

तेफ़ेरास अन्थियस ज० १९००। एथेन्स निवासी।

सोतिरिस स्किपिस ज० १८८१। फ्रान्समें शिक्षा प्राप्त।

एन्जेलिनो सिकिलियानोस ज० १८८४। एक अमेरिकन तरुणीसे विवाह। ग्रीसकी पुरानी संस्कृतिके नवजागरणमें संलग्न। प्राचीन नाट्य-परम्परा, पुराने लोकपर्व आदिका पुनरुत्थानकर्ता।

चिली

ग्रैब्रिएला मिस्त्राल प्रथम काव्य संकलन १९१४ में प्रकाशित। शिक्षा अधिकारी, राजदूत, साहित्य विभागकी अध्यक्षा रह चुकी हैं। परम्परागत काव्यरूप तथा आधुनिक शैलीमें समान रूपसे सफल। १९४५ में नोबेल पुरस्कार प्राप्त।

पेब्लो नेरूदा नये काव्यरूपोंका समर्थ प्रयोक्ता। स्पेनमें राजदूत। पिछले दिनों राजनीतिक क्षेत्रमें प्रवेश और अब साम्यवादियोंमें लोकप्रिय।

विन्सेन्त यूदोबारो ज० १८९३। चिलीके साहित्यमें सर्वप्रथम यूरोपीय प्रभावोंको ग्रहण किया। बहुत-सा काव्य फ्रान्सीसी भाषामें ही लिखा।

पेद्लो द' रोश्य ज० १८९४। एक देहाती बूर्ज्वा परिवारमें उत्पन्न। अध्ययन। पत्रकारिता। मार्क्सवादी। मल्टीट्यूड्स नामक पत्रका सम्पादन।

जर्मनी

ह्यूगो वान हाफ्मान्स्थल ज० १८७४–मृ० १९२९। वियना निवासी। अधिकांश कविताएँ १७ वर्षसे २५ वर्षकी आयुमें लिखी गयीं, तदुपरान्त नाटक और समीक्षाकी ओर अभिरुचि।

रेनर मरिय रिल्क ज० १८७५–मृ० १९२७। सम्भवत इस शतीका महानतम यूरोपीय कवि। रहस्यवादी अनुभूतियाँ, मानवीय परिवेश, सूक्ष्मतम भाषाका प्रयोग और गीतात्मकता। विश्वके आधुनिक काव्य पर रिल्कका प्रभाव अमिट है।

बर्तोल्त ब्रेख्त ज० १८९०–मृ० १९५६। १९२२ में अपने थ्री पेनी आपेरासे अकस्मात् प्रख्यात। विश्व नाट्य-साहित्यका एक महान व्यक्तित्व। मार्क्सवादी। सन् '३३ में नाज़ियोंके कारण निर्वासित। युद्धके बाद पूर्वीय जर्मनीमें प्रत्यावर्तन और सन १९५६ में दिवंगत।

हरमान हेस्स प्रख्यात कथाकार कवि। नोबेल पुरस्कार प्राप्त।

फ्रेडरिक ज्यार्ज युंगर ज० १८९८। हैनोवर निवासी। परम्परागत काव्य-रूपोंका नवीन सन्दर्भोंमें प्रयोग।

तुर्की

नाजिम हिकमत तुर्कीका प्रख्यात कवि। उग्र राजनीतिक विचारोंके कारण आयुका श्रेष्ठ भाग जेलखानोंमें बिताना पड़ा है। शान्ति पुरस्कारका विजेता।

यहिया कमाल पुरानी पीढ़ीका कवि किन्तु नये काव्यरूपोंका प्रयोग। नेशनल असेम्बलीका उपाध्यक्ष रह चुका है।

जफर यत्कीं युद्धोत्तर पीढ़ीका अग्रणी रोमानी कवि।

हसन दिनाम नाज़िम हिकमतका शिष्य।

फाज़िल हुस्नू दागलार्का प्रख्यात कवि। कई लोकप्रिय सकलनोंका प्रणेता।

नीग्रो (अमेरिकन)

फेण्टन जॉन्सन जन्म, १८८८, शिकागो। इन्होंने १९ वर्षकी अवस्थासे ही मौलिक नाटक लिखना आरम्भ कर दिया था। १९१४ में पहला कविता संग्रह 'अ लिट्ल ड्रीमिंग', कविके अतिरिक्त पत्रकार, और कथाकार भी। आरम्भिक कविताओंमें आत्मवाद और डायलेक्ट स्कूलसे प्रभावित, बादमें सण्डवर्गसे।

लैस्ली पिंकने हिल जन्म १४ मई, १८८०। जिकन यूनिवर्सिटीसे १९०४ में डॉक्टरेट (साहित्यमें)। आधुनिक अमेरिकाका महान शिक्षाविद और समाज सुधारक, गीतकार और नाटककार 'द विंग्स ऑफ ऑपरेशन'—गीतसंग्रह, १९२७ में, टॉसण्ट ल ओवचर, नाटक १९२९ में।

क्लॉड मैके जन्म १५ सितम्बर, १८९० जमैका (वेस्ट इण्डीजमें), मृत्यु २२ मई १९४९। जन्मजात कवि, उपन्यासकार, पत्रकार और पर्यटक। औपचारिक ढंगसे कोई शिक्षा नहीं। २२ वर्षकी अवस्थासे ही साहित्यकार। अनेक पुरस्कारोंका विजेता। होटलमें वेटर, फ्रान्समें आर्टिस्टके माडलसे लेकर लन्दन और न्यूयार्कमें पत्रकारिता तकके धन्धे। साथ ही साहित्य रचना। गोरी जातिकी शोषणकारी प्रवृत्तियोंके विरुद्ध अत्यन्त उग्र काव्य साहित्यका प्रणेता। 'सॉन्ग्स ऑफ जमैका', हार्लेम शैडोज, 'बनाना बॉटम', 'बान्जो' आदि प्रसिद्ध कृतियोंका स्रष्टा।

जोजफ सीमन कॉटर जन्म केण्टकीके बार्डस टाउनमें—१८६१। तीसरे दर्जे (सानियर) से स्कूल छोड़ देना पड़ा, और २२ वर्षकी उम्रमें जब फिरसे पढ़ना शुरू किया, तबतक ईंट बनाने और तम्बाकूकी निराई करनेकी मजदूरीसे लेकर, प्राइज फाइटर (दंगलबाज) तकके धन्धे कर चुका था। किन्तु शिक्षित होनेके बाद, अच्छा खासा शिक्षा शास्त्री हो गया। इसके अतिरिक्त, वह कवि और बाल साहित्यका स्रष्टा है। डनबार परम्परावादी होनेपर भी, कटु आलोचक। ट्रैजेडी ऑफ पाट' बहु पुरस्कृत। काव्य संग्रह '३८ में।

लैंग्स्टन ह्यूजस जॉपलिनमें, १ फरवरी १९०२ में जन्म। १९४३ में डा० लिट। अमेरिकाके अग्रणी कवियोंमें से एक। काव्य क्षेत्रमें अनेक पुरस्कारोंसे सम्मानित। अत्यन्त जागरूक यह अमेरिकन, गीतकार,

महानीकार, रेडियो स्क्रिप्ट लेखक, व्यंग्यकार—साहित्यके प्रत्येक क्षेत्रमें, नीग्रो जीवनके सम्पूर्ण अनोखा सशक्त चितेरा।

प्युर्टोरिको

अलीसिया कार्मेन कर्दीरया   ज० १९०८। 'आल्मा लातीना' की सम्पादिका। कैथोलिक। ग्रेब्रियेला मिस्त्रालसे प्रभावित।

लुइस मुनोज मारिन   प्युर्टोरिकोके स्वतन्त्रता संग्रामके अधिनायक लुइस मुनोज रिवेराका पुत्र। पापुलर डेमोक्रेटिक पार्टीका नेता। राज परिषद्का अध्यक्ष।

पेरू

एनरीक बुस्तामान्ते बैलीवियन   ज० १८८४–मृ० १९३७। निरंतर विकासशील शैली। प्रकाशन संस्थाका अध्यक्ष। राजदूत।

एमिलियो वास्केज   ज० १९०३। रेड इण्डियन वातावरण और शब्दावली से शैलीको समृद्ध बनानेका प्रयास किया है।

सेसर वाल्येज्यो   ज० १८९५–मृ० १९३६। मध्यवर्गमें उत्पन्न। लोकप्रिय शैली। १९२३ में यूरोप प्रस्थान। स्पेनके गृहयुद्धसे भयानक मानसिक आघात।

जैवियर एमिल   ज० १९०३। यूरोप निवासके समय अति यथार्थवादका प्रभाव। बादमें रूमानी नवप्रतीकवादकी ओर झुकाव।

एनरीक पेना बैरीनिशिया   ज० १९०४। प्रतीकवादी। कूटनीतिक प्रतिनिधि।

कार्लोस आक्विन्दो द अमात   ज० १९०९—मृ० १९३६। अतियथार्थवादी धाराका प्रमुख कवि। १९३१ में राजनीतिक निर्वासन मिला। स्पेनमें यक्ष्मासे मृत्यु।

राफाएल मेन्देज दोरिख   ज० १९०३। प्रारम्भमें धर्मके प्रति अभिरुचि १९३० में आतंकवादी आन्दोलनमें शरीक। कवितामें प्रभाववादी शैली।

फ्रान्स

लुइ अरगॉ प्रख्यात कथाकार, कवि, कम्यूनिस्ट कार्यकर्ता। प्रारम्भमें अतियथार्थवादी धारा। बादमें सामाजिक यथार्थवादी धाराका अनुसरण।

पाल इल्यार समकालीन काव्यका महत्तम व्यक्तित्व। अतियथार्थवादी धाराका नेता।

जाक प्रीवर्ट अत्यन्त लोकप्रिय कवि। काव्यके अतिरिक्त अतियथार्थवादी चित्रोंका निर्माता।

अर्ने मास्के ओडेसामें उत्पन्न। बेलजियममें शैशव बीता। अब अमेरिकावासी।

पाल कालिने बेलजियममें उत्पन्न। अतियथार्थवादी।

क्लाद राय ज० १९१५। पेरिस निवासी।

रने शार शिल्प और प्रतीक योजनाकी दृष्टिसे सबसे लोकप्रिय कवि। इल्यारका शिष्य।

अरा मिशो यश और प्रतिष्ठामें इल्यारका समकक्ष। बेलजियममें उत्पन्न किन्तु अब फ्रेंच नागरिक।

फ्रान्सी जेम ज० १८६८, मृ० १९३७। सरलता तथा चित्रात्मकता प्रधान शैलीके लिए प्रख्यात।

ब्राजील

म्यूरिसेल मेन्द ज० १९०२। १९३३में प्रथम काव्य सकलनका प्रकाशन। नव कैथोलिक प्रवृत्तिका अनुयायी।

जॉर्ज दे लिमा ज० १८९३। नयी प्रवृत्तियोंका अग्रदूत। चिकित्सक। अध्यापक। विधान सभाका सदस्य।

कार्लास द्रमन्द द अन्द्रादे समकालीन कवियोंमें सबसे सचेत शिल्पकार। अतियथार्थवाद कल्पनाएँ।

मान्युएल बान्देरा पत्रकार। नवस्वमानी प्रवृत्तियोंकी ओर झुकाव।

रोनाल्द द कैरवाल्हो ज० १८९६-मृ० १९३५। पत्रकार। राजदूत। राज्याधिकारी।

मैक्सिको

जेम तारेंस बोदो ज० १९०२। कूटनीतिक विभागका अध्यक्ष। 'कातेमा रेनियो' पत्रकी गोष्ठीका सक्रिय सदस्य।

एनारो एस्त्रादा ज० १८८७–मृ० १९३७। १९३० में गृहमन्त्री। स्पेनमें राजदूत रहा।

राफाएल सोलाना ज० १९१५। 'टालर' समूहका सदस्य।

कार्लो पेलिसर ज० १९०२। परम्पराका स्वर अपेक्षाकृत अधिक मुखर।

आक्टावियो पाज सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कवि। प्रख्यात साहित्यिक पत्र 'टालर'के सचालक समूहका प्रमुखतम सदस्य।

एनरीक गोंजालेज मार्टिन ज० १८७१–मृ० १९५२। बौद्धिकताप्रधान कवि। नयी प्रवृत्तियोंकी दिशामें समकालीनोंका नेतृत्व किया।

विलबर्टो एल० कैण्टान ज० १९२२। पत्रकार। समीक्षक। गद्यलेखक।

वेनेजुएला

एजेल मीगेल केरमेट ज० १८९९–मृ० १९३९। अति यथार्थवाद और रहस्यवादी प्रवृत्तिया।

मागेल आटेरो सिल्वा बहुत दिनों तक देशसे निर्वासन। रूमानी प्रवृत्तिया।

आटो द सोला वियनका सम्पादक। समकालीन कवियामें प्रमुखतम।

स्पेन

मिगुएल द उनामुनो ज १८६४–मृ० १९३६। अस्तित्ववादी काव्य धाराका अग्रदूत।

अन्तोनियो मशादो ज० १८७५–मृ० १९३९। सहज काव्यशैली। स्पेनी गृहयुद्धमें मारा गया।

जुआँ रेमो जिमेनेज ज० १८८१। सुकुमार सगीतात्मक शैली। अब अमेरिकाका नागरिक।

राफाएल आल्बर्ती ज० १९०२। स्पेनमें उत्पन्न। अब अर्जेण्टाइनाका निवासी।

फेडरिको गार्सिया लोर्का ज० १८९९–मृ० १९३६। लोकगीतोंसे प्रभावित काव्य शैली। आधुनिक स्पेनी कवियोंमें सर्वाधिक प्रख्यात।

मिगुएल हर्नान्देज ज० १९१०–मृ० १९४२। सरल लोकगीत शैलोसे

विकसित होकर प्रौढताकी ओर उन्मुख । फ्रंको सरकारके कारागारमें बन्दी होकर मरा ।

पेद्रो सालिनस ज० १८९१–मृ० १९५१ । सूक्ष्म गीतात्मक भावनाएँ । गृहयुद्धके बाद स्पेनसे निर्वासित ।

सोवियत रूस

अलेक्जैण्डर ब्लाक् प्रतीकवाद धाराका महत्तम कवि । रूसी क्रान्तिपर उनकी कृति 'द ट्वेल्व' आधुनिक रूसी काव्यकी महत्वपूर्ण कृति जानी जाती है ।

डिमिट्री मर्शोव्स्की ज० १८६५ । समीक्षक । रहस्यवादी प्रवृत्तियाँ ।

व्लाडीमीर मायकोवस्की ज० १८९३–मृ० १९३० । प्रारम्भमें भविष्य-वादी, बादमें कम्यूनिस्ट, अन्तमें आत्महत्या ।

सर्जा येसेनिन १९१६ में प्रकाशित सकलनसे प्रख्यात । बिम्बवादी । कम्यूनिस्टोंसे असहमत । आत्महत्या द्वारा मृत्यु ।

इवान ब्युनिन क्रान्तिके बाद निर्वासित । नोबेल पुरस्कार प्राप्त । प्रख्यात कथाकार और कवि । रूसमें उसकी कृतियोंका प्रकाशन निषिद्ध ।

अन्ना अख्मातोवा प्रख्यात गीत लेखिका । ज्डनावकी कोप भाजन ।

बोरिस पास्तरनाक ज० १८९० मृ० १९६० । महत्तम रूसी कवि । १९५८ में नोबेल पुरस्कार मिला किन्तु ख्रुश्चेवके दबके कारण अस्वीकार करना पड़ा ।

कोन्स्तान्तिन सिमानाव द्वितीय महायुद्धमें गीतोंके कारण प्रसिद्ध । रूसी सरकारका कृपापात्र ।

हालैण्ड

गेरि अख्तरबर्ग ज० १९०८ । असत्य लोकप्रिय कवि ।

अन्द्रियाँ मोरिएँ ज० १९१२ । कवि । समीक्षक । पत्रकार ।

हेन्स लाडीजेन ज० १९२४—मृ० १९४९ । मृत्युके बाद कविताओंका प्रकाशन ।

ल्यूसबर्ट ज० १९२४ । चित्रकार । सम्पादन ।

वसालिस ज० १९०९ । एक प्रख्यात कवयित्री जो चिकित्सक है ।



सृजन का शब्द

आरम्भ मे केवल शब्द था
किन्तु उसकी सार्थकता थी श्रुति बनने मे
कि वह किसी से कहा जाय
मौन को टूटना अनिवार्य था
शब्द को कहा जाना था
ताकि प्रलय का अराजक तिमिर
व्यवस्थित उजियाले मे
रूपान्तरित हो

ताकि रेगिस्तान
गुलाबो की क्यारी बन जाय
शब्द का कहा जाना अनिवार्य था
आदम की पसलियो के घाव से
हवा के मुक्त अस्तित्व की प्रतिष्ठा के लिए
शब्द को कहा जाना था

चूँकि सत्य सदा सत्य है
आज भी अनिवार्य है
अत आज के लिए भी शब्द है
और उसे कहा जाना अनिवार्य है

—जॉर्ज स्टार अपटरमेयेर

अमेरिका

अक्र चहार का मकबरा

मै तुम्हारी आत्मा हूँ, निफ़ुपतिस्, मैने निगरानी की है
पिछले ५० लाख वर्षों से, और तुम्हारी मुर्दा आँखें
हिली नही, न मेरे रति सकेतो को समझ सकी
और तुम्हारे कृश अग, जिसमे मैं धधकती हुई चलती थी,
अब मेरे या अन्य किसी अग्निवर्णी वस्तु के स्पर्श से धधक नही
उठते !

देखो तुम्हारे सिरहाने तकिया लगाने को घास उग आयी है
और चूमती है तुम्हे अपनी अगणित पल्लव-जिह्वाओ से
पर मैं तुम्हारे चुम्बनो से वचिता हूँ
मैं दीवार के स्वर्णाक्षर पढ चुकी हूँ
और उनके प्रतीको पर अपनी चिन्तना थका चुकी हूँ
और इस मकबरे मे अब कोई भी नयापन शेष नही रहा

मैने तुम्हारा बहुत ख्याल रखा है। देखो मैने मद्य-मजूषाओ के
मोम चिह्न नही तोडे कि
तुम कही जाग कर मदिरा की एक घूँट न पीना चाहो
और तुम्हारे समस्त वस्त्रो की शिकने मै ठीक करती रही हूँ

मैं कैसे भूलूँ ओ निर्मोही !
कुछ ही दिनो पहले मैं नदी थी

नदी ? हाँ, तुम कितने किशोर थे
और तुम पर तीन आत्माएँ मँडरा रही थी
और मैं आयी
और बहती हुई तुममे प्रविष्ट हो गयी, उनको अपदस्थ करती हुई
मैं तुमसे एकमेक रही हूँ, तुमको रत्ती रत्ती जानती हूँ
क्या मैंने तुम्हारी हथेलियाँ और अँगुलियो के पोर नही छुए है ?
मैं तुममे आयी, तुम्हारे आरपार गयी, एड़ियो के आसपास तक
और आना जाना क्या ? क्या मै ही तुम नही थी ? केवल तुम ?
और इस स्थान मे कण भर धूप भी मुझे चैन देने नही आती
गहन तिमिर मुझे चीर रहा है
और मुझ पर ज्योति अवतरित नही होती,
और तुम भी एक एक शब्द नही कहते,दिन पर दिन बीत जाते हैं।
ओह मैं मुक्त हो सकती हूँ, सील मुहर
और द्वार पर की गयी तमाम शिल्पकारीके बावजूद
हरे काँच से बाहर जा सकती हूँ

किन्तु यहा शान्ति है
अत कौन जाय ?

—एज़रा पाउण्ड

समापन वाक्य

ओ मेरे गीतो
इतनी उत्कण्ठा और जिज्ञासा से क्यों

क्या उनमें तुम्हें अपने गुज़रे खोये मिल

गोदना

रोशनी मकडी है
जल पर रेंगती है
वर्फ के किनारो पर
तुम्हारी पलको के तले
और वहाँ अपना जाला बुनती है
अपने दो जाले

तुम्हारे नेत्रो के जाले
हिलगे हैं, तुम्हारे
मास और अस्थियो से
जैसे छत की कडियो या घासो से

तुम्हारे नेत्रो के डोरे हैं
जल की सतह पर
वर्फ के छोरो पर

—वालेस स्टीवे स

घास

आस्टरलिज हो या वाटरलू
लाशों का ऊँचे से ऊँचा ढेर हो—
दफना दो, और मुझे अपना काम करने दो।
मैं घास हूँ, मैं सबको ढँक लूँगी

और युद्ध का छोटा मैदान हो या बड़ा
और युद्ध नया हो या पुराना
ढेर ऊँचे से ऊँचा हो, बस मुझे मौका भर मिले

दो बरस, दस बरस—और फिर उधर से
गुजरने वाली बस के मुसाफिर
पूछेंगे यह कौन सी जगह है ?
हम कहाँ से होकर गुजर रहे हैं ?
यह घास का मैदान कैसा है ?

मैं घास हूँ
सबको ढँक लूँगी।

—कार्ल सैंडबर्ग

किन होठों को

किन होठों को ग्रहण किया है मेरे होठो ने, और कहाँ, और क्यों,
मैं भूल गयी हूँ—कि कौन सी बाँह फैली रही है
मेरे सर के नीचे सुबह होने तक, मगर आज रात की बारिश
सजीव है रहस्यमयी छायाओ से, जो दस्तक देती है
खिड़की के शीशे पर, आह भरती हैं

और इन्तजार करती है जवाब का ,
और मेरे दिल मे उभरता है एक खामोश दर्द
उन विस्मृत तरुणो के लिए जो अब कभी
आधी रात आँखो मे आँसू भरे मेरे वक्ष म माथा छुपाने नही
आयेंगे

जैसे शिशिर मे खडा रहता है एकान्त पत्रहीन तरु
नही जानता कि कौन-कौन से पक्षी उड गये है एक एक कर,
पर यह जानता है कि उसकी डालियाँ पहले से कही ज्यादा
खामोश है—
मैं नही जानती कि कौन से प्यार मेरे जीवन मे आये और गये—
सिर्फ यह कि मुझमे वसन्त मुखर था
कुछ ही पहले—और अब नही है

—एडना सेण्ट विन्सेण्ट मिले

प्यार

जल गाढा रुपहला है चट्टान पर
जल गाढा रुपहला है चट्टान की
अस्वीकृति पर। वह गिरता नही। भर देता है। बहाव से
हर दरार को, चट्टान की हर कमी को, हर खालीपन को।
नदी बहती नही। नदी तो सिर्फ गाढे रुपहले निजत्व को
चट्टान पर गहरे आँकना चाहती है चट्टान अस्वीकार
करती है।

जो दौड़ता है
उच्छल लहराता धूप मे, वह चट्टान का
नदी के प्रति अस्वीकार है। नदी नही।

—आर्चीबॉल्ड मैकलीश

प्रेम एक बिन्दु है

प्रेम एक बिन्दु है
और इस जिन्दु से होकर
(शान्ति की ज्योति से प्रकाशित)
समस्त बिन्दु ससरण करते हैं

'हाँ एक लोक है
और इस एक स्वीकृति के लोक मे
(होशियारी से लिपटे हुए)
समस्त लोक अन्तर्निहित हैं

—ई० ई० कमिंग्ज

वह 'कही'

वह 'कही' जहाँ मैं कभी नही पहुँचा, किसी भी अनुभूति
के सुखद उस पार

तुम्हारी आखो का मौन है
तुम्हारी सबसे सुकुँवार भगिमाओ मे कुछ है जो
मुझे चारो ओर से मूँद लेता है
या उसे मैं छू भी नही पाता वह इतना अन्तरग है

तुम्हारी हलकी-सी निगाह मुझे आसानी से खोल देती है
हालाकि मैंने अपने को मुट्ठियो की तरह बन्द कर रक्खा है
तुम मुझे सदा एक-एक पाखुरी कर खोलती हो जैसे चैत
खिला देता है (एक सावधान रहस्यस्पर्श से)
अपना पहला गुलाब

या अगर तुम मुझे मूँदना चाहो तो मैं
और मेरा जीवन बडी खूबसूरती से मुँद जायगा, अकस्मात्
जैसे यह फूल जब इसको ख्याल आ जाता है
चारो ओर धीरे-धीरे गिरते हुए तुहिन का

कुछ ऐसा नही है मेरी निगाह मे इस तमाम दुनिया मे
जो मुकाबला कर सके, तुम्हारी चरम सुकुँवारिता की
असीम शक्ति का

जिसका स्पर्श मुझे विवश कर देता है अपने विभिन्न प्रदेशो के
उठते गिरते रगो से
जिसकी हर साँस मे मृत्यु और अनन्तकाल प्रस्तुत होता है

(मैं नही जानता कि वह क्या है तुममे जो मूँदता है
खोलता है, केवल यह कि मुझमे कुछ है जो समझता है
तुम्हारी आँखो की आवाज़ तमाम गुलाबो से अथाह है)
कोई नही, यहाँ तक कि बरखा बूँदो की हथेलियाँ भी इतनी
नन्ही नही होती ।

—ई० ई० कमिंग्ज़

खोये हुए की खोज के रूप में
देखे हुए प्यार की प्रकृति

तुम—नारी, मैं—पुरुष, यह—ससार,
और हममे से हरेक तीनो की कृति है।

बर्फ मे ढँकी हुई पगध्वनिया, अजनबी आगन्तुक,
पखटूटी अबाबील, भिक्षुणी, नर्तकी, जोसस के पख
ग्रामीण पथिको पर   और कितनी ही सुन्दर
चाहे हमारे चारो ओर, और परिचित वस्तुएँ

लो कैसे आदिम ज्योति की लकडियो के सहारे
सितारे आसमान मे चल रहे है, कितनी सहजता से वह
अथाह नील अनन्तता को प्रभु की गुफा मे धारण करता है,
जहा सीजर और सुकरात
पुरानी चट्टानो पर चित्रित आदिम गुहाचित्र से लगते हैं,
देखो, अपनी अबोध आखो से, ससार को,
जिसमे हम दोनो हैं।

तुम—लक्ष्य, मै—यात्री, यह—खोज
और हममे से हरेक तीनो का अभीष्ट है

क्योंकि महानता तो केवल बैल है जो फँसी बैलगाडी
को बाहर ठेलता है, और जहाँ हम जाते हैं वही विवेक है

किन्तु प्रतिभा एक विराट लघुता है, एक द्रवित मर्म स्पन्दन
जो यकसाँ है शिकारी और शिकार के लिए

कितने आहिस्ते से, फूलो की नीद की तरह, मेरी प्यार !
दूब बसी हवा रात के आकुल चरागाहो पर बहती है
देखो कैसे जगलो की काष्ठ-आँखें हमारी
अगोचरता के स्थापत्य को एकटक देखती हैं

तुम—एक गाँव, मैं—एक अजनबी, यह—एक रास्ता,
और हरेक कुल मिला कर सबका निर्माण है

अत , यह नही कि मनुष्य अधिक करुणा धारण करे,
या निष्करुण हो जाय, बल्कि यह
कि उसकी जिन्दगी उदारता का विस्तार पाये—
और नगरो की पताकाओ पर न मैल हो न रथ के धब्बे,
हम कितने दिन नितान्त अकेले छूटे रहे मेरी प्यार, अब
कितना विलम्ब हो चुका है जल पर घायल पावो को और
हमे अभी समाप्त नही होना है

क्या तुम्हे अचरज होता था कि स्वर्ग की हर खिड़की
टूटी हुई क्यो थी ?
क्या तुमने खुली समाधि जैसी ईश्वर की हथेलियो मे
अनाथ निराश्रितो को देखा ?
क्या तुम पिकी को युद्ध के नासमझी भरे संगीत से
परिचित कराना चाहते थे ?

वर्फ मे हैं दबी पगध्वनिया, अजनबी आगन्तुक,
पखटूटी अबाबील, भिक्षुणी, नर्तकी, देहाती पथिको पर

जीसस की पख-छाँह, और, हमारे चारो ओर हैं कितनी ही
आकुल जरूरतमन्द निराश बाँहे और तमाम चीजें
जिनकी अब हमें जानकारी हो गयी है।

—केनेथ पैचेन

सडक पर पड़े
एक घायल कुत्ते को देखकर

यह मैं ही हूँ
　　—वह बेबस जानवर नहीं
　　　　जो दर्द से कराह रहा है—
　　जो मुझे अपनी असलियत पर लाकर चौंका देता है
　　　　जैसे विस्फोट हुआ हो बम का
　　　　　　ऐसे बम का जिसने बना दिया हो
सारी दुनिया को बंजर
　　मैं क्या कर सकता हूँ सिवा इसके
　　　　　कि गीत गाऊँ
　　　　　और दद सुनाऊँ

एक नशीली मूर्च्छा संवेदनाओं पर छा जाती है
　　जैसे मैंने शीराजी ढाली हो　मुझे याद आता है
　　　　रेने शा का काव्य
　　　　　　और जो कुछ उसने देखा है

और भोगा है
　　जिससे अब वह गाता है
　　　　केवल सिवार भरी नदियाँ
　　　　उनके तट पर उगे डैफोडिल और ट्यूलिप
　　　　जिनकी जडो को वे सीचती ह

और वे मुक्त प्रवाहिनी नदियाँ भी
जो उन मधुगन्ध वाले फूलो की नन्ही जडो को
धोती है
जो देवपथ पर
खिलते हैं

मुझे याद आती है
इसे देखकर
'नार्मा' की
मेरे शैशव की मेरी प्यारी कुतिया
झबरे बाल, भाव भरी आखे

उसने बच्चे दिये एक बार
और मैंने एक पिल्ले को जूते से कुचल दिया
इस डर से कि वह उसकी छातियो को
दातो से चीथ कर मेरी कुतिया की जान ले लेगा।

मुझे याद आता है
एक मरा हुआ खरगोश
चुपचाप पडा हुआ
शिकारी की हथेलियो पर

मैं चुपचाप खडा देख रहा था
उसने शिकारी चाकू निकाला
और हँसते हुए
भोक दिया उस
बेबस मुर्दा जानवर के गुप्त अगो म
मैं मूर्च्छित सा हो गया।

क्यों मैं सोचता हूँ यह सब ?
मरते हुए कुत्ते की कराहों को
भूल जाना चाहिए
जहाँ तक हो सके

रेने शा,
तुम कवि हो
तुम्हें विश्वास है कि
वह शक्ति है सौन्दर्य मे
कि वह हर विकृति को सुधार सकता है

मुझे भी इस पर विश्वास है
साहस और आविष्कार के द्वारा
हम दया के योग्य मूक पशुओ
से आगे बढ जायेंगे

सब लोगो को इस पर आस्था रखनी चाहिए
जैसे तुमने मुझे सिखाया है
इस पर विश्वास करना !

—विलियम कार्लोस विलियम्स

जीवन-अवधि

एक मुड़ा-मुड़ाया बड़ा-सा
बादामी कागज़
करीब करीब आदमकद

और आदमी के बराबर
परिधि वाला
लुढ़क रहा था

हवा के साथ
उलटता-पलटता बार-बार
आगे सड़क पर जब

कि एक मोटर सर से
गुज़र गयी उसे
कुचलते हुए

ज़मीन पर ! बरबस
आदमी के, वह
फिर उठ खड़ा हुआ

लुढकता-पुढकता
हवा के साथ आगे बढता बिलकुल
पहले की तरह ।

—*विलियम कार्लोस विलियम्स*

अर्जेण्टाइना

शरद की रात

यह शरद् की रात, चमकीली, खामोश
नदी तट पर चट्टानों की छाँह में तुम मेरे पास हो
न जाने कौन-सी अनहोनी, अनजानी बात होनी है
जिसके लिए मेरा हृदय बुरी तरह धड़क रहा है
सम्भव है इस वक्त कोई सितारा भी टूटे
तो शायद पागलों की तरह मैं हाथ फैलाकर उसी के
पीछे दौड़ जाऊँ।

—राफाएल अल्बेर्टो एारचेटा

पूर्वजों की पीडा

तुमने बताया—'मेरे पिता की आख मे कभी आसू
नही आता।'
तुमने बताया—'मेरे पितामह की आँखमे कभी आसू
नही आया।
मेरी जाति के निर्माता—मेरे पूवज लोग
वे कभी रोये नही वे फौलाद के थे।''

इतना कहते-कहते तुम्हारी आँखो मे आँसू छलक आया
और मेरे होठो पर चू पडा—इतना तीखा हलाहल
इतने नन्ह प्याले मे मैने कभी नही चखा था
मै दुबल नारी, विवश नारी
जो युगो की सचित पीडा को
समझ गयी है उसे पीकर
मेरी आत्मा उसे बरदाश्त नही कर पाती
उस दर्द के बोझ से तिलमिला उठी है।

—*ऐल्फ़ाज़िना स्टॉर्नी*

नौका-विहार

उपवन सो जाता है, सपनो में खो जाता है
नदी जागती रहती है—गाती रहती है
शीतल हरी छाँह मे
कल-कल करता हुआ जल बहता है
मटमैले किनारे पर सफेद फेन के थक्के जम जाते है

मेरी आँखो मे सितारे छलछला आते हैं
एक नाव मे लेटा हुआ
मै जल के सगीत पर
भावना की तरह तैरता जाता हूँ
नदी मेरे होठो मे बसती जाती है
उपवन मेरी आत्मा मे—

—कीरोदा नले रोवशलो

पूर्वजों की पीडा

तुमने बताया—'मेरे पिता की आँख मे कभी आँसू
नही आता।'
तुमने बताया—'मेरे पितामह की आँखमे कभी आसू
नही आया।
मेरी जाति के निर्माता—मेरे पूवज लोग
वे कभी रोये नही वे फोलाद के थे।''

इतना कहते-कहते तुम्हारी आखो मे आसू छलक आया
और मेरे होठो पर चू पडा—इतना तीखा हलाहल
इतने नन्हे प्याले मे मैने कभी नही चखा था
मै दुर्बल नारी, विवश नारी
जो युगो को सचित पीडा को
समझ गयी है उसे पीकर
मेरी आत्मा उसे बरदाश्त नही कर पाती
उस दर्द के बोझ से तिलमिला उठी है।

—ऐल्फांसिना स्टोर्नी

नीले मकान

जहाँ सेन जुआन और चारानुको का सगम होता है
मैंने वहाँ नीले मकान देखे हैं
मकान जिन पर खानाबदोशी का रंग है
वे झण्डा की तरह लहरा रहे हैं
पूर्व—जो अपने आधीनों को स्वतन्त्र कर देता है—
की तरह गम्भीर

कुछ पर ऊषा के आकाश का रग है
कुछ पर तड़के के आकाश का रग,
घर के किसी भी उदास अँधेरे कोने के सामने
उनका तीव्र भावनात्मक आलोक जगमगा उठता है
मै उन लडकियो के बारे मे सोच रहा हूँ जो
तपते हुए आगन मे से आकाश की ओर देख रही होगी
उनकी चम्पई बाहे और
काली झालरें
शबत के गिलासो-सी उनकी लाल आँखो मे अपनी
छाया देखने का उल्लास
मकान के नीले कोने पर
एक अभिमान भरे दर्द की छाप है
मैं लोहे का दरवाजा खोलकर
भीतरी सहन को पारकर
घर के अन्दर पहुँचूँगा

कक्ष मे एक लड़की—जिसका हृदय मेरा हृदय है—
मेरी प्रतीक्षा मे होगी
और हम दोनो को एक प्रगाढ़ आलिंगन घेर लेगा
हम आग की लपटो की तरह कांप उठेंगे
और फिर उल्लास की बेताबी
धीरे-धीरे
घर की मृदुल शान्ति मे खो जायेगी।

—जॉर्ज लुइस बोरजे

आँगन

शाम होते-होते
आँगन के आलोक रग मुरझा जाते हैं
पूनम के चाद की विराट स्वच्छता, थिर, परिचित
आसमानो पर जादू नही बिखेरती
आसमान मे बादल घिर आये है
दुश्चिन्ताएँ कहती है कि किसी देवदूत का अवसान हो
गया है।

आँगन आकाश का, स्वर्ग का सन्देशवाही है—
आँगन एक खिडकी है, जिसमे से
ईश्वर आत्माओ की खोज-खबर रखता है—
आँगन एक ढालुवा रास्ता है
जिसमे से आकाश, घर के अन्दर ढुलक आता है
चुपचाप—
शाश्वतता सितारो के चौराहो पर इन्तजार करती है।
चिर परिचित दरवाजो, नीची गम छतो और
शीतल हौजो के बीच
एक सगिनी के प्रगाढ स्नेह की छाया मे
जिन्दगी कितनी प्यारी लगती है

—जोर्ज लुइस बोरजे

प्रार्थना

स्वस्थ मन से, स्नेह भरे मन से
उल्लास भरे मन से
इस दिन को मै ऐसे देखू
जैसे यह मेरा छोटा भाई हो
जिसका सरक्षण निर्देशन मेरे हाथ मे है।

मेरे विचार शुद्ध रहे,
मेरी धारणाएँ उदात्त रहे,
मेरी भावनाओ मे विषमता न आवे
मेरी वाणी हृदय मे निकलने वाली हो
मेरी बाह स्वागतोत्सुक और सबल हो

जैसे हर बन्द कली मे
मधुमास छिपा रहता है
वैसे ही हर मनुष्य की आत्मा मे
जीवन के पूण सौन्दर्य का भेद छिपा रहता है

एक घडी
अशुभ काम मे, अशिव विचार मे
बिताने के अथ हैं
हृदय मे सग्रहीत वैभव को नष्ट करना

आँगन

शाम होते-होते
आँगन के आलोक रग मुरझा जाते हैं
पूनम के चाँद की विराट स्वच्छता, चिर, परिचित
आसमानो पर जादू नही बिखेरती
आसमान मे बादल घिर आये है
दुश्चिन्ताएँ कहती है कि किसी देवदूत का अवसान हो
गया है।

आगन आकाश का, स्वर्ग का सन्देशवाही है—
आगन एक खिडकी है, जिसमे से
ईश्वर आत्माओ की खोज खबर रखता है—
आँगन एक ढालुवाँ रास्ता है
जिसमे से आकाश, घर के अन्दर ढुलक आता है
चुपचाप—
शाश्वतता सितारो के चौराहो पर इन्तजार करती है।
चिर परिचित दरवाजो, नीची गर्म छतो और
शीतल हौजो के बीच
एक सगिनी के प्रगाढ स्नेह की छाया मे
जिन्दगी कितनी प्यारी लगती है

—जॉर्ज लुइस बोरजे

प्रार्थना

स्वस्थ मन से, स्नेह भरे मन से
उल्लास भरे मन से
इस दिन को मैं ऐसे देखूँ
जैसे यह मेरा छोटा भाई हो
जिसका सरक्षण निर्देशन मेरे हाथ मे है ।

मेरे विचार शुद्ध रहे,
मेरी धारणाएँ उदात्त रहे,
मेरी भावनाओ मे विषमता न आवे
मेरी वाणी हृदय से निकलने वाली हो
मेरी बाँहे स्वागतोत्सुक और सबल हो

जैसे हर बन्द कली मे
मधुमास छिपा रहता है
वैसे ही हर मनुष्य की आत्मा मे
जीवन के पूण सौन्दय का भेद छिपा रहता है

एक घडी
अशुभ काम मे, अशिव विचार मे
बिताने के अथ है
हृदय मे सग्रहीत वैभव को नष्ट करना

इस पूरे दिन मे जागरूक रहूँ
ताकि मेरा जीवन इतना
प्राञ्जल रहे जैसे
जैसे किसी भोली-भाली लडकी का
निश्छल उल्लास ।

—लुइस कने

बकरियाँ

गम और उदास बाड़े में,
सहमी हुई बकरियाँ मिमिया रही हैं
अकस्मात् दो झगड़ालू बकरों के बच्चे
अपने मन का गुस्सा निकालने के लिए
दो पावों पर खड़े होकर सींग लड़ाने लगते हैं,
नानी दादी की उम्र की बकरियाँ भी हैं
उनके थन खूब दूध-भरे हैं
वे घुटनों पर झुकी विश्राम कर रही हैं
कभी-कभी भोली तिरछी निगाह से
दाढ़ी वाले बकरों की ओर देखती हैं—
जैसे स्नेहाकुल औरतें।

—लुइस एल० फ्रांको

मेरे मित्र-मेरी बहनें

मेरे मित्र, मेरी बहने इतवार को मेरे बाग से गुलाब
चुनने आते हैं
और फ्रेन्च कविता की कुछ किताबें माँग ले जाते हैं
जैसे म्यूसे या सामे के पृष्ठो मे से सहसा निकल कर
वे हरी दूब पर टहलने लगते है, फूल चुनने लगते है—
वे सुन्दर शब्दावलियो और स्वच्छ चमकदार सुबहो के प्रेमी हैं,
एक सुन्दर कलापूर्ण प्रतिमा उनके मन के रेशे को कँपा देती है
वे हेमन्त की सन्ध्याओ की प्रतीक्षा मे है
क्योंकि तब खिडकियो के शीशे मे से सभी कुछ
स्वर्णाच्छादित मालूम पडता है

और वे इतवार को फूल चुनने आते हैं—वे जानते हैं
कि उनकी आवाजो की गूँज मुझे प्यारी है
वे अनजाने ही हँसते है
और पाखुरियो मे अपनी हँसी छोड जाते है

मेरे मित्रो ! स्नेह भरी बहनो ! जब पानी बरसे
तो मत आना—
उन दिनो अन्धड मे जो कलिया बिखर जाती हैं
उन्हे मैं बीन लाता हूँ, गुलदस्ते मे लगाता हूँ
उनके पास म्यूसे या सामे की काव्य कृतियाँ रख देता हूँ।

—फ्रांसिस्को लापेस मेरीनो

जनाज़ा

रेशमी वस्त्र और सुगन्धित अगराग—बिलकुल नववधू की तरह
उस मृत औरत की लाश जा रही है
उसके दो बच्चे सिसकते हुए आगे बैठे हैं
यह वही गाडी है जो पकी फसल के वक्त कटे गेहूँ के पूले
लाद कर जाडे मे चलती है।

चमकदार ऊनी चादर पर उसका शव पडा है
धुरी और पहिये चरर-मरर करते हुए
चलते जा रहे है
घास के मैदान की छाती मे चुभे हुए सुनहरे नेजे
की तरह धूप काप रही है
(मेरा भाई रात की तरह काले घोडे पर सवार है
और मै सफेद घोडी पर
जिसके अयाल अभी कटे नही)

मृत औरत पकी फसल लादने वाली गाडी मे चल रही है
उसका चेहरा सूरज की ओर है
जिससे उसके चेहरे पर गिलट की-सी
चमक आ गयी है
किसी बन्द खज़ाने की चाभी की तरह, एक खामोशी की छाप
उसके होठो पर है

दिवस की नीरवता और उसके लय भरे सगीत की ओर से
उसकी आँखें बन्द है
और उसके हाथ क्रास को इस मुद्रा मे थामे है
जैसे किसी अनजाने समुद्र मे
कोई जहाज टूट गया हो

गाडी फूलो को कुचलती आगे बढ रही है
हवा सन के खेतो मे
सिसक रही है
गाडी की चाल से शव का सिर हिल-हिल उठता है
जैसे वह सारी दुनिया के सवालो के जवाब मे
सर हिला कर नही कर रही हो

दोनो बच्चे उसके सिरहाने, बगल मे बैठे है
उनके धुँधले माथे पर
दो सवाल मडरा रहे हैं
उसका वेश नववधू-सा क्यो है ? यह पकी फसलें लादने
वाली गाडी मे क्यो चल रही है ?

(मेरा भाई रात की तरह काले घोडे पर सवार है
और मेरे पास सफेद घोडी है
जिसके अयाल अभी नही छाँटे गये—

—ल्योपोल्डो मरेशल

इक्वाडोर

ऋतुराज स्टोर्स

बादाम के पेड ने कोपलो की नयी पोशाक पहनी है
और दूकान की खिडकिया पर
गौरैया चहक चहक कर माल का विज्ञापन कर रही हैं।
मधुमास की दूकान से

सब सफेद कपडे बिक गये हैं
कपडे जो जनवरी का महीना पहनता था
और आज दूकान का मालिक हर गली कूचे मे
मलय पवन से
अपनी दूकान की नोटिस बँटवा रहा है।

उसके स्टोस मे क्या नही है
नयी कोपलो के कटोरे हैं
इत्र हैं, छोटे बच्चो के लिए फूलो के कालीन हैं
छोटी टोकरियाँ, चेरी के पेड के
जाला झाडने के बाँस
तालाबो की बतकों के पजो के दस्ताने
उडते हुए सारसो के धूप के छाते
पेडो मे हिलती पत्तिया बिलकुल टाइपराइटर हैं

इधर रात का विभाग है
छोटे छोटे हीरे, जुगनू, लाल कन्दील
मोती की माला

माच ने सूखा धान इकट्ठा कर आग सुलगायी है
और बूढे घर के पेड ने धूप का चश्मा लगा लिया है
मधुमास कुछ महीनो मे सूखे हुए महुए बेचेगा
अगूर और सूखे सुनहरे पत्ते
जिनमे लपेट कर
दद का पैकेट बनाया जा सकेगा ।

—जॉर्ज करेरा अ द्रादे

सन्त-खरगोश

शान्त और खामोश प्यारे भाई खरगोश ! तुम मेरे गुरु हो,
दार्शनिक हो
तुम्हारी जिन्दगी से मैंने शान्त जिन्दगी बिताना सीखा है
क्योंकि तुम एकान्त समाधि मे ही जीवन का तत्त्व खोजते हो
ससार की गति तुम्हे नही व्यापती !

तुम ज्ञान के खोजी हो
जैसे कोई पूरी किताब के पन्ने चाट जाय
उसी तरह तुम बन्दगोभी के सभी पत्ते चाट जाते हो
और सन्त साइमन की तरह अपने बिल मे बैठे बैठे
चिडियो को देखा करते हो

अपने इष्ट देवता से कहो कि
स्वर्ग मे तुम्हे एक बाग बनवा दे
जिस बाग मे स्वर्गीय करमकल्ले लगे हो
नाक डुबाने के लिए एक स्वच्छ पानी का सोता हो
और तुम्हारे सिर पर फाख्ते उडा करें

तुम्हारे चारो ओर के वातावरण मे पवित्रता छायी रहती है
परम पिता सन्त फ्रासिस का आशीर्वाद

तुम्हारी मृत्यु के दिन तुम्हारे सिरहाने रहेगा
और स्वग मे छोटे-छोटे बच्चे
तुम्हारे लम्बे-लम्बे कानो से खेलेंगे।

—जार्ज करेरा अन्द्रादे

रात को एक बजे

जहाज के मस्तूल की तरह
लम्बे घण्टाघर से
किसी डूबे हुए आदमी की तरह
एक बजे घण्टे की आवाज गिर पड़ती है
रात के लम्बे चौड़े ब्लेक बोर्ड पर
समय खड़िये की एक लकीर खीच देता है
खिड़कियो के शीशे जैसी आँखो वाले मकान
करवट बदलने लगते हैं ।

गलियो मे घूमते हुए कुत्ते
दुम दबाकर
एक के घण्टे पर भूँकते है
जैसे किसी चलते हुए मुर्दे को देखकर भूँकें ।

—जार्ज फरेरा अन्द्रादे

दर्पण का धर्म

जब वस्तुएँ अपना रूप-रंग बिसार देती हैं
और रात से आक्रान्त दीवारें मुँद जाती हैं,
और चीज़ें या तो झुक जाती हैं, या पीछे हट जाती हैं
या उद्‌भ्रान्त हो जाती हैं,
तुम अकेले खड़े रहते हो दृढ़, एक ज्योतिमय उपस्थिति।
तुम्हारा स्पष्ट निश्चय छायाओं पर शासन करता है
अँधेरे में झिलमिलाता है तुम्हारा खनिज मौन
तेज़ कबूतरों की तरह
तुम्हारे गुप्त सन्देश जाते हैं वस्तुओं को

रात में हर कुरसी दुगुनी लम्बी लगने लगती है और बाट
जोहती है
किसी अवास्तविक अतिथि की, सामने परछाइयों की
तश्तरी रखकर
और केवल तुम—एक पारदर्शी साक्षी—
उजाले का एक पाठ यन्त्रवत् दुहराते हो

—जार्ज करेरा अन्द्रादे

इंगलैण्ड

प्राचीन मिश्र की एक आदिम जाति का गीत

(दरियाई घोड़े के आकार की, इस्मत इस्मत नामक
देवी की मृत्यु पर)

स्थान मन्दिर
[अन्दर पुरोहितगण]

वह थी कुरूप, झुर्रियों भरी, भारी, भरकम ? वह थी माता
वासनामयी, अतृप्त ? किन्तु थी एक मात्र आश्रयदाता !
दिन में अदृश्य, निश्शब्द, किन्तु रातों में उसकी सीत्कार
सुन पड़ती थी

हम सहमे से, तम में उसकी इच्छाएँ पूरी करते थे
हम डरते थे !

[बाहर जनता]

वह हमको दुख पहुँचाती थी
औ' हम नत थे उसके आगे
फिर हँसकर हमें बुलाती थी—
"लो भाग तुम्हारे फिर जागे !"

दुख देती थी दुख हरती थी

अब क्या होगा ? अब क्या होगा ?

प्राचीन मिश्र की एक आदिम जाति का गीत

(दरियाई घोडे के आकार की, इस्मत इस्मत नामक
देवी की मृत्यु पर)

स्थान मन्दिर

[अन्दर पुरोहितगण]

वह थी कुरूप, झुर्रियो भरी, भारी, भरकम ? वह थी माता
वासनामयी, अतृप्त ? किन्तु थी एक मात्र आश्रयदाता ।
दिन मे अदृश्य, निश्शब्द, किन्तु रातो मे उसकी सीत्कार
सुन पड़ती थी

हम सहमे से, तम मे उसकी इच्छाएँ पूरी करते थे
हम डरते थे ।

[बाहर जनता]

वह हमको दुख पहुँचाती थी
औ' हम नत थे उसके आगे
फिर हँसकर हमे बुलाती थी—
—"लो भाग तुम्हारे फिर जागे !"

दुख देती थी दुख हरती थी

अब क्या होगा ? अब क्या होगा ?

अब तो वह आसन खाली है !
हम उसकी पूजा करते थे
पर वह अब मरने वाली है ॥

[अन्दर पुरोहितगण]

यह क्षुधाग्रस्त, वह शिशुभक्षिणी, पर क्या होगा उसके बगैर ?
वह युवक युवतियों को ले जाती रही मृत्यु के देश । खैर
जातियाँ पूजती रहीं हमें—हम घृणा अग में पात्र रहें
यह गौरव था—
वह भोजन दे, वह आश्रय दे, वह प्यार भरे, वह हनन करे—
और वही मरे ?

[बाहर जनता]

वह शक्तिमती थी किन्तु
काल है महाबली—

वह बहुत दिनों तक जियी
काल के आगे किसकी किन्तु चली

अब क्या होगा ? अब होगा क्या ?
वह आसन बिल्कुल खाली है
हम अब तक पूजा करते थे
अब वह भी मरनेवाली है ॥

—रूपर्ट ब्रुक

मुझे सुन पडता है

मुझे सुन पडता है—भूमि पर चढाई करती हुई एक सेना,
और जल से निकलते हुए घोडो का मेघस्वर
घुटनो पर लगा हुआ फेन

काले जिरहबख्तर में, क्रोध-भरे, घोडो के पीछे खडे,
लगाम छोडे हुए, कोडे नचाते हुए
सारथी

वे रात के अन्तराल मे घोषित करते हैं अपनी युद्ध-सज्ञाएँ
मैं नीद मे कराह उठता हूँ, जब दूर से
उनके झझावाती अट्टहास सुनाई पडते है

वे आते हैं विजयोन्मत्त अपने लम्बे हरे केश छिटकाये
वे समुद्र मे से निकलकर तट पर हृपध्वनि
करते दौडते हैं

ओ मेरे मन, कितने नासमझ हो, इस तरह हिम्मत हार बैठे हो
मेरी प्यार ! मेरी प्यार ! मेरी प्यार ! तुम इस तरह
मुझे अकेला क्यो छोड गयी

—जेम्स ज्वायस

छोटी सी नदी कलकल करती हुई

छोटी सी नदी—कलकल करती हुई—गोधूलि में
पीले आकाश की अलसायी आश्चर्य भरी चितवन—
लगभग स्वर्ग का सा सुख

और हर चीज़ मुँद आयी है और नींद में डूब गयी है
तमाम चिन्ताएँ, तकलीफ़ें, दर्द
गोधूलि में लीन हो गये हैं
केवल गोधूलि और नदी का कोमल सीत्कार
जो लगातार रहेगा

और अन्त में मुझे अब मालूम हो गया कि यही
है तुम्हारे लिए मेरा प्यार
मैं उसे साकार देख रहा हूँ, गोधूलि-सा वह सम्पूर्ण है
विराट, इतना विराट कि पहले मैं कभी उसे देख नहीं सका
छोटी मोटी टिमटिमाहटों, बाधाओं,
मुसीबतों, चिन्ताओं, पीड़ाओं के कारण

तुम एक पुकार हो, और मैं हूँ उत्तर
तुम इच्छा हो और मैं उसकी सम्पूर्त्ति
तुम रात हो और मैं हूँ दिन

शेष क्या ? यह सम्पूर्ण है—
पूर्णतया सम्पूर्ण
तुम हो मैं हूँ—
शेष क्या ?

विचित्र है कि इसके बावजूद हम पीड़ा से मुक्त नहीं ।

—डी० एच० लॉरेन्स

नेपोलियन

'ससार क्या है, ओ सेनाओ !
यह मैं हूँ

मै, यह अनवरत गिरती वर्फ,
यह उत्तरी आकाश ,
सेनाओ, यह वीरान निजन
जिसमे से हम जा रहे हैं
मैं हूँ।'

—वाल्टर डि ला मेयर

मैं एक वृद्धा

मैं, एक वृद्धा, सूरज के उजाले मे
बाट जोह रही हूँ अपने परदेशी को, और मेरा ऊपर उठा
हुआ चेहरा
जिस पर अंकित है यादो-डूबे दिन की जोत,
सृष्टि के आदि की मिट्टी का पवित्र वैभव
जिसने जल-प्रलय भोगी थी और सही थी वह
चिटखती शुष्कता
लापरवाह आस्मान की, अपने प्रेमी सूय की—

क्योंकि ससार का सर्वप्रथम प्रेमी है सूय
हर लघुतम जीव पर आशीर्वाद बिखेरता हुआ, जीवन
देने की प्रक्रिया पर,
जीवन की समाप्ति पर, हर पूरे हुए कार्य पर,
स्वच्छ और मलिन पर, भूगभ के खनिज पर, और उन
वैभवो पर
जो मानव मन मे निहित हैं—मानव मन जो दूसरा सूय है

क्योंकि जब सृष्टि के आदिम जल स्रोत और गहरी धाराएँ
तरुण उजाले की झरती हैं और शान्ति की भांति अवतरित
होती हैं
अन्धो के ऊपर उठे हुए आतुर चेहरो पर
वे आशीर्वाद देने आती हैं उस असीम को

जो ससीम जजर काया मे आवद्ध है—
चमकती है तरुण प्रेमियो और अपने पलग से उठते हुए
वृद्ध विलासियो पर—और बिखेरती हैं सोना समान रूप से
भिखारियो की आशाहीन पगडण्डी और कृपणो के तमाच्छादित
हृदयो पर
जो वक्र है उजाला उनकी छाया सीधी फेंकता है
जो उथली जगहे है उनमे शक्ति आ जाती है फिर से—
और मरु-हृदय, बजर आकाश, ऊसर ऊँचाइया
भूल जाती है अपनी अनुर्वर ठण्डक।
आदमी और आदमी के बीच की स्वनिर्मित दरारें
मजहब और भाषा की पुर जाती हैं, निष्फल उजाला
दिव्यता मे मनुष्यो को, सृष्टि को, रूपान्तरित कर देता है।
और वह जिसने लोमडी को सुनहरे बाल दिये है
और धरतीको पके अनाज की बालियो से ढँक दिया है
जैसे नक्षत्रो को पके सोने की मोटी चादर से,
ताकि मनुष्य जाति को पवित्र रोटी मिले—मेरी काया उसी
के आशीर्वाद से अभिमन्त्रित है

क्योकि सूय चिन्ता नही करता मेरी कि मैं एक सामान्य स्त्री हूँ,
उस हासोज्ज्वल के लिए मेरे हाथो की उभरी नसें और
मेरी पालन करने वाली हथेलियो की झुर्रिया
फली हुई डालियो और पकी फसलो की भाति पवित्र हैं।
उसके लिए धरती की उष्णता और
हृदय की धडकन एक है—
ससार की शक्ति से उद्भूत, प्यार,
जो सुनहले सितारो को अपनी धुरी पर स्थिर रखता है,
और सदा चलायमान जीवो के हृदय को धडकाता
और रग को प्रवाहित करता है—

जिसके बिना धूमकेतु, सूय, पौदे और तमाम प्राणी, यहाँ तक कि
भूगर्भ को आग तक जम जायगी।
और सूय चिन्ता नही करता कि मैं पवित्रतापूर्वक जी रही हूँ या नही
उसे मेरी नश्वर काया ही पवित्र है, मिट्टी की काया,
सृष्टि का एक टुकडा
मेरे वैभव, मेरी अन्तर्वासी कच्ची धातुएँ, मेरी मलिनताएँ
और पकी फसलो का सौन्दय
इन सब पर चमकता रहता है मेरा हृदय—मेरा पकता हुआ
सूरज!

यद्यपि तेजी से मसरण करते हुए पचतत्त्व मुझे हरा रहे है—पर
मैं भी कभी एक स्वर्णिम नारी थी—स्वर्ग के कुजो मे
विहार करने वालिया को भाति—पर अब
मैं वृद्धा हूँ
और अगीठीके पास खामोश बैठी बुझते कोयलो को
देख रही हूँ
—एक देहातिन सी घर गिरस्ती का चरखा कातने वाली—
ताहम, मैं अब भी सूर्य की प्यारी हूँ और अश हूँ
पृथ्वी की। शाम को श्रमिको को घर लौटाने वाली,
खानाबदोशो को घर लौटाने वाली और मृत शिशुओ को,
अजन्मे शिशुओ को, अभी गर्भ मे भी न आये हुए शिशुओं को
वापस घर अपनी माँ के वक्ष पर लाने वाली—मैं
बैठी हूँ अगीठी के पास
जहा स्वण-बीज मरणोन्मुख है और केतली खटक रही है लगातार
मधुमक्खियो के छत्ते के मधुर गुजन की तरह
और मै बाट जोहती हूँ अपने परदेशी की जो घर लौटेगा
विश्राम करने के लिए

धूल धूसरित, गोया वह
खुशनुमा उद्यानो मे क्यारियाँ बना रहा था, पवित्र खेतो मे—
जहाँ चुपचाप मनुष्य जाति की रोटी धीरे-धीरे उगती और
पकती है
मेरे लिए मृत्यु भी जिसे बदल नही सकेगी, अपने वक्ष से
चिपकाये हुए
अपने नीद डूबे नन्हे शिशु को, मैं लगूँगी अभयदायिनी धरती
फसलो की मा, घर न लौटने वालो की पालनकर्त्री

ज्ञानवती है धरती, शोक और वैभव को समान रूप से
आश्वासन देती हुई,
स्वर्णिम नायक जो उत्ताल तरगो की भाति अभिमानी थे—
महान् है धरती उन्हे छाती मे छिपाने वाली, उनकी समाधियो
को धारण करने वाली
और महान् है धरती की गाथा।
क्योकि यद्यपि खामोश झुर्रिया धीरे धीरे बर्फ की तरह गिरती हैं
सुनहरे तरुण कपोलो पर, और धर्म के मार्ग जजर पड जाते हैं
बदल जाते है, पर मनुष्य का हृदय, वह सूर्य
आदिम रात को थर्राने वाले हर भय का अतिक्रमण कर
जीवित रहता है

सृष्टि के विराट ज्वर
धधकते हैं और ठण्डे पड जाते हैं
फिर भी सितारे और तरुण प्रेमी प्रदीप्त रहते हैं, आलोकित
रहते हैं

स्वर्णिम प्रेमी स्वर्ग के कुजो मे विचरते हैं
जहा अब्राहम-सा श्मश्रुमण्डित सूर्य, समस्त सृष्टि का पिता
परिपक्वता की गुहार देता रहता है और तमाम ओसकणो और

सुन्दर वैभवो की सृष्टि लोरी गाती रहती है
धरती के, प्राणियो के, फसलो के पालनो के पास
जो प्रभु के हृदय की शान्ति मे डोलते रहते हैं। और मैं
आदिम मिट्टी
जिसने पृथ्वी की वेदना और फसलो का उल्लास जाना है
यह देखकर कि यह मनुष्य का अँधेरा बीजकाल है–आशीर्वाद
देने आयी हूँ, तमाम मनुष्यो को
क्षमा और आशीर्वाद देने—पवित्र ज्योति के रूप मे

— एडिथ सिटवेल

खिडकी पर सुबह

नीचे के बावर्चीखाने मे खडक रही हैं नाश्ते की तश्तरियाँ
और सडक के कुचले किनारो के बगल बगल—
मुझे जान पडता है—कि गृहदासियो की आद्र आत्माएँ
अहातो के फाटको पर अकुरित हो रही हैं, विषाद भरी

कोहरे की भूरी लहरें ऊपर मुझ तक उछाल रही हैं
सडक के तरले से तुडे मुडे हुए चेहरे
और मैले कपडो म एक गुजरने वाली का आँसू
और एक निरुद्देश्य मुस्कान जो हवा मे चक्कर काटती है
और छतो की सतह पर फैलती फैलती विलीन हो जाती है।

—टी० एस० ईलियट

ईस्ट कोकर तीसरा अंश

आह् अन्धकार, अन्धकार, अन्धकार। वे सब अन्धकार मे
लीन होने जाते हैं—
शून्य नक्षत्रो के बीच के अन्तराल, शून्य मे लीन होते हुए शून्य,
साहू, सौदागर, सरदार, विद्वज्जन,
कला के उदार आश्रयदाता, राजनीतिज्ञ और शासक,
प्रख्यात अफसर, कमेटियो के चेयरमैन,
बडे उद्योगपति, छोटे ठीकेदार—सब डूबते जाते हैं अन्धकार मे
और सूरज और चाद—और पचाग जन्त्री
और स्टाक एक्सचेज गजट, और डाइरेक्टरो की डाइरेक्टरी—
और सवेदनाएँ पड जाती है सर्द और कर्मो का अर्थ हो
जाता है विलुप्त।
और हम सब उनके साथ जाते हैं, उस खामोश जनाजे मे,
जनाजा जो किसी का नही है, क्योकि दफनानेवाला कोई नही
मैने कहा अपनी आत्मा से—शान्त रहो और अन्धेरे को
छाने दो अपने ऊपर
वह ईश्वर का अन्धियारा है, जैसे रगमच पर बुझा दी जाती
है बत्तियाँ, दृश्य बदलने के लिए
और नेपथ्य की ध्वनियो और अन्धेरे पर अन्धेरे की फिसलन से
हम जान जाते है कि पहाडियाँ और पेड, सुदूर का दृश्य
और उदात्त भव्य इमारत सब समेटे जा रहे हैं—
या जैसे जब कोई नीचे सुरग मे चलने वाली ट्रेन, दो स्टेशनो के
बीच देर तक ठहर जाती है

और वार्ता ध्वनियाँ उठती है और खामोशी मे धीरे-धीरे
विलीन हो जाती हैं
और आप देखते है कि हर चेहरे की मानसिक रिक्तता
गहरा आयी है
छूट गयी है केवल एक उभरती यातना कि अब सोचने को
कुछ नही है,
या जब मूर्च्छाद्रव के प्रभाव मे मस्तिष्क सचेत रहता है पर
सचेत रहता है मात्र इसके प्रति कि उसमे किसी की चेतना
नही है—

मैने कहा अपनी आत्मा से
शान्त रहो और प्रतीक्षा करो बिना उम्मीद के
क्योकि उम्मीद गलत चीज की उम्मीद होगी , प्रतीक्षा करो
बिना प्यार के
क्योकि प्यार गलत चीज के प्रति प्यार होगा, अभी आस्था
शेष है,
किन्तु आस्था और प्यार और उम्मीद सबको प्रतीक्षा करने दो।
बिना चिन्तन के प्रतीक्षा करो क्योकि अभी तुम चिन्तन के
लिए उपयुक्त नही हो।
अत यह अन्धियारा ही ज्योति होगा और स्थिरता ही
नतन बन जायगी।
बहते चश्मो का मन्द ममर और जाडे की विद्युच्छटा।
अदृश्य सुगन्धित वनघासे और जगली बेरो,
बागो मे मन्द हँसी और प्रतिध्वनित उल्लास
खोया नही बल्कि, अपेक्षाशील, मृत्यु और जन्म की यातना की–
ओर उँगली उठाये हुए

तुम कहोगे मैं दुहरा रहा हूँ

कुछ जो मे पहले कह आया हूँ। मैं फिर कहूँगा इसे।
क्या मैं इसे फिर बताऊँ ? ताकि तुम वहाँ पहुँचो—
वहाँ पहुँचने के लिए जहाँ तुम हो, वहा से आने के लिए
जहाँ तुम नही हो
तुम्हे उस राह से आना होगा जिस पर भावावेश की
गुजायश नही
वहा पहुँचने के लिए जिससे तुम अनभिज्ञ हो
तुम्हे अज्ञान की राह से गुज़रना होगा
उसे पाने के लिए जो तुमने नही पाया है
तुम्हे त्याग की राह से गुजरना होगा—
तुम नही हो जहाँ उस तक पहुँचने के लिए
तुम्हें उस राह से गुजरना होगा
जिसमे तुम नही हो
और तुम जो नही जानते हो
वही तुम्हारा एक मात्र ज्ञान है
और जो तुम्हारे पास नही है
वही तुम्हारी एक मात्र सम्पदा है
और जहा तुम हो—वही वह स्थान है
जहाँ तुम नही हो।

—टी०एस०ईलियट

मारिना

कौन से समुद्र कौन से तट कौन सी भूरी चट्टानें और कौन
से द्वीप
कौन से ज्वार-जल ढलानों से टकरा कर बिखरते हुए
और चीड़ की गन्ध और वनपाखी का गीत कोहरे में से
आता हुआ
आह! लौट आते हैं कौन से स्मृति-चिह्न
ओ मेरी आत्मजा!

ये जो पैनाते हैं कुत्तों के दाँत, यानी—
मृत्यु
ये जो झिलमिल हैं कलरव करते पंखों के गौरव से, यानी—
मृत्यु
ये जो सन्तोष की खोली पर बैठ गये हैं जमकर—यानी
मृत्यु
ये जो पाशविक उल्लास की यातना भोगते हैं, यानी
मृत्यु

निस्सार हो गये हैं, हवा ने उन्हें अवास्तव कर दिया है
चीड़ की गन्ध और जंगली [illegible] के बादल
और इस [illegible] [illegible] पर [illegible] [illegible]

किसका है यह चेहरा अस्पष्ट और स्पष्टतर
बाहों का स्पन्दन, पहले से धीमा और पहले से तेज़
दिया हुआ या उधार ? नक्षत्रो से भी दूरतर और आख की–
पुतलियो से भी ज्यादा पास

मन्द मर्मर और मन्द हँसी पत्तियो मे और शीघ्रता करती
पगध्वनिया
नीद की पर्त मे जहा तमाम ज्वारजल घुलमिल जाते है

जहाज़ का मुखस्तम्भ बर्फ से चिटखा हुआ और धूप से
पपडाया हुआ रग
मैंने बनाया था उन्हे, और ख्याल से उतर गया
और अब याद आया
रस्से जर्जर और पाल गले हुए
एक जून से दूसरे सितम्बर के बीच
इस न जानने को बना गया है अर्द्ध-चेतन, अनजान, मेरा
बिलकुल अपना
जहाज़ के तख्तो से पानी आता है, झिरी बन्द करने की
ज़रूरत है
यह आकार, यह चेहरा, यह ज़िन्दगी
जीवित है उस समय प्रदेश मे जीने के लिए जो मुझसे परे हैं।
मुझे विसर्जित करने दो
उस जीवन के लिए अपना यह जीवन, मेरी वाणी उस
अबोले के लिए
जागरूक, होठ खुले हुए, आशा, नये जलयान

कौन से समुद्र कौन से तट कौन से ग्रेनाइट के द्वीप
बहते आते हैं मेरे काष्ठ-यान की ओर

और कोहरे में गाता हुआ वनपाखी
मेरी आत्मजा !

—टी० एस० ईलियट

ललित कला सग्रहालय मे

पीडा के बारे मे उन्हे कोई भ्रम नही था
पुराने आचार्यों को कितनी अच्छी तरह वे समझते थे
उसकी मानवीय स्थिति कैसे वह किसी एक मे केन्द्रित
घटित होती है जब कि अन्य उससे निरपेक्ष खाते हैं, पीते है,
खिडकी खोलते हैं या मात्र अनमने टहलते रहते है,
कैसे, जब घर के बडे बूढे, बहुत भावाकुल होकर
प्रतीक्षा करते हैं, शिशुप्रसव की,
बच्चे हैं जो उसके प्रति उदासीन होते है, चाहते ही नही
कि यह हो
और वनान्त पर पोखरे के किनारे बफ पर फिसलते रहते है
वे (आचाय) कभी नही भूलते थे
कि मानव के महानतम बलिदानो को भी
एक उपेक्षित अन्धेरे कोने मे घटित होना पडता है
किसी गन्दी जगह जहाँ कुत्ते क्रीडा करते रहते है और
किसी निरकुश अत्याचारी का घोडा
पेड के तने से अपनी पीठ खुजाता रहता है।

ब्रूगेल के 'इकारस' मे उदाहरणार्थ कैसे बाकी तमाम चीजें
चरम सकट से मुँह मोडती दीखती हैं, हल चलाने वाले ने
समुद्र मे उसका छपाका सुना होगा
किन्तु उसके लिए उस अभियान की असफलता को भी
कोई खास अहमियत नही, धूप पड रही है

—जैसे हर चीज पर—वैसे ही हरे समुद्र मे अधडूबे गोरे
पांवो पर
और वह मूल्यवान सुन्दर जहाज जिसने उस दिन वह
अद्भुत घटना देखी होगी—एक पख-भस्म लड़के को
आस्मानो मे से गिरते हुए—
उसे कही न कही जाना था—और
वह बिना विचलित हुए चुपचाप अपनी राह चला गया।

—डब्ल्यू० एच० आडेन

क्योंकि मैं रहा हूँ आधुनिक शलभ

क्योकि मैं रहा हूँ एक आधुनिक शलभ और मडरा मडरा कर
टूट गिरा हूँ कई प्रदीप्त लोको पर
सिर्फ यह पाने के लिए कि उनके
चारो ओर काच की मजूषा है।
सिर्फ तुममे मुझे मिली नग्न दीपशिखा, तुम्हे ही छूकर
मै बन गया एक नवीण ज्वाल लपट,
जिसमे सब राख हो जाता है सिवा
वज्र-अस्थियो के

और देखूँगा कि
क्या समय के साथ मिथ्या पड जायगा
मेरा यह नक्षत्र भी, मेरी एकान्त रात्रि का सहयात्री,
मेरी उड़ान है
उस सारस की
जिसमे हर आकाश निजन एकान्त लगता है।

—सेसिल डे ल्यूइस

अनजनमे शिशु की प्रार्थना

अभी नही मै ले पाया हूँ जन्म ।
सुनो, ओ सुनो शर्तें मेरी,
जिनके बिना न मैं इस धरती पर आऊँगा

खून चूसनेवाले ये चमगादड, चूहे,
कब्र खोदनेवाली नरभक्षी छायाएँ
कतई मेरे पास न आएँ ।

अभी नही मै ले पाया हूँ जन्म ।
मुझको दो आश्वासन, दो आश्वासन मुझको,
जिसके बिना न मैं इस धरती पर आऊँगा ।
मुझको भय है
तथाकथित यह मानव नामक जाति
ऊँची दीवारो के अन्दर मुझे करेगी कैद,
चालाकी से भरे असत्यो से
मुझको विचलित कर देगी,

सोने की मदिरा से बदहवास कर देगी,
काले कठिन शिकजो मे मुझको कस देगी,
खून सने मैदानो मे
कर देगी मेरी सैनिक हत्या ।

अभी नही मै ले पाया हूँ जन्म,
मेरे लिए प्रबन्ध करो ताजे पानी का,
जिसमे धुलकर मेरी आत्मा स्वच्छ बनेगी
हरी घास, जिस पर क्षण भर में सपने देखूँ।

नये जवान वृक्ष जिनसे मैं बात कर सकूँ,
खुला हुआ आकाश, छाह मे जिसको,
पछी गीत सुनाएँ
और चमकती एक किरण
जो मुझे तमस से
सदा ज्योति की ओर ले चले।

अभी नही मैं ले पाया हूँ जन्म।
किन्तु अभी से मुझे क्षमा दो
उन पापो के लिए जिन्हे मेरे माध्यम से
कायर दुनिया किया करेगी।
वे विचार, वह वाणी जो मेरे माध्यम से
दुनिया सोचेगी, अथवा दुनिया बोलेगी—

मुझे क्षमा दो
उस जीवन के लिए जो कि
अपनी हत्या करने के बाद
मुझे जीना ही होगा।

अभी नही मैं ले पाया हूँ जन्म।
किन्तु मुझे अभ्यास करा दो
उस अभिनय का, जो मुझको करना ही होगा।
उस धीरज का, जो उस समय शक्ति दे मुझको—

जब बूढे मुझ पर अनुचित उपदेश उँडेलें,
जब सत्ताएँ मेरी गति मे बाधा डालें,
जब ऊँचे पहाड मेरी किस्मत पर टूट,
जब उत्ताल तरगें मुझको आमन्त्रण दें
जब मृग-तृष्णाएँ मुझको दर दर भटकायें,
जब मेरी ही सन्तानें
चिढ कर मुझ पर लानत भेजें !

अभी नही मै ले पाया हूँ जन्म !
सुनो पर !
जो पशु है या जो अपने को खुदा समझता है,
ऐसे को मेरे पास फटकने मत दो

अभी नही मैं ले पाया हूँ जन्म !
लेकिन मुझमे भर दो इतनी ताकत जिससे
मै विद्रोह कर सकूँ उससे—

जो मेरी मानवता को काले पत्थर मे बदल रहा हो,
जो मुझको मशीन का पुर्जा बना रहा हो,
जो मेरा व्यक्तित्व कुचलने को आतुर हो,
जो मेरी पूणता धूल मे मिला रहा हो,
जो मुझको मुर्दा पत्ते की तरह
वहा से यहाँ, यहा से वहाँ उडा ल जाना चाहे !

मुझको पूरा मौका दो
अपनी सार्थकता सिद्ध कर सकूँ
मैं अपना हक अदा कर सकूँ
सडी लाश-सा भूखे गिद्धो से खाये जाने के पहले ।

वरना मेरा गला दाब दो
धरती पर लाने के पहले ।

—लुई मैकनीस

अगर अन्दर रक्खे दिये वल उठे

अगर अन्दर रक्खे दिये वल उठें तो हम पायँगे ऊपर चित्रित
अजनबी जोत के अठकोन मे अंकित सन्त मुख मण्डल
धुँधला जायग
और झाक उठेगा एक कामासक्त किशोर, प्रभु अजलि से
निर्वासित होने के पहले दो बार असमजस से इधर-उधर
देखते हुए

रूप अपने अन्तरग अन्धकार मे
गठा मासल है, पर झूठे दिन के उगते ही
दीखता है कि वही होठ हैं जिनसे राख झर रही है
और सभी वस्त्र के हटते ही हजारो वर्ष पुराने उरोज
अनावृत हो गये हैं।

मुझसे कहा गया कि केवल हृदय का तर्क ठीक होता है,
लेकिन हृदय, तर्क की तरह, कही नही ले जाता,
मुझसे कहा गया कि आवेशो का तर्क स्वीकारो और आवेश
ऐसे हैं कि क्रिया की गति ही बदल जाती है
पलक मारते हमवार हो जाते है नीचे खेत ऊँची छतें,
यकसा हो जाते हैं,
और इतनी तेजी से अतिक्रमित होता है समय कि
वही समकालीन मैं पाता हूँ अपने को

आदिम मिथ्र की हवाओ मे लहरा रहे हो बाल जिसके,
ऐसा आदि-पुरुष

मैने वष पर वष अनुश्रुतियो के सुने हैं
और इतने वर्षों म कुछ तो परिवतन आये

वह गेंद जो मैंने सुदूर बचपन मे पाक मे खेलते हुए फेंकी थी
अभी तक तो जमीन तक नही पहुँची है ।

—डिलन टामस



रात मे

अपनी खिड़की के बाहर रात के ढलते पहर, मैं अपलक
निहारता हूँ
तारो पर मेरी निगाह पड़ती है, पर वस्तुत मैं उन्हे देखता
नही
और कानो मे आती है ट्रेन की आवाज़ पर स्पष्ट उसे सुनता
नही
अपने दिमाग मे मैं करवटें बदलता हूँ, अपने को
जाग्रत रखने को, पर मैं वहाँ भी पूरी तरह मौजूद नही हूँ।
मेरा कुछ अश है जो वहाँ है—बाहर अँधेरे दृश्य मे।

तो आखिर किस अश तक मै वह हूँ जो मै सोचता हूँ,
और किस अश तक वह जो महसूस करता हूँ
और कहा तक ये आँखे है जो इन सितारो को अपने बिन्दु
पर सीधा रखते हैं
जो कुछ मैं चित्त मे धारण करता हूँ उसमे से
कितना मेरे हाथ मे है
या वह मेरी दृष्टि ही है जो पर-नियन्त्रित है ?
मैं अपने दिमाग मे पलटे खाता हूँ, मेरा दिमाग वह कमरा है
जिसकी दीवारो का ऊपरी सिरा तो मुझे दीखता है पर उसे मैं
कभी पूरी तरह लाघ नही पाता

वह सब जिसे मैं प्यार करता हूँ, इसी रात की तरह, मेरे
बाहर है,
अच्छा लगता है उसे निहारना, ऐसी दृष्टि से मानो
एक सहज सकेत से हम उसे अपने दिमाग के अन्दर बुला लेगे—
या हृदय के अन्दर—पर उसके बारे में विचारता हूँ और
वह विचार ही मुझे
उससे पृथक् कर देते है। अब अपने
बिस्तर मे मै करवट बदल लेता हूँ और बाह्य ससार
भी दूसरी ओर घूम जाता है।

—एलिज़ाबेथ जेनिग

इटली

गीत

पलको पर एक आंसू
जो कभी थमा, फिर बिखर गया
धीरे-धीरे फिर जन्मा और उसके साथ एक नाम भी—
नाम जिसे कभी जाना नही
अपरिचित, अप्रतिहत, अद्वितीय
जो मेरे कण्ठ को धधका देता है

और कौन सा शब्द
मेरे लिए कहा जाय ? शाम
मुझमे मिलती-जुलती है और रात का
चेहरा, अब मुझे भय नही है कि
सूरज की अन्तिम किरनो से रगारग
पत्तियो की भरी हुई गोद असमजस मे क्यो है—अब
जब कि आस्मानो के एक छोर ने मुझे
सहेज कर समेट लिया है ।

—अतोन्यो रिनाल्दी

प्रतिज्ञात देश

१

छायाएँ लुप्त होती हुईं
अन्तराल मे विगत वर्षों के,
जब दु ख घाव नही छोड जाते थे
और सुन पडते हैं उस वय के
किशोर प्रकाम्य उरोजो के उभार
और तुम्हारी सहमी आँखो मे उद्घाटित होती है
मधुमास की लापरवाह आग
सुरभित कपोलो से

उपेक्षा, अध्यवसायी प्रेत
जो समय-प्रवाह को अवरुद्ध कर देता है
और बहुत बाद मे उसका आघात पता चलता है
—छोडो इस आहत मन को।

२

एक रगी हुई अग्नि ने
शाम को विलमा दिया है
और घास मे एक थरथराहट धीरे-धीरे
अनन्त से भाग्य का पुन गठबन्धन करा रही है

तव अनदेखी, एक चन्द्रवत् प्रतिध्वनि

जन्मी और पानी की थरथराहटों में घुल गयी।
मैं नहीं जानता कौन ज्यादा प्राणवान था
—मदोन्मत्त धारा से शिकवे के स्वर
या प्रतीक्षित प्रतिध्वनि जो कोमलतापूर्वक मौन थी।

३

अब रात खामोश हो गयी है
खामोश है समुद्र भी,
सब खामोश हैं, पर मैं कराह उठता हूँ
क्रन्दन, एकाकी मेरे हृदय का,
क्रन्दन प्यार का, ग्लानि का
अपने हृदय का जो राख होता रहा
जब से मैंने तुम्हें देखा, और तुमने मुझे
और मैं कुछ नहीं रहा सिवा एक दुर्बल प्राणी के

मैं क्रन्दन करता हूँ और मेरा हृदय प्रज्वलित है, अशान्त,
जब से मैं केवल एक
परित्यक्त और खण्डहर सा टूटता हुआ रह गया हूँ

४

सिर्फ मेरे मर्म में हैं छिपे घाव
घने उष्ण प्रदेश
दलदलों पर सर्दी के कोहरों
की गुजलकें जिनमें आकांक्षाएँ तड़पती हैं
नींद में, कि आह हम पैदा ही क्यों हुए।

५

दूध पीते मगर अत्यन्त उत्सुक, अधीर बच्चों की तरह

हमें चिन्ता नींद में ले गयी
किस दूजे की ओर ? वहाँ
उन पर खिल आये रंग और चढ़ गयी आब
उन प्रथम फलों पर

जो हमारी मधुर नागरता द्वारा
ज्योति में अकस्मात् बनाए [illegible]
अपने सम्पूर्ण वैभव में
बाद में जब हम जाएँ [illegible]
[illegible]

६

सारी पीड़ाएँ भी [illegible],
लम्बे जीवन के [illegible]
और अपने में [illegible] हुई
बूँद [illegible]

९

अब समुद्र के चल दृश्य मुझे आकर्षित नही करते
और न सुबह की नम ओस इस पत्ती पर या उस फूल पर
और न अब लडता हूँ भारी चट्टानो से
और न वह रात जो पलको पर मै ढोता हूँ

स्मृति-चित्र, क्या लाभ है उनका—
मेरे लिए, जो विस्मृत किया जा चुका है ?

१०

क्या तुम्हे सुन नही पडती अनलकृत वृक्ष की पत्ती
अकस्मात् चरमर करती हुई नदी के किनारे पत्थरो पर
मै आज अपने पतन को अलकृत करूँगा
दिखेगा कि पतझर में गिरी पत्तियो मे
जुड गयी है एक गुलाबी आभा

११

और अशान्त
उनके आकाशो ने अर्पित की है
हमारी अन्तरग ज्वालाओ को बादल की छाह
परस्पर अनुरक्त हमारे निश्छल जुडवाँ प्राण
जाग गये और जागते ही पलायन करने लगे

१२

अन्धड मे खुल गया, अन्धेरे मे, एक बन्दरगाह
कहा गया कि वह सुरक्षित है
वह एक तारो भरी खाडी थी
और उसका आकाश परिवतनहीन जान पडता था

पर आव ! आह कितना परिवर्तित हो चुका है !

—जीसेप उँगारेत्ती

क्यूबा

सिपाही की लाश

वह किस गोली से मरा ?
कौन जाने
वह कहाँ पैदा हुआ था ?
कहते हैं जोवेलानो में
यह मिला कहाँ ?
सड़क पर मरा पड़ा था
साथियों ने देखा, उठा लिया

उसकी प्रेमिका आयी है, उसे चूम रही है
उसकी माँ आयी है, रो रही है
अफसर आया है
"दफन करो इसे"
बस इतना कहकर चला जाता है।
र-ट-टर-रट
वह मुर्दा सिपाही जा रहा है
र ट-टरट-टरट
सिपाही का क्या महत्त्व
र-ट टट टट
सिपाहियों की कोई कमी है ?

—*निकोलस गील्यिन*

दो बच्चे हैं

एक मूल अभिशाप की दो सुकुमार शाखें   दो बच्चे
भयावनी रात के पजे मे, एक फाटक के सहन पर बैठे हुए
दो भिखमगे बच्चे, जख्मो से भरे हुए
एक ही टीन के डिब्बे से निकाल निकाल कर कुछ खाते हुए
भूखे कुत्तो की तरह
जैसे लहरें तट पर कूडा फेंक जाती हैं, वैसे ही मेजपोशो ने
यह जूठा खाना फेंक दिया है

दो भिखमगे बच्चे   एक गोरा है दूसरा काला
उनके सर एक दूसरे से टिके हैं   दोनो मे जूँ हैं, मैल है
उनके पाव नगे हैं
उनके मुँह चलते हुए अनथक जबडो वाले मुँह
बासी खट्टे और गन्दे खाने—फिर दो हाथ हैं
एक गोरा   एक काला

कैसी विचित्र और कितनी अटूट एकता है
डरावनी रातो और भूख ने उन्हे एक डोरे मे गूँथ दिया है
और गलियो मे बीतने वाली उदास शामो ने
और भूखी सुबहो ने जब दिन नशे मे धुत आखो से जागता है

दो कुत्ते के पिल्लो की तरह वे पास पास बैठे हैं
दो सीधे साधे पिल्लो की तरह

एक गोरा   दूसरा काला
क्या जब आह्वान आयेगा
तब भी वे इसी तरह साथ साथ चलेंगे
गोरे और काले

एक ही मूल अभिशाप की दो टूटी सुकुमार शाखें
दो बच्चे

—*निकोलस गील्यिन*

दो बच्चे हैं

एक मूल अभिशाप की दो सुकुमार शाखें दो बच्चे
भयावनी रात के पंजे मे, एक फाटक के सहन पर बैठे हुए
दो भिखमगे बच्चे, ज़ख्मो से भरे हुए
एक ही टीन के डिब्बे से निकाल निकाल कर कुछ खाते हुए
भूखे कुत्तो की तरह
जैसे लहरे तट पर कूडा फेक जाती हैं, वैसे ही मेजपोशो ने
यह जूठा खाना फेंक दिया है

दो भिखमगे बच्चे एक गोरा है दूसरा काला
उनके सर एक दूसरे से टिके हैं दोनो मे जूँ है, मैल है
उनके पाव नगे है
उनके मुँह चलते हुए अनथक जबडो वाले मुँह
बासी खट्टे और गन्दे खाने—फिर दो हाथ है
एक गोरा एक काला

कैसी विचित्र और कितनी अटूट एकता है
डरावनी रातो और भूख ने उन्हे एक डोरे मे गूँथ दिया है
और गलियो मे बीतने वाली उदास शामो ने
और भूखी सुबहो ने जब दिन नशे मे धुत आँखो से जागता है

दो कुत्ते के पिल्लो की तरह वे पास पास बैठे हैं
दो सीधे साधे पिल्लो की तरह

तुम चाहो जो खाओ
चाहे जो पियो
पर मुझे नही
नही मुये नही
मैं खाये जाने के लिए नही हूँ
मैं तुम्हारे गले नही उतर सकूँगा

यद्यपि मैं एक गरीब नीग्रो हूँ
मैं जानता हूँ कि दुनिया पर बरबादी छायी है
और मैं उसे भी जानता हूँ
जो इसकी मरम्मत कर सकता है

जब तुम वापस जाओ
न्यूयार्क को
तो वहाँ से
कुछ गरीब लोगो को भेजना
मेरी तरह गरीब
मेरी तरह भूखे
मेरी तरह नगे
मै उन्हे गले से लगा लूँगा
मैं उनके साथ गाऊँगा
क्योंकि उनका जो गीत है
वही मेरा गीत है
मेरा जो दर्द है
वही उनका दर्द है।

—*निकोलस गीलियन*

शराबखाने का गायक

न, मुझे बखशीश न दो
मै नही गाऊँगा नही कदापि नही
मै तुम्हे वह सुनाने जा रहा हूँ
जिस पर मै अभी तक चुप रहा

तुम्हे किसने बुलाया था
जेब मे पैसे है
बरबाद करो चाहे लुटाओ
शराब पियो
वेश्याओ के तन खरीदो
पर मै
मुझे तुम नही खरीद सकते
नही मुझे नही
मैं बिक्री के लिए नही हूँ

ये लाल लाल याकी
ये सभी शराब के बच्चे हैं
बोतलो से इनका जन्म हुआ है
लाल रग की बोतलो से
तुम्हे किसने बुलाया था

तुम चाहो जो खाओ
चाहे जो पियो
पर मुझे नही
नही मुझे नही
मैं खाये जाने के लिए नही हूँ
मै तुम्हारे गले नही उतर सकूंगा

यद्यपि मैं एक गरीब नीग्रो हूँ
मै जानता हूँ कि दुनिया पर बरबादी छाया है
और मैं उसे भी जानता हूँ
जो इसकी मरम्मत कर सकता है

जब तुम वापस जाओ
न्ययार्क को
तो वहाँ से
कुछ गरीब लोगो को भेजना
मेरी तरह गरीब
मेरी तरह भूखे
मेरी तरह नगे
मैं उन्हे गले से लगा लूँगा
मैं उनके साथ गाऊँगा
क्योंकि उनका जो गीत है
वही मेरा गीत है
मेरा जो दर्द है
वही उनका दद है।

—*निकोलस गील्यिन*

शरावखाने का गायक

न, मुझे बखशीश न दो
मैं नही गाऊँगा नही कदापि नही
मै तुम्हे वह सुनाने जा रहा हूँ
जिस पर मैं अभी तक चुप रहा

तुम्हे किसने बुलाया था
जेब मे पैसे है
बरबाद करो चाहे लुटाओ
शराब पियो
वेश्याओ के तन खरीदो
पर मै
मुझे तुम नही खरीद सकते
नही मुझे नही
मैं बिक्री के लिए नही हूँ

ये लाल लाल याकी
ये सभी शराब के बच्चे हैं
वोतलो से इनका जन्म हुआ है
लाल रग की बोतलो से
तुम्हे किसने बुलाया था

हम लोहे के गीत गायेंगे
मशीनो के ठण्डे निमल सौन्दय के गीत

निहाई ट्रैक्टर
जो धरती को उलट पलट रहे हैं
बिजली के रहँट डाइनैमो
रेलो का अनन्त जाल
फौलाद की नसें जिन पर जिन्दगी आती जाती है
बिजली के केबिलो की भूल-भुलैया
जो सत्सग की भक्ति का ताना बाना है
जहाँ शक्ति का विराट स्पन्दन होता है

हम लोहे के गीत गायेंगे, दुनिया लोहे की है
हम लोहे की सन्तानें हैं
लेकिन मशीनो के गुलाम नही बनेंगे
हमारे हृदय मे एक नयी भावना
अँगडाइयाँ लेंगी ।

हमारे हृदय मे एक नयी भावना
अँगडाइयाँ लेगी
इतनी विराट कि
उसे प्यार करने को
हमें सब भेद भाव भुलाकर
एक विराट समवेत हृदय का निर्माण करना पडेगा

तब न कटुता रहेगी
न ये अभागे बरबाद दिन
जैसे हम निहाई पर लोहे के पत्तर ढालते है
वैसे ही हम नये दिन ढालेगे

निर्माण

जैसे निहाई पर लोहे का पत्थर ढाला जाता है
वैसे ही हम नये दिन ढालेंगे

ताकत और पसीने से नहाये हुए
हम पाताल में उतरेंगे
और धरती के गर्भ से नया वैभव जीत लायेंगे

हम पर्वतों के उत्तुंग शिखरों पर चढ़ेंगे
और सूरज हममे जिन्दगी भर देगा
हम सूरज के टुकडे बन जायेंगे

हम एक दूसरी जिन्दगी ढालेंगे शानदार और
मानवता से शराबोर
अपने समवेत शक्तिशाली प्रयास से मुझे शाश्वत बना देंगे
और ऊषा की क्वाँरी निगाहों की छाह मे
हम मासपेशियों की निर्माणशक्ति
और हृदया के स्नेहमय भाईचारे के गीत गायेंगे

हम अनेक हैं
किन्तु एक मे समन्वित होंगे
उस महान् गीत मे हम सबों की आवाज एक होगी

हम लोहे के गीत गायेंगे
मशीनो के ठण्डे निर्मल सौन्दय के गीत

निहाई ट्रैक्टर
जो धरती को उलट पलट रहे हैं
बिजली के रहँट डाइनैमो
रेलो का अनन्त जाल
फौलाद की नसें जिन पर जिन्दगी आती जाती है
बिजली के केबिलो की भूल भुलैय्या
जो सत्संग की भक्ति का ताना बाना है
जहाँ शक्ति का विराट स्पन्दन होता है

हम लोहे के गीत गायेंगे, दुनिया लोहे की है
हम लोहे की सन्तानें हैं
लेकिन मशीनों के गुलाम नही बनेंगे
हमारे हृदय में एक नयी भावना
अँगडाइयाँ लेंगी।

हमारे हृदय मे एक नयी भावना
अँगडाइया लेगी
इतनी विराट कि
उसे प्यार करने को
हमें सब भेद भाव भुलाकर
एक विराट समवेत हृदय का निर्माण करना पडेगा

तब न कटुता रहेगी
न ये अभागे बरबाद दिन
जैसे हम निहाई पर लोहे के पत्तर ढालते हैं
वैसे ही हम नये दिन ढालेगे

उसमे उल्लास हीरो की तरह जडा रहेगा
नया दिन देखेगा
कि हम शक्तिशाली और सुदृढ
ज्योति की ओर वढ रहे हैं

खेतो मे, वखारो मे, दूकानो मे
हर औज़ार एक हथियार होगा
आग जम्हूरा हथौडा हँसिया
हम बढती हुई फौज की तरह
धरती पर छा जायेंगे
अपने गीतो से
जिन्दगी का अभिनन्दन करते हुए ।

—रेजिनो पेद्रोसो

कोष्टारिका

[तथा अन्य]

अकारण उदासी

पता नही क्यो कभी कभी
मै उदास हो जाता हूँ

मैंने बाहर देखा
शाम हो गयी है
धीरे धीरे बारिश हो रही है
नीली पहाडियो के नीचे
सूरज बादलो को रग रहा है

एक तागा गुजरा
उस पर एक लडकी थी
एक बूढी औरत चादर ओढे चली गयी
दूर कही पर रेल कूक रही है

और मैंने ताँगा देखा
लडकी देखी
बूढी औरत का शाल देखा
रेल की सीटी सुनी

और पता नही क्यो
मेरी आत्मा अन्दर से उदास हो गयी
और लगा पसलियो मे जाने क्या होने लगा
और मैं फूट फूट कर रो पडा

—राफाएल इस्त्रादा

सद्य स्नाता

मैंने उसके हाथो को होठो से लगाया
उनमे चन्दन के साबुन की महक थी
मैंने अपना हाथ हृदय पर रख लिया
मैंने उसके नन्हे हाथो को होठो से लगाया
और महक मेरे होठो मे बस गयी

ओ फूल सी लडकी तुम्हारे साथी को
चाहिए कि वह महक सा सूक्ष्म बने
और यह ला मैने उसकी माग चूमी
और वहा भी वही महक थी

तुम किस झरने मे नहा कर आयी हो
तुम स्वच्छ निर्मल ठण्डी पानी भरी कटोरी
की तरह पवित्र हो।
ओ फूल सी लडकी।

—राफ़एल ओरेयालो मार्टिनेज़

आम

अगर गुलाबो से ऊब गये हो तो मैं तुम्हे एक वासन्ती
उपहार दूँ ।

वह उपहार एक सुन्दर तुको वाली कविता की तरह मीठा है।
मै तुम्हे आमो का यह ढेर भेज रहा हूँ

उनके गूदे मे कामनाओ के रेशे है
उनमे धरती की सोधी महक है
उनकी खुशबू, मीठी खट्टी खुशबू आत्मा मे उतर जाती है ।

और आम्र कुजो म लटके हुए ये आम
धूप और घनी छाया पी चुके हैं
मलय पवन मे नहा चुके हैं

आम के बागो मे सिन्दूरी कोपले ह
और सुनहले पके आमो की मिठास है
यह फलो का राजा है
इसमे रस है, माधुय है, आलोक है ।

—दुरासीने वाचाल

सद्य स्नाता

मैंने उसके हाथो को होठो से लगाया
उनमे चन्दन के साबुन की महक थी
मैंने अपना हाथ हृदय पर रख लिया
मैंने उसके नन्ह हाथो को होठो से लगाया
और महक मेरे होठो मे बस गयी

ओ फूल सी लडकी तुम्हारे साथी को
चाहिए कि वह महक सा सूक्ष्म बने
और यह लो मैंने उसकी माग चूमी
और वहा भी वही महक थी

तुम किस झरने मे नहा कर आयी हो
तुम स्वच्छ निर्मल ठण्डी पानी भरी कटोरी
की तरह पवित्र हो ।
ओ फूल सी लडकी ।

—राफ़एल ओरेवालो मार्टिनेज़

ग्रीस

बादाम के फूल

अपने नन्हे नन्हे हाथो से तमने झकझोरा
बादाम के फूल लदे पेड़ को
पीठ पर, बाँहो पर, कन्धो पर, झबरे घुँघराले बालो पर
सफेद फूलो की चादर बिछ गयी

मैंने जब देखा उस नादान लड़की को, हिमधवल
मैंने धीमे से प्यार करते हुए कहा—
घुँघराले बालो से कोपलें और पाँखुरियाँ हटाते हुए,

"पगली लड़की, अभी इतनी जल्दी क्या है
बालो मे सफेदी लाने की—,
वह हिमऋतु तो अपने आप आ जायगी !

तब तुम अतीत को चीर कर
व्यर्थ ही इन अठखेलियो को याद करने की कोशिश करोगी—
सन से सफेद बालो पर, एक चश्मा लगाये
बूढी भद्र महिला के रूप मे!"

—ज्योर्ग्यिस द्रोसिनिस

वर्वरों की प्रतीक्षा

चौराहे पर एकत्रित हम किसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं
आज बर्बर लोग नगर मे प्रवेश करेंगे
सीनेट कोई निणय क्यो नही लेती
सदस्य क्यो हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं, कोई
कानून नही बनाते ?
आज बर्बर लोग
नगर मे प्रवेश करेंगे

इतने तडके हमारा सम्राट् क्यो जाग गया है
नगर द्वार के पास सिंहासन डलवा कर
मुकुट पहन कर
गम्भीरता पूवक
क्यो बैठ गया है ?

आज बबर हत्यारे नगर मे प्रवेश करेंगे
सम्राट् उनका इस्तकबाल करेगा
उन्हे अभिनन्दन-पत्र देगा
उन्हे शिरोपेच और खिताब देगा।

हमारे दोनो दीवान और सलाहकार
अपनी मखमली पोशाक और दरबारी कलगियो मे
सजे सजाये क्यो खडे हैं ?

वे मणिजटित बाजूबन्द और जगमगाती पन्ने की
अँगूठियाँ क्यों पहने हैं ?
सोने और चाँदी की मूँठा वाले राजदण्ड उनके हाथ में
क्यों हैं ?
बर्बर लोग नगर में प्रवेश करेंगे
ऐसी चीज़ों से उनकी आँखों में
चकाचौंध होने लगती है।

हमारे प्रगल्भ वक्ता आज चुप क्यों हैं ?
भाषण क्यों नहीं देते ? अपना दृष्टिकोण क्यों नहीं
सामने रखते ?
बर्बर लोग नगर में प्रवेश करेंगे
वे कलात्मक भाषण पसन्द नहीं करते।

यह हलचल कैसी ? गड़बड़ी कैसी ?
(लोगों के मुँह कैसे लटक गये हैं, उदास खिन्न !)
सड़कें और चौराहे खाली कैसे होने लगे
सब चुपचाप अपने घर क्यों लौट रहे हैं ?
क्योंकि रात आ गयी और बर्बर लोग
नहीं आये ! सीमान्त से आकर
एलचियों ने कहा है कि बर्बर
लोग अब नहीं रहे

अब, हाय, अब हम क्या करेंगे बिना बर्बरों के ?
वे लोग कम-से-कम एक समाधान तो प्रस्तुत करते थे
वह चाहे किसी क़िस्म का हो !

—सी० पी० कैवेफ़ी

दीवालें

उन्होने सोचा तक नही, उन्हे शर्म नही आयी, रत्ती भर
पछतावा भी नही हुआ उन्हे
उन्होंने मेरे चारो ओर मोटी और ऊँची दीवारें बना दी !
और अब मैं हताश यहाँ बैठा हूँ
कुछ और सोच ही नही पाता, मेरी नियति मुझे
फाड़े खाती है
क्योंकि बाहर मुझे कई काम करने थे।

आह ! जब वे लोग ये दीवारें उठा रहे थे तब मैने
क्यो नही देखा।

पर मैंने तो कभी ईंटें चुनने, गारा लगाने, कन्नल गिराने की
आवाज भी नही सुनी,
अनजाने अनदेखे उन्होने मुझे दुनिया से निर्वासित कर
घेरे मे डाल दिया।

—सी० बी० कैवेफ़ी

मेरे तन !

मेरे तन ! याद करो
सिर्फ यही नही कि तुमको कितना प्रणय मिला था
सिर्फ यही नही कि किन शय्याओ पर तुमने अपनी उष्णता
को छाप छोड़ी थी

बल्कि वह कामोद्दीप्ति जो कटीली आँखो मे
तुम्हारे लिए जाग जाग उठती थी
और सुरीली आवाजो मे झकार उठती थी,
कामोद्दीप्ति जो किसी दुर्भाग्यपूर्ण अवरोध के कारण
अनबुझी ही रह गयी

अब ये सब अतीत की बाते है
अब तो लगता है कि तुम अपने को हार चुके हो
पर याद करो यही पिपासा
कैसे तुम्हारे ही लिए –
आखो मे जागती थी
वाणी मे कापती थी
तुम्हारे ही लिए
मेरे तन ! याद करो !

—सी० वा० कैवेफ़ी

विदूषक

बेचारा अभागा अकेला विदूषक, बुरी तरह् कलाबाजियां
खाता हुआ
जिन्दगी के 'ठेठर' में, कभी यहां, कभी वहां!
सुनो भाई! किसी सड़क पर कूड़े की तरह् अपने को छूटा
हुआ पाओगे
किसी दिन, जाड़े की रात में, बर्फानी शाम को
ढलते दिन की रोशनी ने दम तोड़ दिया होगा
तोड़ दिया होगा।
और वे तुम्हारे लिए न दिया जलायेंगे, न मशाल
सिर्फ तुम्हारे साथी दूसरे विदूषक, माथे पर हाथ रक्खे
कांपती हुई आवाज़ में कहेंगे—"प्रभु की राह् में
निष्कलंक"

पर इससे क्या? तुमने अपनी भूमिका का भलीभांति
निर्वाह् किया
और गम्भीरता में या मज़ाक में उन्होंने तालियां पीटीं
और अन्य कलाकारों, और नेपथ्य और पर्दों के
साथ तुमने भी नाटक किया और मंगलाचरण में
प्रभु की महिमा का बखान किया!

—तेफ़ेरास अन्थियस

तुम्हे मेरी याद

तुम्हे मेरी याद आयेगी जब एक कोहरे से धुली किरण
अपनी टिमटिमाती रोशनी से तुम्हारे अन्तर को उजागर
कर देगी

निष्फल आशाओ की थपकियो से जब
तुम्हारा अन्तर अधसोया होगा—

जब तुम चीख उठोगी—मेरी प्राण—
जैसे खौफनाक सपना देखकर—"लौट आओ मेरे पास
क्योकि क्षुब्ध खूँखार रात
मेरी छाती को चारो ओर से कस रही है।"

और हमेशा की तरह मैं आने को तैयार होऊँगा—किन्तु
अवसर बीत चुका होगा और मै केवल स्वप्न मे आ सकूँगा
स्वप्नो के अँधियारे तुम मुझे कठिनाई से फिर पहचानोगी
और मै धुँधली होती हुई अद्धचेतनामे फिर पानी की छाया
की तरह काँपकर अदृश्य हो जाऊँगा।

—सोनिरिस स्किपित

सूर्योदय का गीत

आगे बढो ! ग्रीस के अन्तरिक्ष मे सूरज उगाने मे लग जाओ!
आगे बढो ! ससार के क्षितिज पर सूरज उगाने मे लग जाओ !
देखो न ! उसका पहिया दलदल मे धँस गया है !
देखो न ! उसकी धुरी खून की कीचड मे धँस गयी है !

आगे बढो जवानो, सूरज अकेले नही उग सकता
घुटने टेको, सीना अडाओ उसे कीचड से उबारने के लिए
खून के दलदल से उबारने के लिए
आगे बढो भाइयो, उसकी अग्नि-रेखाएँ हमे घेरे हैं
आगे बढो, आगे बढो, उसकी लपटें हमारे चारो ओर
घेरा डाले हैं !

ओ सृजन-कर्त्ताओ बढो ! अपनी दायित्व वृत्तियों को
सचेत करो, माथा तानो – पाँव जमाओ – सूरज डूबने न पाये
और मुझे सहारा दो दोस्तो कि मैं भी उसके साथ न
डूब जाऊँ

वह मेरे ऊपर है, मेरे अन्तर, मेरे चारो ओर है
उसके साथ मैं एक पवित्र ज्योति-वितान की तरह
बुन दिया गया हूँ !

एक हजार वृषभो के सबल स्कन्ध आधार को ग्रहण किये हैं
एक द्विमुख गरुड अपने पखो की छाह किये है

और उसकी उडान और फडफडाहट
मेरी आत्मा मे गूँज रही है
मेरे माथे को ढँक रही है।
और 'दूर' और 'समीप' मेरे लिए अब एक हैं।
नव-श्रुत गम्भीर सगीत मुझे घेरे हैं
बढकर साथियो।
उस उगने मे सहारा दो ताकि सूय हम सबो की
आत्मा बन जाय।

एक नया शब्द अवतरित हो रहा है जो रग देगा सबको
दिमाग को, शरीर को, अपनी नयी लपटो मे, फौलाद मे—
बहुत दिनो तक धरती ने नरमास का भक्षण किया है।
पर मोटी ताजी उवरा धरती को इस रक्त स्नान से हम
इतनी कठोर नही होने देंगे
कि नयी वर्षा भी उसे मुलायम न कर सके

कल हम सब एक दर्जन बैलो की जोडियाँ लेकर
इस धरती को जोतने जायेंगे, इस रक्त-स्नात धरती को
ताकि इसमे मेहदी फूले और जीवन का वृक्ष उगे
और हमारी सोमलता धरती के
कोने-कोने मे छा जाय,

आगे बढो साथियो—सूय अकेला कैसे उगेगा?
घुटने टेक कर, सीना अडाकर जोर लगाओ
कीचड से, खून के दलदल से उबारो
माथा तानकर, बाँहे चढाकर—
ताकि सूय आत्मा की तरह जगमगा सके।

—एजेलिनो सिकिलियानोस

चिली

मेरा साथ न छोड़ना

धरती तुम्हें छोड़ देगी परित्यक्त सन्तान की तरह
अगर तुम्हारी आत्मा ने कभी मेरी आत्मा को, दूसरी आत्मा
के लिए त्यागा तो।
क्रुद्ध होकर
समुद्र काँप उठेंगे, नदियों मे बाढ आ जायगी।

जिस दिन से तुमने मेरे कन्धे पर हाथ रक्खा
दुनिया पहले से ज्यादा सुन्दर हो गयी है
जिस दिन फूलो से लदी हुई उस कँटीली झाडी के नीचे
हम निश्शब्द मौन खडे थे
और प्यार, गाढी नशीली खुशबू की तरह
हमारी आत्माओं मे बिंध गया था।

गुफाएँ काले अजगर उगलेंगी
अगर तुमने कभी मेरा साथ छोडा तो,
तुम्हारे शिशु से विहीन, खोखली
मेरी सूनी गोद खाली पालने की तरह टँगी रहेगी
लेकिन तुम्हारे और मेरे हृदय मे छिपा मसीहा
दयावान जीसस, करुणा का देवता कुचल जायगा
और मेरे घर के करुणा भरे दरवाजे से भिखारियो
को फटकार मिलेगी और दुखी औरतें निराश लौट
जाया करेंगी

तुम्हारे होठो ने अगर कभी दूसरे होठो पर
कोई चुम्बन अंकित किया तो वह मेरे कानो मे
गूँजेगा, मेरी कनपटियो से टकरायेगा जैसे
गहरे अन्धेरे गह्वरो मे से तुम्हारी आवाज मेरे पास लौट
आती है
इस पगडण्डी की धूल तक मे तुम्हारे चरणचिह्नो की
सुगन्ध बसी हुई है
मै हिरणी की तरह उस सुगन्ध से व्याकुल
बियाबान पहाडो मे तुम्हे ढूँढती फिरूँगी

उडते हुए बादल
तुम्हारे प्रणय की नयी प्रतिमा का चित्र मेरे आँगन के
आकाश मे बना जाया करेंगे
चोरी छिपे कितनी ही गहरी खाइयो मे
तुम उसे हृदय से लगाओ पर
जब तुम चिबुक छूकर उसका चेहरा उठाओगे
तो तुम देखोगे वह चेहरा मेरा है
आसुओ से तर, दुख से कुरूप !
ईश्वर तुम्ह रोशनी नही देगा
अगर तुम्हारे पथ पर तुम्हारे साथ मै नही रहूँगी
ईश्वर तुम्हे तृप्ति नही देगा
यदि उस जल मे मेरी परछाई नही काँपती
ईश्वर तुम्हे चैन से सोने नही देगा
अगर तुम मेरी बिखरी अलको पर शीश रखकर नही सोओगे

अगर तुम जाओगे तो मुझे कुचल कर जाओगे
जैसे कोई सडक पर पडी घास को कुचल कर जाता है
पहाडो और मैदानो पर

भूख और प्यास तुम्हे झकझोर डालेगी
तुम जहाँ कही भी होगे
सन्ध्या तुम्हे मेरे घायल व्यक्तित्व सी लगेगी
जिस पर ताजा खून जम गया हो
अगर तुम किसी दूसरे का नाम पुकारोगे
तो तुम्हारे होठो से मेरा ही नाम निकलेगा
मैं तुम्हारे कण्ठ मे शुष्कता बन कर
अवरुद्ध हो जाऊँगी
नफरत मे, गीत मे, प्यास मे, प्यार मे
तुम मुझे पुकारोगे—सिफ मुझे
अगर तुम चले गये, दूर कही तुम्हारा जीवन समाप्त भी
हो गया

तो कब्र के अन्दर दस साल तक
तुम्हारी हथेलिया फैली रहेगी
मेरे आँसू बटोरने के लिए
और तुम अपने कलकित तन की सिहरन अनुभव करते रहोगे
जब तक कि मेरी हड्डिया चूर-चूर होकर
तुम्हारे चेहरे पर बिखर कर उसे पुन पवित्र न कर दें

—गैब्रियेला मिस्त्राल

प्रभु उसे क्षमा करो

तुम जानते हो मेरे प्रभु कि अक्सर धधकते हुए साहस से,
निडरता से
मैंने अपराधियो के लिए तुम्हारी करुणा का आह्वान किया है
आज मैं उसके लिए तुम्हारे सम्मुख उपस्थित हुई हूँ जो
मेरा था
जो एक अमृत का प्याला था जिसे होठ से लगाते ही मै
ताजगी मे नहा उठती थी
जो मेरी जिन्दगी की मिठास था

जो मेरी अस्थियो की शक्ति था, जो मेरी जीवनयात्रा का
मधुर अभिप्राय था
जो मेरे कानो मे पक्षियो के गीत सा मधुर था,
जो मुझे रेशमी वस्त्रो की तरह आवेष्टित किये रहता था
जो मेरे अपने अश नही हैं उनके पीछे मै दीवानी रहती हूँ
इसलिए अगर इस व्यक्ति के लिए तुमसे कुछ माँगूँ तो
अपनी आँख न फेरना

बात यह है मेरे प्रभु कि वह वास्तव मे अच्छा आदमी था
मैं कहती हूँ कि वह ऐसा आदमी था कि जिसके मन मे
कही कपट नही था
उसका स्वभाव बहुत मीठा था धूप की तरह स्वच्छ
और मधुमास की तरह उसमे अजब जादू थे ।

तुम रुखाई से कहते हो कि वह तुम्हारी करुणा के अयोग्य है
क्योकि उसके उष्ण होठो पर कभी प्रार्थना के शब्द नही आये
जो उस शाम को बिना तुम्हारे सकेत की प्रतीक्षा किये ही
चला गया
उसकी धडकती कनपटियाँ टूटे पतले प्याले की तरह !

लेकिन मै प्रभु इसका विरोध करती हूँ—
मैने जैसे उसकी भौह छुई है
वैसे ही मैने उसका निश्छल और विक्षुब्ध हृदय भी छुआ था
और वह अधखिली कली की तरह रेशमी और नाजुक था

तुम कहते हो कि वह निर्मम था ? तुम क्यो भूल जाते हो
मेरे प्रभु
कि मै उसे प्यार करती थी
और वह जानता था कि मेरा दद से क्षत-विक्षत हृदय केवल
उसी का है
वह मेरे उल्लास के शान्त जल मे हमेशा ककडियाँ फेक
देता था
ओह, यह सब कुछ नही (मेरे प्रभु) तुम जानते हो मै उसे
प्यार करती थी, तहेदिल से प्यार करती थी

और प्यार करना (तुम जानते हो) कितना कड़ुवा और
कठोर अभ्यास है
आसू भीगी पलको को दबाकर आँसू रोकना
धूल-भरी अलको का चुम्बन
और तन्मय निगाहो को छिपा कर रखना ।
जख्म चीरने वाले तीर मे भी एक अजब-सी स्वागत भरी
सिहरन रहती है

जव वह प्यार करने वाले तन को पकी फसलो की तरह
चीर देता है
और सलीव भी उस समय गुलाव के गुच्छे-सा हल्का
लगता है
(तुम तो जानते ही हो, तुमने क्रास वहन किया है ।)

यहाँ मै पडी हूँ प्रभु, धूल मे अपना चेहरा छिपाये
शाम के धुँधलेपन के माध्यम से मैं तुमसे बातें कर रही हूँ
और मेरी तमाम जिन्दगी यही शाम का धुँधलापन बनी रहेगी
अगर तुमने क्षमा का वह शब्द न कहा जिसके लिए मैं
आकुल हूँ
मै प्राथनाओ और सिसकियो से तुम्हे मथ डालूँगी
मैं स्वामिभक्त कुत्ते की तरह तुम्हारे लवादे का छोर चाहूँगी
तुम अपनी करुणाभरी आखो से मुझे वचित नही कर सकते
तुम मेरे गम आँसुओ की वारिश से अपने चरण हटा
नही सकते

बोलो तुमने उसे क्षमा किया या नही ! एक क्षमा का शब्द
हवाओ मे सैकडो चन्दन मजूषाओ की सुगन्ध विखेर देगा
जल धाराएँ आलोक से नहा उठेंगी, खण्डहर फूलो से ढँक
जायेंगे
पथ के ककड पत्थर हीरो की तरह चमक उठेगे

नरभक्षी पशुओ की काली खूखार आखो मे दया के आसू
आ जायेंगे
और वे चेतनामय पवत जो तूने पत्थरो से गढे हैं
झरनो की शत शत पलको से रो पडेंगे
और सारा ससार यह जान जायेगा कि तुमने उसे क्षमा
कर दिया

—गैब्रियेला मिस्त्राल

औरत

वह दो कदम आगे बढी
और दो कदम पीछे हटी
पहले कदम के अर्थ थे—'नमस्कार हे पुरुष, हे प्रियतम'
दूसरे क़दम के अर्थ थे—'बहन जी, नमस्ते'
और बाकी दूसरे कदमो के अर्थ थे—"कहो बाल-बच्चे
कैसे हैं।"
आज तो धूप खिली है। आकाश स्वच्छ है।

वह लपटा का ब्लाउज़ पहने थी
उसकी आँखो मे नीला समुद्र लहराता था
उसकी एक जेब मे एक सपना कैद था
उसके दिमाग के बीचोबीच एक मुर्दा आदमी टँगा हुआ था
जब वह समीप आती थी तो अपने अस्तित्व का
सबसे प्यारा अंश दूर कही छोड आती थी
जब वह बिदा होती थी तो दूर क्षितिज पर
एक छाया उसकी प्रतीक्षा मे खडी दीख पडती थी
उसकी निगाहे घायल थी और पहाडियो पर
खून मे लथपथ पडी थी।

उसके विशाल वक्ष थे, वह अपनी उम्र को गोधूलि के गीत
गाती थी

वह एक कबूतर की छाह मे सोये हुए आसमान
की तरह सुन्दर थी ।

उसका चेहरा इस्पात का था
और उसके होठो पर मौत की ध्वजाएँ अकित थी
वह हँसती थी तो लगता था—मानो समुद्र हँस रहा हो
समुद्र—जिसके पेट मे अगारे है, जिनसे वह तिलमिला उठा है
समुद्र—जिसमे चाद अपने को डूबते देखता है
समुद्र—जो अपने किनारो को चला गया है
अनन्त काल के शू य मे डूबता हुआ समुद्र ।

जब सितारे हमारे सिर पर गुनगुनाते है
और उत्तरी हवाएँ आँख खोलती हैं
उसकी हड्डियो का क्षितिज उसे और सुन्दर बना देता था
उसका जलता हुआ ब्लाउज, उसकी एक पौधे-सी आखें
जैसे कबूतरो पर सवारी करता हुआ नीला आकाश

—विन्सेन्त यूदोवारो

कवि

तुम्हार छन्द ऐसी कुजी बने
जिनसे एक सहस्र द्वार खुल जायँ
एक पत्तो गिरे एक पक्षी बगल से उडता हुआ गुजर जाय
जो कुछ तुम देखो उसे सृजन मे बाध लो
और ऐसा कि सुनने वाले की आत्मा कापने लगे ।

नये क्षितिज खोज निकालो और अपने शब्दो पर नियन्त्रण
रक्खो
अगर एक विशेषण अर्थ-गरिमा बढाता नही तो अर्थ-गरिमा
का ह्रास करता है

हम तन्तु-जाल मे उलझे है
हमारी मासपेशियाँ, बीती स्मृतिया की तरह
अजायब-घरो मे टँगी है
लेकिन इससे हमारी ताकत खोखली नही होती
सच्ची ताकत
दिमाग मे बसती है

कवियो ! तुम गुलाब पर क्यो लिखते हो
अपने गीतो मे गुलाब खिलाओ ।

इस सूरज की छाह मे सारी सृष्टि
सिर्फ तुम्हारे लिए है,

कवि विधाता का छोटा रूप है !

—विसेंत यूदोबारो

नीली आग वाली लडकी

जैसे क्षीर-सागर के किनारे सैकत राशि पर
या अथाह आकाश मे जडे हुए
एक धधकतेहुए नक्षत्र के बीचोबीच
मैं सो रहा था   मेरे समीप थी एक पवित्र लडकी !
उसकी निगाहो से तिरछी हरी-भरी किरणो
के निमल झरने झरते थे
उनमे स्वच्छ, पारदर्शी और अदम्य शक्ति की भँवरें थी

दो जादू भरे उभारो मे
दो अग्नि-शिखाएँ लहक रही थी
और वे अग्नि-धाराएँ स्वच्छ मासल लहरो मे इठलाती हुई
कदली खम्भ जैसी जाघो से तैरती हुई
उसके चरणो तक उतर गयी थी !

एक स्वण फसल जो अभी पकी नही !
उसके कचन तन के चढावो-उतारो मे रहस्यमय भविष्य थे,
और जादूगरो को नीली-नीली आग सुलग-सुलग उठती थी।

—पैबलो नेरूदा

ऊब

हुआ यह है कि मैं अपने इस आदमी होने से ऊब गया हूँ
यूँ मैं दर्जियो की दूकानो में जाता हूँ फिल्मो मे जाता हूँ
पर यह सब इतना नीरस, इतना छिछला मालूम पडता है
जैसे एक ऊनी नमदे का राजहंस आदिम चेतनाओ और
खुश्क राख की ढेरी पर तैर रहा हो।

बाल काटने की दूकानो से उठती गन्ध से मेरी आख मे
आसू छलक आते हैं
मैं पत्थरो और ऊनी कपडो से भी छुटकारा पाना चाहता हूँ
ये मकान, ये दूकाने, बाग बगीचे, एलीवेटर, ये धूपके चश्मे
चाहता हूँ यह सब मेरी निगाह से दूर हो जायँ

हुआ यह है कि मैं अपने पाँवो, अपने नाखूनो, अपने बालो
और अपनी परछाही तक से ऊब गया हूँ
हुआ यह है कि मैं अपने आदमी होने से ऊब गया हूँ।

फिर भी इसमे काफी मजा आवे अगर किसी
बडे आदमी को पटाखा छोडकर डरा दूँ
या किसी भगतिन बुढिया को नदी मे ढकेल दूँ
या एक हरा छूरा लेकर चीखता हुआ पागलो-सा
सडक पर दौडूँ जब तक कि ठण्ड के मारे अकड न जाऊँ।

मुझे लगता है कि मै अँधेरे पातालो मे धँसनेवाली एक जड हूँ
काँपती हुई, बिखरती हुई, नीद मे झूमती हुई
धरती की अनजान गुफाओ मे भटकती हुई
उम्र का हर दिन चबाती हुई, चिन्तामग्न, चेतनाहीन।
और मै यह नही चाहता

मैं अपने सर पर इतनी चिन्ताएँ नही चाहता
न मै जड बनना चाहता हूँ न समाधि
पाताल मे, मुर्दो के बीच मे बिलकुल अकेले
चिन्ता से मरणशील ठण्ड से सज्ञाहीन

इसीलिए हर सोमवार मिट्टी के तेल की तरह जलने लगता है
जब वह देखता है कि मै कैदियो सा चेहरा बनाये आ रहा हूँ
पिचके पहिये की तरह वह पथ पर चलते हुए कराहता है
और अँधेरी रात मे खून-सने कदम रखता चला जाता है
और मुझे खीच ले जाता है, कुछ अँधेरे कोनो, कुछ सील-
भरे मकानो मे
अस्पतालो मे जहाँ खिडकियो की राह से ककाल बाहर फेंक
दिये जाते हैं
जते की दूकानो मे जहा सिरका महकता है
सडको पर जो दरारो से ज्यादा खतरनाक है

गन्धक के रग की चिडिया मिलती है
और दरवाजो पर टँगी हुई गन्दी आते जिनको देखकर
मितली आती है
काफी के प्यालो मे भूल से छूटे हुए नकली दाँत
कद्देआदम आइने जो शर्म और डर से रोये हैं
जिनमे मोर्चा लग गया है

हर जगह छाते हैं, जहर है, नालिया हैं

मैं हर तरफ आता-जाता हूँ, मेरे कदमो मे स्थिरता है
मेरे चेहरे मे आँखें हैं
मेरे पावो मे जूते हैं, मेरे दिल मे गुस्सा है, मेरे माथे मे
खोखलापन है
मैं आगे बढता हूँ, दफ्तरो मे से, दूकानो मे से
आँगनो मे से, जहा तार पर कपडे सूख रहे हैं
बनियाइनें, तौलिया, कमीजें
जा रोते है—मैल के गन्दे पिघले हुए आसुओ मे

—पैबलो नेरुदा

यातना की रूप गाथा

जिन्दगी और जिन्दगी की परछाइयो के बीच
सघर्ष करता हुआ
मेरा हृदय
लहूलुहान वनपशु की भाति

गरजता हुआ
सभी पवित्र मान्यताओ को चीरता हुआ
दुनिया और उसकी समस्त वस्तुओं
पर गुर्राता हुआ
अपने अन्तहीन युद्ध नाट्य मे व्यस्त
भय और भ्रम के बीच
उलझा हुआ
केन्द्रच्युत !

अब एक कँटीले कोडे से
पुराण-गाथा मेरे विश्वासो की खाल उधेडती है
समाज मुझ पर छा जाता है
और मेरी चप्पल महासागरो से मोर्चा लेती हैं
मेरे सकट मे से उकाब उडानें भरते है
और वह सूर्य जो मैं हूँ जो मेरी सत्ता है
जिसका विस्फोट होने जा रहा है
गीली लकडी की तरह सिर्फ चिटख-चिटख कर रह जाता है

भौतिक पदार्थ मेरे वक्ष पर चिपक जाते हैं
वर्तमान उसके महावट की तरह फैलता जाता है
और यह मधुमक्खी के छत्ते जैसा महानगर
सत्ता रूपी कबूतरों को उड़ाता है।

अपने भ्रमात्मक अयथार्थ व्यक्तित्व को
अपनी मूर्तिपूजकता को
मिटाने के लिए
एक तुमुल युद्ध
अराजकता की चिमनियों
और काले सीमेंट के आकाश का
पुनर्निर्माण करने के लिए
और प्रेरणा और अस्तित्व के
बीच की समस्त दीवारों को ढहा कर नरक की
खाइयों में फेंकने के लिए
एक तुमुल युद्ध
कब्रों पर खड़े होकर
अराजकता के केन्द्र नगर में
मैं अपनी राख के फूल ढूँढ रहा हूँ
मेरा घोड़ा टूटी तलवारों के बीच मरा पड़ा है
बिना ढाल के
बिना जिरहबख्तर के
ढेर-की ढेर लाल बन्दूकें
नींद की अन्दरूनी परतों से
उबल पड़ने वाली यह घटना
नावों की तरह पाल फुलाती हुई
यथार्थ स्थिति का यह परिणाम
स्पष्ट और भयानक

पर्वतो की तरह
हड्डियो की तरह
कबूतर की तरह
कण्ठ-स्वर की तरह

भँवरो के बीच मे स्थित
अपने रोजमर्रा को बिजलियो से
विस्तार देते हुए
यानी उलझनो मे से
रन्ध्रो मे से अस्तित्व खीचते हुए
अज्ञात मे सत्य बोते हुए
और पहाडो के बीच मे
उलझती नदिया अवतरित करते हुए

यह गतिशील अस्तित्व नही है—
भावनाओ का जीवन दर्शन,
लपटो और पत्थर के फूलो का
ओजमयी संचित चिन्ता को तीन दीवारो के अन्दर सग्रहीत
करना
वह सब जो छायामय है—जजर है
उसे बाँध रखना
मेरी आत्मा और उसकी सामाजिक उपयोगिता
सामाजिक उपयोगिता जो उसका सत्य है
उसका शोपनाग है
उसका सिहवाहन है
क्योकि वह जो गहन है किन्तु निश्चित है
यह ठोस है कल्पित नही

जो ठोस है वही दृढ है
तीखा है सप्रभावशाली है
मन्दिरो का पत्थर है
आदमी की पगडण्डी है
जिन्दगी का व्याकरण है
जब वह लकडी की मेजो पर
पलता है
तब उसमे विस्फोट होता है
और सवथा नयी सृष्टि का प्रारम्भ होता है

जजीरो मे जकडे हुए घोडो का समन्वय
फौलाद का फेन आकाश मे बरसता हुआ
ससार के विरुद्ध व्यक्ति के
विप्लवी ज्वार का फेन
यह मैं नही हूँ
यह है अहम्वादी नायक
और उसके शृगाल
जो बुजुआ ज्ञान, विज्ञान दर्शन को निगल रहे हैं
तिमिर युगो का युग
व्यक्तित्व को उलझाते हुए
शब्दो के दिव्य मकडे को प्रोत्साहन देते हुए
उलझनो को बढाते हुए
खून के प्रेत-दूतो को आमन्त्रण देते हुए

इसी कारण से
प्रेरणा की समस्त लाल तेजो
समन्वय की अदम्य प्यास
उदात्त और पवित्र अग्नि बन जाती है
हाय

[illegible]
[illegible] है
[illegible] का महासागर
[illegible]
[illegible]
[illegible] द्वात्मक उपमाओ मे [illegible]
[illegible] बन जाती हैं
[illegible] की तरह नही
जिन [illegible] ने प्रेरणा मिली है।
जो [illegible] और पहेलियो में [illegible]
न,—
इतिहास के अन्दर
इतिहास का निर्माण करता हुआ
जो कुछ प्रवाहित हो रहा है
वह अपने माध्यम से अभिव्यक्त [illegible]
मेरे प्रतीको के विरुद्ध
लड़ता हुआ, चीखता हुआ,
मार्क्सवादी सत्य का [illegible]
मेरा अस्तित्व
सम्पूर्ण समाज के साथ
ज्वालामुखियो की तरह
फूटता है।

जर्मनी

निजी भाषा

भाषा उग आयी है तुम्हारे अधरों पर
साथ साथ, उग आयी है तुम्हारे हाथों में एक शृंखला

खींचो ! उससे तमाम जगत् को अपनी ओर खींचो
वरना तुम बेबस खींच लिये जाओगे !

—ह्यूगो वान हाफमान्स्थल

मेरे बिना तुम प्रभु ?

जब मेरा अस्तित्व न रहेगा, प्रभु, तब तुम क्या करोगे ?
जब मै—तुम्हारा जलपात्र, टूटकर बिखर जाऊँगा ?
जब मै तुम्हारी मदिरा सूख जाऊँगा या स्वादहीन हो जाऊँगा ?

मैं तुम्हारा वेश हूँ, तुम्हारी वृत्ति हूँ
मुझे खोकर तुम अपना अर्थ खो बैठोगे ?

मेरे बिना तुम गृहहीन निर्वासित होगे, स्वागत विहीन
मै तुम्हारी पादुका हूँ, मेरे बिना तुम्हारे
चरणो मे छाले पड जायेगे, वे भटकेंगे लहूलुहान !

तुम्हारा शानदार लबादा गिर जायगा
तुम्हारी कृपादृष्टि जो कभी मेरे कपोलो की
नर्म शय्या पर विश्राम करती थी
निराश होकर वह सुख खोजेगी
जो मै उसे देता था—
दूर की चट्टानो की ठण्डी गोद मे
सूर्यास्त के रगो मे घुलने का सुख—

प्रभु, प्रभु मुझे आशका होती है
मेरे बिना तुम क्या करोगे ?

—*रेनर मरिय रिल्क*

निष्ठा

मेरी आँखें निकाल दो फिर भी मैं तुम्हें देख लूँगा,
मेरे कानों में सीसा उडेल दो पर तुम्हारी आवाज मुझ तक पहुँचेगी

पगहीन मैं तुम तक पहुँचकर रहूँगा
वाणीहीन, मैं तुम तक अपनी पुकार पहुँचा दूँगा
तोड दो मेरे हाथ, पर तुम्हें मैं फिर भी घेर लूँगा
और अपने हृदय से इस प्रकार पकड लूँगा जैसे उँगलियों से

हृदय की गति रोक दो और मस्तिष्क धडकने लगेगा
और अगर मेरे मस्तिष्क को जला कर खाक कर दो—

तब अपनी नसों में प्रवाहित रक्त की बूँदों पर मैं तुम्हें
वहन करूँगा।

—रेनर मरिय रिल्क

पतझर की शाम

चाद से आयी हुई पवन झकोर
बाँध लेती है वृक्षो को

एक टटोलती पत्तो नीचे गिरती है
सड़क की टिमटिमाती रोशनियो के जाल मे
दूर का तमाम गहराया अन्धेरा हृदय
धावा बोलता है अनिश्चय ग्रस्त नगर पर

—रेनर मरिय रिल्क

तुमसे साक्षात्कार के पहले ही

[सम्भवत. बेनवेनुटा के लिए]

अनमिली अनजानी
अनुपलब्धि से शुरू होने वाली
ओ मेरी प्यार,
यह भी तो नही ज्ञात कि कौन से स्वर तुम्हे प्रिय लगते है ?

मात्र भविष्य की लहरो की उठान मे
मैं तुम्हारा आकार पहचानने का यत्न करता रहा हूँ।
तमाम बड से बडे
मुझमे बसे हुए स्मृति-बिम्ब, सुदूर महसूस किये हुए दृश्य,
मीनारें, नगर, सेतु और रास्तो के
अप्रत्याशित घुमाव और देवताओ की बस्ती
वाले रहस्यमय देशो का इन्द्रजाल
मुझमे धीरे-धीरे सम्पुजित होता रहा है
मात्र तुम्हें साथक करने के लिए—
तुम जो पकडाई मे नही आती।

ओ तुम फूलवन हो
जिन्हे कितनी प्रदीप्त आशाओ से मैंने निहारा है, कही
किसी उद्यान गृह की
खिडकी खुली कि तुम मानो साकार
विचार-मग्न मुझसे मिलने निकल आयीं।

सड़कें—मैंने पाया—
मानो तुम अभी-अभी उन पर चल कर गयी हो
और अक्सर बिसाती की दूकानों पर
दर्पण दीखे जो अब भी तुम्हारी छाया से
आच्छादित थे और मेरी छाया लौटाते हुए
मानो चौंक गये—कौन जानता है कि क्या वह
वही पक्षी तो नहीं था जिसका गीत
कल शाम अलग अलग
हममें से गूँज गया

—रेनर मरि

तमाम दिन आज

तमाम दिन आज तुम्हारी ख़ातिर मैं महसूस करता रहूँगा
गुलाब-गुलाब, तमाम सबको गुलाब सा महसूस करता रहूँगा
तुम्हारी ख़ातिर
तुम्हारी ख़ातिर आज फिर एक बार महसूस करूँगा
देर तक (आह कितनी देर तक !) अनमहसूस किये हुए गुलाब

हर गुलदस्ते को गुलाब से गझिन कर, एक दूसरे पर शत शत
पर्तों मे गूँथ कर
जैसे घाटियो मे से निकलती घाटियाँ
एक दूसरे मे गुथी, एक दूसरे मे समाविष्ट और
एक दूसरे पर बिछी हुई

ऐसी खामोश जैसे रात
समर्पित निगाहो पर छायी हुई,
जैसे ऊपर के फैलावो मे सितारे
अपने को बुझाती हुई चमक वाले।
रात गुलाब गुँथी, गुलाब बसी।
गुलाबो की रात, तमाम तमाम झिलमिलाते गुलाबो
की रात—झिलमिलाती गुलाब-रात,
हज़ार हज़ार गुलाब-पलको की नीद-रात,
झिलमिलाती गुलाब नीद—यह मैं हूँ जो अब तुम्हे सोता हूँ,
तुम्हारी सुगन्धो को सोता हूँ—तुम्हारी शीतल आतुरताओ

को गहराई मे सोता हूँ।
मैं तुम्हे दिया हुआ हूँ कि तुम सहेजो
कि तुम मेरे अस्तित्व को हर अतिशयता को सँवार दो
कि मेरी नियति को फैलाव दो
उस अथाह विश्रान्ति मे—
अब मेरी हो वह खिलान
जिसे कोई बाधा रोक न सके
हृदय-परिधि के बराबर बडे खुले हुए गुलाबो मे से
मिला है—
गुलाबो विकसा
गुलाब-उपजा और चुपचाप गुलाबो पला—
गुलाब-बसा मन, ताकि बाहर का गुलाब-प्रसार हमारे लिए अनन्त फैल जाय
महसूस करने के लिए—

—*रेनर मरिय रिल्क*

आगतो के प्रति

१

सचमुच मैं तिमिर-युग मे रहता हूँ।

मिथ्याहीन शब्द जहा मात्र अनगल कल्पना है। शान्त माथा
उसी का हो सकता है
जिसका दिल पत्थर का हो। जिसके मुँह पर हँसी है
वह अभी खौफनाक खबरो से वाकिफ नही हुआ।

आह कैसा अजब युग है
जब पेड-पौधो तक की बात करना लगभग अपराध है
क्योकि सवव्यापी है अन्याय के प्रति एक चुप्पी—
खुश वही है जो
अपने मुसीबतजदा दोस्तो की पहुँच के बाहर है

यह सच है मैं रोजी कमाता हूँ
पर यकीन करो, यह सिफ एक दैवयोग है
मै जो कुछ करता हूँ उसमे से कुछ ऐसा नही
जिसके लिए मुझे भरपेट खाना दिया जाय
सिफ किस्मत है कि मै बच गया हूँ (अगर किस्मत जरा
साथ छोडे तो मै कही का न रहूँ)

कहा जाता है खाओ पियो। खुश रहो बस।
पर मैं कैसे खाऊँ पिऊँ।

जब मेरा कौर भूखो के मुँह से छिन कर आया है
मेरा प्याला प्यासो के सामने से उठकर आया है
फिर भी मैं खाता हूँ। पीता हूँ।

मैं चाहता हूँ खुशी से ज्ञानवान बनना।
शास्त्रो मे बताया गया है ज्ञान क्या है
सासारिक झगडो से बचो,
अपना समय काटो
बिना किसी से डरे
बिना किसी को प्रताडित किये
बुराई के बदले भलाई करके—
इच्छा की तृप्ति नही वरन उसकी उपेक्षा
ज्ञान कहलाती है।
मैं यह सब कुछ नही कर सकता
सचमुच मैं तिमिर-युग मे रहता हूँ

२

मै शहरो मे आया अराजकता के दिनो मे
जब भूख का साम्राज्य था
मैंने लोगो को जाना विप्लव के ज़माने मे
और मैने उनके साथ विद्रोह किया—
और इस तरह बीत गये वे दिन
जो मुझे धरती पर मिले थे

मैंने कत्लेआम के बीच अपनी रोटिया तोडी
हत्या की छायाएँ मेरी गोद मे लेटी
और जब मैंने प्यार किया, मै निरपेक्ष रहा,
मैंने अपनी प्रकृति को सहा नही।

और इस तरह बीत गये वे दिन
जो मुझे धरती पर मिले थे।

मेरे ज़माने में हर सड़क रेतीले दलदल से ले जाती है।
हर शब्द वधिक के द्वार ले जाता है
अंत मैं कर क्या सकता था ? पर हां, शायद मेरे
बिना सिंहासन कुछ और जमे हुए रहते, यही मेरे जीने की
एकमात्र उम्मीद थी
और इस तरह गुज़रते गये दिन
जो मुझे धरती पर मिले थे

आदमी की ताकत कम थी। लक्ष्य
दूर था। इतना जाहिर था
कि मैं शायद ही पा सकूं।
इस तरह समय बीतता गया
जो धरती पर मुझे मिला था।

२

तुम जो इस जल-प्रलय में बच रहोगे
जिसम हम डूब रहे हैं
सोचना—
जब हमारी कमज़ोरियों पर सोचो
तो इस अंधकार भरे युग पर भी सोचना
जो इन कमज़ोरियों को उत्पन्न करता है
क्योंकि हम जितने जूते बदलते हैं
उससे ज्यादा देश बदलते गये
इस वर्ग-युद्ध में
जिसमें केवल अन्याय था और कोई प्रतिरोध नहीं

क्योंकि हम अच्छी तरह जानते थे
कि कूडे-कचट के प्रति घृणा भी—
भृकुटि को कठोर बना देती है
अन्याय के प्रति क्रोध भी वाणी को
कर्कश बना देता है
आह ! हम जो करुणा कोमलता की नींव रखना चाहते थे
खुद करुण, कोमल नहीं हो सके
लेकिन तुम—जब आखिरकार कभी वह दिन आये
जब आदमी आदमी की मदद के लिए उठ खड़ा हो
तो हम पर
कठोर फैसले मत देना

—बर्तोल्त ब्रेख्त

आस्था

कूडा-कर्कट, अस्थियो, कंकालो, ताकतो और नयी खुदी
कब्रो की मिट्टी के ढेर—दूर तक फैले हुए
इस तरह यह सृष्टि समाप्त हो रही
और समाप्त हो रहा है मेरा यह जीवन भी ।
और मैं चाहता हूँ कि जी खोलकर रो लूँ और
तटस्थ होकर बैठ जाऊँ

किन्तु यह जो अन्दर एक अदम्य दृढता है
वह बैठने नही देती ।

तन कर खडे हो जाने और जूझ पडने की दृढता
हृदय की गहरी बहुत गहरी पर्तों मे छिपा हुआ विद्रोह
और फिर मेरी यह आस्था , जो मुझे
आज इस तरह बेचैन बना रही है—
वह एक दिन, एक ज्योति मे रूपान्तरित
होकर रहेगी

—हरमान हेस्स

गीतों की राह

बच्चो के चेहरो पर
पुत गया है मल बेरो का रस
मीठे फलो के आस्वादक, चुराते हुए घूम रहे हैं वे
फलो के धब्बो वाली पोशाक मे नाच रहे हैं बच्चे

नाच रही है उनके साथ पछुवा हवा
नाच रहे हैं रस्सियो पर सूखते हुए कपडे
मानो आश्चयजनक जीवन की सासे
कोई फूँक गया है मनुष्य के रीते हाड-मास मे !

छायाएँ, स्वप्न, गुजरे हुए लोग
धूप भरे गाँवो मे बज उठा है एक ढोल
पाखी बोलते है
झाडिया गूँजती हैं

सरल है इनका अर्थ समझना
तुम लौट आये हो
लौट आये हो जहाँ से चले थे
अब तुम जान चुके हो कि एक लगते हैं पालना और ताबूत !
वृत्त पूरा हो गया है
क्योकि केन्द्र मिल गया है

मेरी गुजर है

[illegible] स्रोत तक हो,
अगारों के सुलगने के क्षण तक हो,

गीतो की उठान हुआ करती है
जडो से शिखर-बिन्दु तक
और फिर स्वर उतरते हैं

जो गहरे अंधेरे मे है
और ऊपर प्रकाश मे—
दोनो को छूकर गुजरती है
गीतो की राह

—फ्रेडरिक ग्यार्ज युगर

तुर्की

ज्ञान का उल्लास

पालनो के सिरहाने
गायी जाने वाली लोरियो से लेकर
रेडियो से आने वाले समाचारो तक—
हर जगह छिपे हुए असत्य पर विजय प्राप्त करना
चाहे वह असत्य हृदय में हो
या किताबो मे
या शोर-गुल भरी सडको पर
कितना कल्पनातीत आनन्द है ज्ञान मे
यह जान लेने मे
कि समय के कदम
अनिवार्य रूप से किधर बढते रहेगे
और अब भविष्य मे क्या आनेवाला है।

—नाज़िम हिकमत

यह दुनिया—हमारे दोस्त और दुश्मन

मुझे इस बात की कितनी खुशी है
कि मैं दुनिया मे पैदा हुआ हूँ।
कि मैं इसकी मिट्टी को
इस अन्न को

इसके संघर्षों को
इसकी धूप को
प्यार करता हूँ।
हालाँ कि नक्शानवीसों ने
इसकी चौहद्दी दो इंच के वृत्त में बाँध दी है
और सूरज के मुकाबले में
यह सिर्फ खिलौना ही है,
पर मेरे लिए तो इसके विस्तार का
ओर छोर नही है
कितना अनिर्वचनीय उल्लास है
धरती की परिक्रमा लगाने मे
उसकी मछलियों
उसके सितारों
और उसके अगणित फल फूलों को देखने में
जिनका मैंने नाम भी नही सुना।
हाँ, किताबों के नक्शों के माध्यम से
मैंने यूरोप जरूर घूमा है

क्रमागत

मगर सिर्फ नक्शो मे ।
तमाम उम्र मुझे कोई ऐसा पत्र नही मिला
जिस पर एशिया के किसी डाकखाने की मोहर हो
अमेरिका के लोग
मुझसे उतने ही अपरिचित है
जितना मेरी गली के बनिये से

लेकिन फिर भी हर जगह,
स्पेन से चीन तक
और उत्तमाशा अन्तरीप से अलास्का तक
ज़मीन के चप्पे चप्पे
और समुद्र की लहर लहर मे,
हमारे दोस्त हैं
हमारे दुश्मन हैं ।
दोस्त
मैंने उन्हे कभी देखा भी नही
फिर भी सम्भव है
उन्हे और मुझे
साथ साथ
अपनी जान देनी पडे
उसी आज़ादी के लिए
उसी रोटी के लिए
उसी आशा मे—
और इसी तरह दुश्मन भी
लेकिन मेरी ताकत इस बात मे है
कि मैं अकेला नही हूँ
मेरे विज्ञान ने
इस दुनिया और उसके वाशिन्दो को

अच्छी तरह समझ लिया है
इसीलिए
तमाम शकाओ, प्रश्नचिह्नो और असमजसो-
से मुक्त होकर
मैने इस महान् संघर्ष मे
निश्चिन्त होकर अपना दायित्व सँभाल लिया है !
तुम और दुनिया
मेरी पक्ति मे नही हो
इससे मुझे सन्तोष नही

लेकिन इसके बावजूद तुम्हारे लिए
मेरे मन मे असीम स्नेह है।
और, सारी दुनिया मुझे इतनी
ममतामयी और सुन्दर लगती है

—नाजिम हिकमत

तुम्हारे हाथ और असत्य

तुम्हारे हाथ—
चट्टानो की तरह संजीदा
जेल मे गाये जाने वाले गीतो की तरह उदास
जुते हुए बैलो की चाल की तरह भारी
भूखे मरते हुए बच्चो के चेहरे की तरह भयानक

तुम्हारे हाथ—
श्रम मे मधु-मक्खियो की तरह चुस्त और सक्रिय
माँ के पयोधरो की तरह भरे पुरे,
प्रकृति की भांति निर्भय और निर्बाध
खुरदुरी खाल के नीचे
मैत्री का स्नेह भरा स्पर्श छिपाये हुए

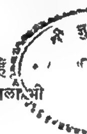
यह गलत है कि धरती को
शेषनाग को अपने माथे पर धारण कर रखा है
धरती यह समूची धरती
तुम्हारे इन्ही हाथो पर टिकी हुई है।
ओ तमाम दुनिया के लोग !
जब तुम भूख से व्याकुल रहते हो
और तुम्हे रोटी की जरूरत होती है
तब वे तुम्हे खिलाने के लिए
अगणित असत्यो की फसल तैयार करते हैं

और तुम तमाम जिन्दगी
एक बार साफ थाली मे भरपेट खाने के लिए
तरसते-तरसते दम तोड देते हो
जब कि दुनिया भर मे शाखे पके हुए फलो के बोझ से
झुकी पडती हैं।

ओ तमाम दुनिया के लोगो !
सबसे बढकर
एशिया
अफ्रीका
मध्य पूर्व
सुदूर पूर्व
प्रशान्त द्वीप समूह
और मेरे देश के लोगो
यानी तुम जो तमाम इन्सानी आबादी के
सत्तर प्रतिशत से अधिक हो
तुम अब भी सोये हुए हो
तुम अपने हाथो की तरह पुराने हो
तुम बच्चो की तरह
खुश हो सन्तुष्ट हो
तुम अपने जवान हाथो की तरह अनुभवशून्य हो !
और ओ योरोप और अमेरिका के लोगो
तुम सचेत हो, तुममे साहस है
पर तुम इन्ही हाथो की तरह चिन्तनशून्य हो
असत्य तुम्हारे हृदयो पर विजय पा लेता है
और तुम उसके जाल मे उलझ जाते हो।

ओ साथियो !
अगर यह असत्य रेडियो से बोला जाता है

अगर यह असत्य रोटरी मशीनो पर छापा जाता है
अगर यह असत्य किताबो मे लिखा जाता है
दीवारो और खम्भो पर चिपके नोटिसो और इश्तहारो पर
अंकित किया जाता है
अगर यह असत्य चित्रपट पर नगी टागो के
रूप मे दिखाया जाता है
अगर रूमानी गीतो मे यह असत्य गूँथा जाता है
अगर सपने भी इसी असत्य मे रँगे होते हैं
बाँसुरियो मे भी यही असत्य सिसकता है
निराशा भरी विरह की चादनी रातो मे यह
असत्य झिलमिलाता है।
अगर शब्द, रग, ध्वनि
सभी इसी असत्य के वाहन हैं
तुम्हारे हाथो को खरीदने वाला भी
इसी असत्य का ठेकेदार है



अगर तुम्हारे हाथ के अलावा
दुनिया की हर छोटी बडी चीज
इसी असत्य के स्वर मे बोलती है
तो इसका एक मात्र कारण यह है
कि वे चाहते हैं
कि ये तुम्हारे अपराजेय हाथ
कठपुतलियो की तरह
उनके सकेतो पर नाचे
उन्हे कोई भी दृष्टि न मिले
उन्हे कोई ज्ञान न मिले
ताकि तुम्हारे हाथ कभी भी उनके खिलाफ न उठ
ताकि अन्याय का कभी अन्त न हो
ताकि गुलामफरोशो का शासन

इस धरती पर सदैव बना रहे—
यह धरती
जो हम सबो की माता है ।

—नाज़िम हिकमत

उदास धुँधली शामो मे
उसकी याद मे दीवानी वुलवुलें
गीतो मे सिसकने लगती हे !

—*यहिया कमाल*

चन्द्रमा के प्रति

यह माना कि तुम तमाम शहजादो से ज्यादा सुन्दर हो !
लेकिन हमे क्या करना ?
तुम तमाम उम्र धरती और आकाश का चक्कर लगाते हो ।
लेकिन हमे क्या करना ?

तुम हमारे सर्द बिस्तरो को गम नही कर सकते
तुम हमारी केतलियो को गम नही कर सकते
मेरे प्यारे गोरे मुखडे वाले चाँद
हमे तुमसे क्या फायदा है ?

—अफर यतकी

इक्कीसवीं शताब्दी के लोगो का गीत

मैं तुम्हारा गीत गाता हूँ
ओ इक्कीसवी शताब्दी के लोगो !
तुम धरती पर इस तरह चलोगे
जैसे कोई शाहज़ादा अपने बाग मे टहले !

और तुम्हारे व्यक्तित्व पर आनन्द
इस तरह छाया रहेगा, जैसे
इत्र मे बसे हुए स्वच्छ कपड़े ।

तब युद्ध न होगे
संघर्षों का नाम निशान न होगा,
इन्सान की पलको मे आँसू आयेंगे
मगर सिर्फ प्यार के बाद, या किसी की मौत के बाद ।

ओ इक्कीसवी शताब्दी के लोगो
तुम (यानी भविष्य) मुझमे से प्रवाहित हो रहे हो

मेरी नसो मे तुम्हारी पगध्वनियाँ अनोखी लगती हैं !

इन सुनसान सड़को पर
रोटी तोड़ते हुए

और सितारों की ओर देखते हुए
तुम आँसू नहीं बहाओगे
तुम्हारी रेशमी पोशाक सूरज की रोशनी की तरह
सुलभ होगी
ओ शान्तिमयी धरती के बच्चो,
तुम्हारी जिन्दगी में न बन्दूकें होंगी
न राइफलें
न घृणा
न गरीबी !

क्या मैं उन दिनों को देखने के लिए
जिन्दा रहूँगा ?
क्या मैं तुम्हारे कन्धे से कन्धा लगाकर
भविष्य के उन शानदार राजमार्गों पर
चल सकूँगा ?

क्या चाँद, सितारे और बादल
मुझे भी उतने ही नये लगेंगे, जितने कि तुम्हें ?
मेरे अपरिचित उत्तराधिकारियो
क्या मैं अपने हाथों में तुम्हारा हाथ ले सकूँगा ?
कितनी गर्म जिन्दगी होगी उन हाथों में
जिनको दुख और अभावों ने कभी नहीं छुआ है

ओ आने वाले युग !
तुम्हारा ख्याल आते ही मैं
पंछी की तरह पाँखें खोलकर आस्मानों को नापने
उड़ चलता हूँ !

मैं जानता हूँ कि इस दुनिया में

महान् गीत गाये जायेंगे
जब तुम्हारे गीत की पहली कड़ी
गायी जायेगी
तब शायद मेरी हड्डियाँ भी धरती मे
गल चुकी होंगी
मेरे समकालीनो की तरह
शायद तुम भी मेरे गीतो को नापसन्द करोगे
लेकिन इससे क्या होता है ?
तुम्हारे जीवन मे तो सौन्दर्य जगमगायेगा
तुम पर तो असीम शान्ति की छाया होगी
तुम तो सुखी रहोगे
बस !

—*हसन दिनाम*

सम्बोधित

मैं हलीम तृतीय हूँ, महान् और पवित्र
सुल्तानो का सुल्तान ,
मेरे गोर हाथो से शुरु होते है दिन
मेरी रियाया के

मेरा उठना मात्र ही
अज्ञात कुमारियो तक मेरी उद्दीप्ति पहुँचा देता है
मैं समय का बोध करता हूँ
अपने ही नैरन्तय से

अखिल ब्रह्माण्ड की समस्त दिशाएँ प्रसारित है
मेरे ही तन की परिधि तक
और मेरे तमाम स्थल सुखद है
मेरे ही तन से

मैंने ही उकाबो के साथ
आज़ाद कर दिया है विज्ञान, कविता और विजय अभियानो को
ताकि आनेवाली पीढिया सुखी हो
समुद्रो पर जमीन पर

आसमान बाअदब हैं मेरे ऊपर छाये हुए
गहरे और नीले

मेरा प्यार और घृणा दो आत्माओं की भाँति
परस्पर समान हैं

नीग्रो

[अमेरिकी]

थकान

मैं काम करते-करते थक गया हूँ मै दूसरे की
सभ्यता का निर्माण करते-करते थक गया हूँ।

अब मै आराम करूँगा, मेरी प्यारी जेन!
मै अब सेलून मे जाऊँगा, एक आध बोतल पीयूँगा,
दो चार बाजियाँ खेलूँगा, और किसी शराब के
पीपे पर सो जाऊँगा।

और तुम मेरी रानी! कोई परवाह नही, अपने बूढे मालिक
को सडने दो, अपने गोरे मालिक के कपडो
को चिथडा हो जाने दो, और गोरे लोगो
के पुराने गिर्जाघरो को जहन्नुम की अथाह खाइयो
मे डूब जाने दो।

और तुम ठाठ से अपने दिन बिताओ। भूल जाओ कि तुम्हारा
विवाह मुझसे हुआ है। ठाठ से अपनी रातें बिताओ,
शराब से चूर होकर।

अपने बच्चो को नदी मे फेंक दो इस सभ्यता ने हमे
जरूरत से ज्यादा बच्चे दे डाले हैं। आखिर
बडे होकर अपने को घिनौने काले हब्शी देखने से तो
बचपन मे ही मर जाना बेहतर है।

सूर्य-पुत्र

हम सूरज की सन्तानें हैं
उगते हुए लाल सूरज की सन्तानें !
हम दक्षिण के देशों का भाग्य बुन रहे हैं,
उस रहस्य क्षण की प्रतीक्षा में हैं,

जब हमारा मसीहा प्रकट होगा
उसके हाथ में सचाई की धधकती हुई
तलवार होगी
जिसके फौलाद में भ्रातृत्व का स्नेह और
दृढ़ता होगी।
और वह आकाश में लाल अक्षरों से
लिखेगा—"आज़ादी! भ्रातृत्व!"

हम सितारों की जाति के लोग हैं
संघर्ष करने वाले लोग!
हम लोगों ने दुख भरे गीतों को
थपकी देकर सुला दिया है
हमारे गलत तूफानी आवेश
हमें वहाँ ले गये,
जहाँ मुरझायी हुई चाँद की किरणें
निराशा भरी रात में सो जाती हैं।
लेकिन फिर हम सितारों की छाँह में

वहाँ पहुँचे
जहाँ किन्ही प्राचीन, जादू-अकनों से
दो शब्द चमक रहे थे—
"आजादी ! भ्रातृत्व !"

हम बादलों और कोहरों को चीरकर आये हैं
हम ताकतवर लोग हैं !
गोधूलि ने हमारी उनींदी आँखें चूमी हैं
और वैभवशाली आकाश में
एक रहस्यमय सिंहासन स्थापित किया है
जो हमेशा हमारा होगा
हम मसीहा की सन्तानें हैं
वे जो सदा गायेंगे
आजादी ! भ्रातृत्व !

—फेण्टन जानसन

अज्ञात हत्यारे

तो उन्होने चुपचाप उस पर हमला किया
और उसे खीच ले गये,
उनका षड्यन्त्र इतना पूर्ण था कि
सरकार ने दिन दहाडे जिन नियम और व्यवस्था के प्रहरियो
के हाथ मे उसे सौंपा था,
उनको पता तक नही चला।
और उन लोगो ने भय से काँपते हुए
उस चिथडे-चिथडे हुई लाश को देखा
तो सिर्फ यही कह सके—"हत्यारे पता नही कौन थे ?"

तो इसी तरह, मेरा यह देश
चुपचाप खीचा जा रहा है,
नैतिक मौत की तरफ
हत्या की तरफ,
नक्कारे बजाकर और तुरही बजाकर
यह हत्या नही की जा रही है,
बल्कि
कुछ अँधेरे और कुछ उजाले मे—
छुके छिपे।
लेकिन जब लाश सामने नज़र आयेगी
तब इतिहास यह नही कह सकेगा कि
"हत्यारे पता नही कौन थे ?"

—लेस्ली पिन्क्ने हिल

हत्या के बाद रात भर

उसकी आत्मा धुएँ मे लिपटी हुई स्वर्ग पहुँची
उसके पूर्वजो ने, हृदयहीन क्रूरता से क्षत विक्षत,
उसकी आत्मा को हृदय से लगा लिया।
वह भयानक हत्या रात भर झूलती रही।

एक अकेला चमकता हुआ सितारा (शायद वह सितारा
जो उसका सरक्षक सितारा था, और जिसने अन्त मे हार
कर उसे हत्यारो के हाथ मे सौप दिया था)
उसकी झूलती हुई लाश को सूनी निगाहो
से देखता रहा।

सुवह हुई तमाशबीन तमाशा देखने आये
भयानक लाश, धूपमे खडखडा रही थी
औरते इकट्ठा थी, किसी की आख मे
सहानुभूति नही थी पश्चात्ताप नही था।

सडती हुई लाश के चारो ओर गोरे बच्चे खुशी से
नाच रहे थे।
बच्चे जो बडे होकर हत्यारे बनेंगे।

—सलाह सैक्के

पिशाच और प्रकाश

तुम सोचते हो कि तुम्हारी तरह मैं भी पिशाच नहीं हो
सकता ?
तुम सोचते हो कि हाथ मे बन्दूक लेकर
एक नीग्रो की हत्या का बदला, दस गोरो की
हत्या से नही ले सकता ?
भ्रम मे मत रहो। तुम्हारे हर पैशाचिक कृत्य के एवज मे
मैं दस पैशाचिक कृत्य कर सकता हूँ।
मेरी मातृ-भूमि अफ्रीका है काले पिशाचो, प्रेतात्माओ,
अजगरो और खूँखार नर-भक्षको का देश।
लेकिन उस महान् ईश्वर ने मेरी आत्मा का पाप
और अन्धेरा खींच लिया और कहा—
"जाओ! तुम धरती के प्रकाश हो
श्वेत पिशाच के बीच मे जाकर रहो।
तुम्हारा चेहरा रंग कर मैं तुम्हारी परीक्षा लूँगा
दुनिया पूरी तरह पैशाचिक अन्धेरे में डूब जाय,
इसके पहले तुम अपनी आत्मा को दीपक की तरह
प्रकाशित रखना! जाओ निडर होकर जाओ!"

—क्लाड मैक्के

बन्धु मेरे, क्या कहोगे तुम ?

बन्धु आओ ।
और हम तुम चलें उसके सामने
जिसने बनाया है हम ।
जब फरिश्ते करें हमको पेश उनके सामने

तब मैं कहूँगा—
"प्रभु, नही मैंने किसी से की घृणा—
घृणा मुझसे की गयी है—
किसी को कुचला नही मैंने—
मैं स्वय कुचला गया हूँ,
किसी के भी मुल्क पर मैंने नही डाली निगाह,
किन्तु मेरा मुल्क मुझसे छिन गया है ।
किसी की भी कौम से मुझको नही कुछ द्वेष
किन्तु मेरी कौम को क्या क्या नही सहना पडा है ।
सिर्फ इतना कहूँगा मैं,

और प्यारे बन्धु मेरे, क्या कहोगे तुम ?

—ज

१

मृत्यु-गीत

मातम के नक्कारे बजाओ मेरे लिए,
मातम और मौत के नक्कारे बजाओ मेरे लिए
और भीड से कह दो कि मिल कर के मरसिया गाये
ताकि उसकी आवाज मे मेरी हिचकिया डूब जायें।

मौत के नक्कारो के साथ
सिसकते हुए बेले की महीन और दुखी आवाज़—
लेकिन सूरज के सगीत मे परिपूर्ण
शख की एक हुंकार भरी आवाज़ भी हो,
जो मेरे साथ जाये,
उस अँधियारे मृत्युलोक मे
जहा मै जा रहा हूँ।

—लैंग्स्टन ह्यूज़

सपना और दीवाल

बहुत दिन हो गये ।
मैं अपने सपने को लगभग भूल चुका था ।
लेकिन सपना अनश्वर था
मेरे सामने,
झिलमिलाते हुए सूरज की तरह
मेरा सपना ।

और फिर दीवाल उठी,
धीरे-धीरे
मेरे और मेरे सपने के बीच ।
उठती गयी धीरे-धीरे
मेरे सपने की रोशनी को
धुंधला करते हुए,
रोशनी का गला घोटते हुए ।
यहाँ तक कि
आकाश चूमने लगी
वह दीवाल ।

दीवाल की छाया
  में काला हूँ

मैं काली छाया मे कुलबुला रहा हूँ।
मेरे सपनो की रोशनी
न मेरे चारो ओर है,
न मुझ पर आशीर्वाद सी छायी है।
सिर्फ काली पुस्ता दीवार
और उसकी कडवी छाया।

ओ मेरे हाथो!
मेरी काली मजबूत भुजाओ!
तोड दो इस दीवार को,
ढूँढ लाओ मेरे सपने
इस अन्धेरे को चूर-चूर कर दो
इस छाँह को चीर कर फेंक दो,
सूरज की सहस्रो किरणें धधक उठें!
लाल भट्टी की तरह सुलगते हुए
लाखो सपने
पवित्र सूरज के!

—लैंग्स्टन ह्यूज

प्यूर्टोरिको

उदास हवा

कभी कभी हवा उदास हो जाती है
इतनी उदास
कि लगता है
ईश्वर सो गया है
चेतना हीन,
संज्ञाहीन ।

—अलीसिया कार्मेन कदील्या

प्रोलेटेरियट

खच्चर
अपने बोझ से कांपता हुआ
पहाड़ पर चढ रहा है
धीरे-धीरे
(उसके आशा भरे कान शिखर की ओर उठे हैं)

राजगीर
इंट पर इंट चुन रहा है
(वह धीरे-धीरे गुनगुना रहा है)

ईश्वर
मेहनत से नक्शों का निर्माण कर रहा है, एक के बाद एक
(उसका मौन अथाह है)

—लुइस मुनोज़ मारिन

ईश्वर का मुखपत्र

जैसे कोई सिपाही जग लगी हुई तलवार
घुटनो पर रख कर दो टूक कर दे
वैसे ही मैने अपने हृदय पर रखकर
इन्द्रधनुषो को तोड डाला है
मैंने गुलाबी और सुख बादलो को
क्षितिज के पार उडा दिया है
मै अपने सपनो को भूल गया हूँ
ताकि उन सपनो को समझ सकूँ
जो उन लोगो की नसो मे सोये हुए है
जो मेरी चाय जुटाने के लिए
पसीना बहाते हैं, आसू बहाते है।
वे सपने जो तपेदिक से चलनी हुई पसलियो मे हैं
(ज़रा सी हवा—ज़रा सी धूप का सपना)
वे सपने जो भूख से जलती आतो मे निहित है
(रोटी का, सिकी रोटी का एक टुकडा)
नगे पैरो चलने वालो का सपना
(सडक पर कम ककड रहे प्रभु! कम टूटी हुई
बोतलें हो)

खुरदुरे हाथो का सपना
(हरी दूब, चिकने रेशम का सपना)

(प्यार जिन्दगी उल्लास)
इनके लिए मै अपने सपनो को भूल गया हूँ।
मै अब ईश्वर का मुखपत्र हूँ
उसका आन्दोलन-कर्ता
सितारो और नगे भूखो की भीड को
मै ले चल रहा हूँ
नयी सुबह की ओर।

—लुइस मुनोज मारिन

पेरू

प्रभु का सन्देश

पहाडियो की चोटी पर
ऊँचे, जग से काले
तारो से कसे हुए
तार के खम्भे
खडे है,

रेल की खिडकी—
के शीशे गिरे हुए
उनके बीच से मै देख रहा हूँ
ईसा को इन खम्भो पर
कीलो से जड दिया गया है
उसकी दोनो बाहे फैली है।

हाथ और पाँव
से खून बह रहा है
पर वह शान्त है
स्वच्छ पारदर्शी जल की तरह
शान्त !

तार
बिजली से भरे हुए तार
कापते हैं

ग्रामीण प्रणय गीत

उस खोई दोपहर के
जलस्रोतो मे बहकर आया हुआ
यह ग्रामीण प्रणय का गीत है
जब तुम्हारी निगाहो ने
मुझ मे पागलपन धधका दिया था

मेरा पुराना योद्धा हृदय भी
आज किस तरह
धडक रहा है

जस्टिना,
मैं तुम्हारी आत्मा के लिए
लाल फूल और जगली बेरो की अभी तक
रखवाली कर रहा हूँ

जल-कुमुदिनियो की पांखुरियो से बने
एक नये नक्षत्र को
मै जिन्दगी मे खीच लाऊँगा
दिन हमारे चुम्बनो की लाज
से शर्मा जायगा

झनझनाते हैं
उनमे से शब्द दौड रहे हैं
इच्छाएँ आ जा रही हैं।

ईसा रक्त बहने से बेहोश हो रहा है
इनमे से कोई शब्द ऐसा नही
जो उसके काम का हो
इनमे से कोई सन्देश
उसके पवित्र पिता प्रभु का सन्देश नही।

एक अबाबील का छोटा बच्चा
जिसके पखो मे अब भी अण्डे की
सफेदी का स्वाद है
उसे चहक कर बता रहा है
प्रभु का सन्देश
जीवन का मम
जो सारी दुनिया के तार बेतार अपनी समस्त
वैज्ञानिक सकेत ध्वनियो मे नही बता पायेंगे

—एनरीक बुस्तमान्ते बैलीवियन

ग्रामीण प्रणय गीत

उस सोई दोपहर के
जलस्रोतो मे बहकर आया हुआ
यह ग्रामीण प्रणय का गीत है
जब तुम्हारी निगाहो ने
मुझ मे पागलपन धधका दिया था

मेरा पुराना योद्धा हृदय भी
आज किस तरह
धडक रहा है

जस्टिना,
मैं तुम्हारी आत्मा के लिए
लाल फूल और जगली बेरो की अभी तक
रखवाली कर रहा हूँ

जल-कुमुदिनियो की पाखुरियो से बने
एक नये नक्षत्र को
मैं ज़िन्दगी मे खीच लाऊँगा
दिन हमारे चुम्बनो की लाज
से शर्मा जायगा

तुम्हारे होंठो पर तमाम
सुबहें नाचेंगी
एक दूसरे का हाथ पकडे
नदी के पार उतर कर
हम अपने सपनोंके चरागाहो मे भाग जायेगे।

—एमिलियो वास्केज

वर्षा का दोपहर

आज दोपहर को घनघोर बारिश हो रही है
और मेरी प्राण। लगता है जैसे मै अब जीना नही चाहता।

यह दोपहर बडी ही मधुर है, क्यो न हो।
यह पीडा और सौन्दय से आभूपित है एक युवती की तरह।

लिमा मे आज पानी खूब बरस रहा है और मुझे याद
आती हैं

अपनी कृतज्ञताओ की अन्धी गुफाएँ
मेरी बरफीली चट्टानो के नीचे कुचले हुए किसी के फूल—
चट्टानें—जो उसकी प्रार्थना "यह क्या करते हो।" की
परवाह नही करती

मेरे उन्मत्त काले फूल और लगातार बबर ओलो की मार,
और वर्फ का अन्तराल
उसके मौन का सम्भ्रम
जलते हुए दीपको मे अन्तिम प्रहर की कथा अंकित करता है।

और आज इस बरसाती दोपहर को
मेरे साथ सिफ यह दिल है
रहस्यमय उलूक पक्षी की भांति

दूसरी औरतें बगल से गुजर जाती हैं
मुझे इतना उदास देखकर
मेरे दर्द की गहराइयों में से
थोड़ा-थोड़ा कर
तुम्हें अपने साथ ले जाती हैं

आज दोपहर को घनघोर बारिश हो रही है
और मेरे हृदय   अब मैं जीना नहीं चाहता।

—सेसर वाल्येजो

कौन ?

तुम कैसे चले आये, नीहार से,
इस प्रेम विहीन रात की अथाह नीरवता मे
दुखो से मग्न इस रात में
मेरे जीवन के अकेलेपन मे
प्रकाश भर गये

मैं अपने अन्दर खोया था
बाहर की आवाजो की उपेक्षा करता—
अपनी घृणा के गह्वर मे लीन

एक मधुर सी आवाज़
एक निगाह !
और लो—
मेरा पूरा जीवन अन्दर ही अन्दर द्रवित हो गया !

—*जैवियर एमिल*

मनुष्य का रास्ता

मुझे मालूम ही नही हो पाया
कि वह तुम्हारा आकाश था कि मेरा
वह तुम्हारा सपना था या मेरा—
वह तुम्हारा पागलपन था या मेरा

पानी की सतह पर एक आलोक-धारा
सडक की तरह लगती थी
उस पर एक जलयान था
जलयान पर किसी की किस्मत लदी थी—

हवाओ के कुज, धूपछाँह के कुज
नीली वारिश तमाम हृदय की
आत्मा की तरह पवित्र थी

मुझे मालूम नही हो पाया
कि वह समुद्र समुद्र ही था या और कुछ
अगर मैं कहता हूँ कि वह समुद्र है, तो
शायद वह समुद्र नही था
मैं कहूँ कि समुद्र नही था तो निश्चय वह समुद्र ही था!

पता नही कितनी देर यह सपना
दूसरे सपनो से स्थगित रहा

डर

मुझे डर लगता था
अंत में पागलपन से होश मे लौट आया

मुझे डर लगता था
कि मै पहिया न बन जाऊँ
कि मै आकार-हीन रंग न बन जाऊँ
कि मै एक कदम न बन जाऊँ

क्योंकि मेरी आखे शिशु थी
और मेरा दिल
मेरी सदरी का एक
बडा सा बटन मात्र

लेकिन आज तो मेरी निगाहो ने ढीली सलवारें पहन ली ह
अंत मे सडको की ओर देख रहा हूँ
जो आज बढते कदमो के लिए भीख मागने निकल
पडी है।

—कार्लोस आकिंदो द' अमात

डचेस की बिल्लियाँ

डचेस की सफेद बिल्लियाँ
डूबे हुए चाँद से मन्त्रमुग्ध
तनाग्र प्रतिमाओं के पास सिकुड़ी हुई पड़ी हैं

सदा खुले रहने वाले वातायनों में से
उन्मुक्त विलास से थकी हुई रात
हाथ हिलाते हुए विदा हो रही है
क्लान्त धुएं की कुंडलिकाओं सी
वे दृढ़ता से मौन साधे
लम्बी कतार बांधे
आकाशगंगा की तरह
डचेस के सपनों में प्रवेश करती है

प्रातःकाल की किरणों के तीखे दाँत
चमकते सूजों की तरह
डचेस की सुकुमार पलकों पर उतर आते हैं
और शयन मग्ना की पसलियों में
धँसने लगते हैं

सफेद बिल्लियां उस गाढ़ी छाया को अलसाये पंजों से
नोचने लगती हैं
और चीर डालती हैं अँधेरे के मरणासन्न अन्तरालों को,
और धीरे-धीरे डचेस की सुकुमार पलकें खुलती हैं

और तब सौदागरों के कारवाँ के ऊँटों की तरह
पूर्वीय देश की ओर
कतार बाँधे
विचार में डूबी हुई
डचेस की सफेद बिल्लियाँ
बर्फ पर पड़े पग चिह्नों की शृंखला की तरह
शान से अपने रास्ते पर चल देती हैं।

—राफ़ाएल मेन्देज़ दोरिख

फ्रांस

पार्टी के प्रति

मेरी पार्टी ने मुझे निगाहें वापस दी हैं, याददाश्त वापस दी है
मेरा ज्ञान शिशुओ के ज्ञान के बराबर था

कि मेरा खून लाल है और मेरा हृदय फ्रान्सीसी है
मुझे केवल इतना मालूम था—चारो ओर अन्धेरा है
किन्तु मेरी पार्टी ने मुझे आंख खोल कर देखना सिखाया
जो कुछ देखा है उसे याद रखना सिखाया

मेरी पार्टी ने मुझको महाकाव्यो की चेतना प्रदान की
अब मैं देखता हूं जोन को चर्खा कातते और रोलैण्ड को
सीग की तुरही बजाते
वर्कार्स मे, मेरी पार्टी ने महाकाव्य के नायको का युग उतार
दिया
जब सीधे सादे शब्दो मे तलवार की चमक आ गयी

मेरी पार्टी ने मुझे फ्रान्स के राष्ट्रीय चिह्नो के अर्थ बताये
मेरी पार्टी, मेरी पार्टी, मै तुम्हारी शिक्षाओ के लिए किन
शब्दो मे धन्यवाद दूँ
मेरी पार्टी ने मेरे गीतो को नयी जिन्दगी दी
क्रोध और प्यार और सुख और वेदना
सबको सार्थकता दी—

—लुई अरगो

युद्ध के समय का एक गीत

धरती का दरवाजा
एक फूल खटखटा रहा है
माँ की देहरी पर
एक बच्चा खटखटा रहा है

बच्चे के साथ साथ
जन्म लिया है बादल ने, धूप ने
फूल के साथ-साथ फूलते फलते हुए

मुझे सुनाई देते हैं अट्टहास और तक वितक
उन्होने दुख को माप लिया है
कितना दुख एक बच्चा सह सकता है
इतनी ग्लानि बिना के किये हुए
इतने आसू बिना दम तोडे हुए

मेहराबो के नीचे अनजान पगध्वनिया—
काली और भय से परिपूण—
वे आ रहे हैं फूलो को उखाड फेंकने
बच्चे को कलकित करने
दुख से और गहन पीडा से

—पाल इल्यार

जीने का अधिकार, कर्तव्य

और कुछ नही होगा
न भुनभुनाता हुआ कीड़ा
न काँपती हुई पत्ती
न कोई गुर्राता हुआ पशु, बदन चाटता हुआ पशु

न कुछ गम न कुछ कुसुमित
न कुछ तुषाराच्छादित, न उज्ज्वल, न सुगन्धित
न मधुमासी फूल से स्पन्दित कोई छाया
न बर्फ का फर डाले कोई वृक्ष
न चुम्बन से रंजित कपोल
न कोई सन्तुलित पंख, हवा को चीरता पंख
न कोमल मांसल खण्ड, न संगीत भरी बाहु
न कुछ मूल्यहीन, न विजय योग्य, न विनाश योग्य
न बिखरने वाला, न संगठित होनेवाला
अच्छे के लिए, बुरे के लिए
न रात, प्रेम या विश्राम की भुजाओ मे सोई हुई
न एक आवाज़ आश्वासन की, न भावाकुल मुख
न कोई निरावृत उरोज, न फैली हुई हथेली
न अतृप्ति न सन्तोष
न कुछ ठोस न पारदर्शी
न भारी न हलका
न नश्वर न शाश्वत

पर मनुष्य होगा
कोई भी मनुष्य
मै या और कोई
यदि नही तो फिर कुछ नही होगा।

—*पाल इलुयार*

दुर्भिक्ष संस्कृति

"मैं खा रहा हूँ।"
जिसको दुर्भिक्ष ने संस्कार दिये हों

ऐसा बच्चा हमेशा यही जवाब देता है
क्या तुम आ रहे हो—जी, मैं खा रहा हूँ
क्या तुम सो रहे हो—जी, मैं खा रहा हूँ

—पाल इल्यार

तुम्हारे लिए रानी !

मै चिडियो की दूकान पर गया
और चिडिया खरीदी
तुम्हारे लिए रानी !

मैं फूलो की दूकान पर गया
और फूल खरीदे
तुम्हारे लिए रानी !

मैं लोहार की दूकान पर गया
और जजीरें खरीदी
तुम्हारे लिए रानी !

मै उस बाजार मे गया
जहा गुलाम बिकते है
और तुम्हे खोजने लगा
पर तुम तो वहां मिली ही नही
रानी !

—ज़ाक प्रीवर्ट

जन्म

पिटारी मे सफेद चादरें
पलंग पर लाल चादरें
मा मे एक शिशु
प्रसव पीडा मे एक माँ

पिता गलियारे मे
गलियारा घर मे
घर एक नगर मे
नगर अन्धेरे मे
मौत छिपी हुई मा की एक चीख मे
बच्चा—नयी जिन्दगी मे

—जाक प्रीवर्ट

अन्तर्द्वन्द्व

मेरा बाया हाथ मुझे प्राणदण्ड देता है
मेरा दाया हाथ मेरी रक्षा करता है

मेरी आखे मुझे निर्वासन देती हैं
मेरी वाणी मुझे प्रताडित करती है
"अब समय आ गया है कि तुम
अपने साथ सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर कर दो!"

और इस पुराने हृदय मे
हजारो लडाइया लडी जा रही हैं
मेरे शत्रु और मेरे हताश मित्रो के बीच
जो अन्त मे समझौता कर लेंगे।
और ऐसी शान्ति का नया ससार बसायेंगे
जिसमे मेरे लिए कोई स्थान नही होगा!

—अर्ले बारके

काव्य-शिल्प

पक्षी खोल मे, खोल अण्डे मे, अण्डा चट्टान मे,
चट्टान नन्ही उँगली मे, नन्ही उँगली चाँद मे, चाँद शिकारी
कुत्ते मे, शिकारी कुत्ता जलपोत मे, जलपोत जगल मे,
जगल पाउडर के डब्बे मे, पाउडर का डब्बा अँगूठी मे,
अँगूठी बिल्ली के बच्चे मे, बिल्ली का बच्चा
निर्जन द्वीपमे, निर्जन द्वीप सोख्ते मे, सोख्ता खाली
मस्तिष्क मे, और खाली मस्तिष्क—अन्धेरी रात मे ।

—पाल कालिने

हमारे बीच अग्नि

हमारे बीच अग्नि अपने सूक्ष्म हाथ फैलाती है
और प्रगाढ़ रक्त सूरज की तरह धीरे-धीरे उगता है
हम इसी आग पर जीते हैं जो हमारी नसो मे प्रवाहित है
और उस आग से खेलती है जो हमारी क्रीडाओ को
स्थगित करने की चेष्टा करती है।

जब शिशिर मे राते जम जाती हैं तो मुझे अच्छी लगती
है आग
जो इतनी मिलती-जुलती है उन विचारो से जो
तुम्हारी गहरी आंखो की मन स्थितियो से प्रदीप्त होने लगते हैं
जिनकी दृष्टिहीन चितवन मे इस आग मे सुलगते हुए
देखता हूँ जो मेरी रात मे भी आलोकित रहती है

—प्रलाद राय

जयन्ती

अब चूँकि तुमने एक नीहारहीन वसन्त को
एक तुषाराच्छन्न हत्याकाण्ड से सयुक्त कर दिया है—
ऐसा हत्याकाण्ड जो राख होने की यात्रा पर चल चुका
है—तो अन्तरिक्ष पर एकत्रित होती हुई फसल
काटो और उसे उन आशाओ तक ले जाओ जो
उसके जन्म के समय उसके पालने के चारा ओर थी।

दिन अपनी गम निहाई पर तुम्हे अच्छी तरह रक्खे
तुम्हारा मुख तुम्हारे श्वासान्त की घोषणा करता है
तुम्हारे गम अधखुले छत्ते मुक्ति की ओर झपटते है
निश्छलता के फल तक तुम इसीलिए नही पहुँच
पाते कि मौसम की आत्मा तुम्हे रोक रही है।

—*रेने शार*

ताकि कुछ भी परिवर्तित न हो

१

मेरा हाथ थामो और इस काले ज़ीने पर चढ़ना शुरू करो ओ समर्पित, देखो
कि हमारे आदिम अस्तित्व की तृष्णाकुलता धुँआ देने लगी है
और विराट नगर सिर्फ लोहा और दूरागत आवाजें बन गये हैं।

२

हमारी कामना ने समुद्र का गुनगुना आवरण धीरे-धीरे से उतार लिया है—
उसके वक्ष पर तैरने से पहले।

३

तुम्हारी आवाज़ के फूल मे। पक्षियो की उड़ान सूखे मौसम की
हर चिन्ता को हर रही है

४

जब रेखांकित बालू, धरती की धीमी बैलगाडियो से गिरती हुई,
दिशा-स्तम्भ बन जायगी, तब हमारे आगनो मे शान्ति अवतरित होगी।

५

खण्ड मुझे चीर देते है। अत्याचार मुझे तानकर खड़ा कर देता है।

६

अब न आकाश उतना पीला है, न सूरज उतना नीला।
वर्षा का अलसाया सितारा उग आया है। बन्धु,
ओ निष्ठावान, तुम्हारा जुआ उतर गया है। तुम्हारे कन्धो
पर ज्ञान उग आया है

७

सुन्दरता में तुमसे मिलने शीतल एकान्त मे जा रहा हूँ। तुम्हारा
प्रदीप गुलाबी है, हवा झिलमिलाती है। सांझ की देहरी टूट चुकी है

८

मै जो बन्दी हूँ, मैंने पत्थरो पर फैलने वाली लता का—
धैर्य ग्रहण किया है—अनन्त अज्ञान की चट्टान को जोतने के लिए

९

"मै तुम्ह प्यार करती हूँ" हवा कहती है उन सबो से जिन्हे वह छूती है।

मै तुम्हे प्यार करता हूँ और तुम
मुझमे जीवित हो

—रेने शार

बहती हिमशिलाएँ

बहती हिमशिलाएँ, बिना बारजे के, बिना पच्चीकारी के–जिस पर
उदास बूढे जलपक्षी और सद्य मृत जहाजियो की
भटकती आत्माएँ उत्तरी ध्रुव की जादूगरनी रातो को
झाक कर अपलक देखने आते है

बहती हिम शिलाएँ, हिम शिलाएँ, निरवधि शिशिर के लामजहब
मन्दिर
धरा नक्षत्र के बर्फीले छत्रो से मण्डित

कितने ऊँचे, कितने पवित्र है तुम्हारे ठण्डे ढलान

बहती हिमशिलाएँ, हिमशिलाएँ, उत्तरी अतलान्तक के कगारे,
अकल्पित समुद्रो पर जमी हुई गौरवमयी बुद्ध-प्रतिमाएँ दुर्निवार
मृत्यु के चमकते प्रकाशस्तम्भ, शताब्दियो के मौन से फूटा हुआ
क्रन्दन

बहती हिमशिलाएँ, हिमशिलाएँ निष्काम एकाकी साधक,
श्वासरुद्ध देशो मे, सुदूर कृमिकीटो से मुक्त । द्वीपो के
जनक, जलछटाओ के जनक, मैं तुम्हे देखते ही
कितनी अन्तरंगता से जान लेता हूँ ।

—अरी मिशो

निर्वसना तुम होगी

निवसना तुम होगी कक्ष मे प्राचीन वस्तुओ के बीच
पतली लम्बी, उजाले की वसी की तरह
गुलाबी आग के सम्मुख घुटने समेटे
तुम जाडे का मन्द ममर सुनोगी

तुम्हारे चरणो के निकट मै, तुम्हारे घुटने अपनी अजलियो
मे सहेजे,
तुम्हारी सलज मुस्कान, लतरको टहनियो से भी मन्द, अनुकूल
मेरी माथे की लटें तुम्हारी जघाओ पर बिखरी
और मेरी आँखो मे आसू कि आह तुम
कितनी अच्छी हो

अच्छा लगेगा हम दोनो का एक दूसरे पर अभिमान करना
और मै तुम्हारे कण्ठ को आहिस्ते से चूम लूँगा और तुम
मेरी पलको को, और तुम मेरी ओर देखकर मुस्का दोगी
अपनी सुकुँवार गर्दन को जरा सा मोडकर

और जब बूढा नौकर स्वामिभक्त और बीमार सा,
द्वार पर दस्तक देगा—कहेगा "खाना तैयार है !",
तुम चौक जाओगी, लजा जाओगी और अपनी पतली बाहे
लहरा कर अपने भूरे वस्त्र सम्हाल लोगी

और जब तक हवा दरवाजे मे से आये
और पुरानी बेमरम्मत घडी गलत वक्त के घण्टे बजाये
तुम अपने पाव—हाथी दात के सुगन्ध बसे,
काले आच्छादनो मे वापस छिपा लोगी

—फ्रासी जैम

ब्राजील

प्रार्थना

तू महान् है
तेरी महिमा अपरम्पार है
इसलिए नही कि तेरी माया से
दिन को सूरज चमकता है और रात को सितारे

इसलिए नही कि तूने ससार बनाया
उसका वैभव बनाया—फसलें-फूल-सिनेमा-रेलें
इसलिए नही कि तूने समुद्र बनाया
उसका वैभव बनाया—मछलिया, पौधे, पनडुब्बियाँ
और जलपरियाँ !

मै तुझे इसलिए महान् मानता हूँ
कि तू अपने को छोटा बना लेता है
इतना छोटा कि मै दुबल और भाग्यहीन
अपने मे तुझे स्थित पाता हूँ

—म्यूरिएल मेद

रहस्यमय पक्षी

किसी को नही मालूम था कि
यह रहस्यमय पक्षी कहा से आया
सम्भवत किसी खाडी या किसी अज्ञात द्वीप से
पिछला तूफान इसे उठा लिया था

या यह समुद्री सिवारो के घने कुजो मे पैदा हुआ था
या किसी दूसरे नक्षत्र से, वातावरण से, दूसरे लोक से
टपक पडा

बूढे मल्लाहो ने भी कभी
बर्फ से ढके समुद्रो मे इसे नही देखा
न किसी यात्री को यह कही मिला
इसका रूप रग आदमियो का सा था, देवताओ का सा
और कवियो की तरह खोया खोया रहता था
पहले यह मन्दिरो के गुम्बदो के पास मँडराया करता था

पर पुरोहितो ने इसे अशकुन समझ कर उडा दिया
उसी रात को यह एक प्रकाश-स्तम्भ पर जा बैठा
पर रखवारे ने इसे उडा दिया
कि कही जहाज राह न भूलने लगें
किसी ने इसे मुट्ठी भर दाना नही दिया
न आश्रय दिया

एक ने कहा—"यह नरभक्षी पक्षी है जो भेडो को
खा जाता है।"

दूसरे ने कहा—"यह भूखा प्रेत है"
जब वह उनीदे बच्चो पर
अपने पखो की छाँह कर देता
तो माताएँ खुद पत्थर मार कर इस रहस्यमय
अभागे अनाश्रित पक्षी को उडा देती थी

शायद यह पक्षी बादलो के बीच छिपे
किसी पवत की गुफा से उडता भटकता आ गया था
या उसका सगी तीर से घायल हो चुका था—
यह पक्षी रूप रग मे मानव की तरह था, देवदूतो की तरह
और कवि की तरह एकाकी
वह लोगो मे घुलना मिलना चाहता था
पर लोग उसे अशुभ समझ कर उडा देते थे

जब सदा की तरह गेहूँ के खेत बाढ मे डूब गये
तो लोगो ने कहा—"बाढ इसके कारण आयी है।"
जब सदा की तरह अकाल मे ढोर ढगर मरने लगे
तो लोगो ने कहा—"यह पक्षी पशुओ को खा जाता है।"

और चूँकि किसी ने उसे एक बूँद पानी
नही पीने दिया
तो वह पक्षी मुर्दा विद्रोही सैम्सन की तरह
गिर पडा

तब एक भोला भाला मछुआ उसके

कोमल पखो को समेट कर उसे उठा लाया
बोला—"यह उस पवित्र पक्षी का शव है"
कोई बोला—"यही पक्षी तो
साधु सन्तो की गुफाओ मे फल रख आया करता था।"
एक भिखारी ने बताया "एक बार जाडे की रात मे
इस पक्षी ने अपने पखो से उसे गरमाहट दी।"

और देश की जनता के राजनीतिक नेता ने कहा
है—"यह पक्षियो का राजा था
और मै इसे जानता ही नही था।"
किन्तु राजनीतिक नेता के सबसे छोटे लडके ने कहा—
"वह एकाकी, भावुक, चिन्ताशील और विनम्र था
इसके पख मुझे दो कि मै उससे अपनी ज़िन्दगी के बारे
मे लिखूँ।

जो बजाय मेरे पिता की जिन्दगी के
इस पक्षी की ज़िन्दगी से बहुत मिलती जुलती है
मै इस पक्षी मे अपने को देखता हूँ।"

—जार्ज देलिमा

जान काका

जान काका उखडे पेड की तरह झुके थे
जान काका अपनी आखिरी साँसें गिन रहे हैं
जान काका नाव चलाते थे
हल चलाते थे

धरती से हरी वनस्पतियो की दौलत उगाते थे
कहवा, गन्ना, कपास !
जान काका ने धरती से हीरे निकाले थे
ताजे रसीले मीठे फलो वाले हीरे
जान काका की बेटी
मेम साहब के बच्चो को दूध पिलाती थी
धीरे-धीरे उसका स्तन निचुड गया
वह भी सूख गयी
जान काका की चमडी हमेशा कोडो से उधडी रहती थी !
जान काका की ताकत हमेशा, हल और हँसियो की मूठ मे
लगी रहती थी

गोरो ने जान काका की पत्नी को छीन लिया था
बच्चो को पालने-पोसने के लिए
जान काका का रक्त मेम साहब के उच्च रक्त मे मिलता था
जैसे भूरा गुड सफेद दूध मे घुल जाय

मेम साहब के बच्चे जान काका को
घोड़ा बनाते थे

जान काका को ऐसी अनोखी कहानियां
आती थीं कि लोग सुनते-सुनते रो पड़े

जान काका आखिरी सांसें गिन रहे हैं
बाहर रात इतनी काली है जैसे जान काका का चमड़ा
आकाश के सभी तारे गायब हैं
कहीं जान काका ने जादू तो नहीं कर दिया
जान काका जादू भी जानते थे

—*जार्ज देलिमा*

शैशव

मेरे पिता अपने घोड़े पर चढ़े और गाँव की ओर चले गये
मेरी माता घर रही, अपनी कुर्सी पर बैठ कर सिलाई कढ़ाई
करती रही।

मेरा छोटा भाई सोता रहा
मै, एक अकेला बच्चा आम के नीचे लेटा
राबिन्सन क्रूसो की कहानी पढता रहा
एक लम्बी कभी न समाप्त होनेवाली कथा।

जो लोरिया गाकर सुनाती रही और
आज तक दिमाग मे तरोताजा है
ऐसी एक आवाज, दोपहर की उजली धूप मे
हमे कॉफी पीने बुलाती है—
उसी नीग्रो दासी की भाति काली कॉफी
तुश कॉफी
अच्छी कॉफी

मां बैठी सी रही थी
मेरी ओर देखते हुए
'चुप, बच्चे को जगाओ मत।'
एक मच्छर पालने पर बैठ गया
मा गहरी नि श्वास लेती हुई

दूर कहो मेरे पिता खेतो और
जगलो मे खोज करते घूम रहे है
और मैं ?
मै क्या जानता था कि
खुद मेरी कहानी राबिन्सन क्रूसो की कहानी से
कही ज्यादा दिलचस्प है

—कार्लोस द्रमन्द द अन्द्रादे

कल्पनाएँ

तूतिया की तरह नीला आसमान
चांद व्यंग से हँसता हुआ
दिन का मलीन निष्प्रभ चाद
खाने के कमरे मे टँगे
एक छापे की तस्वीर-सा

संरक्षक देवदूत रात को पहरेदारी कर रहे हैं
कैशोरावस्था मे सपनो की देखभाल कर रहे हैं
पलंग के फूलो और परदो पर से
मच्छडो को उडा देते हैं

गोल सीधी सीढियो पर
कहते हैं अल्हड लडकियाँ
आकाशगगा के झीने वस्त्र पहने
रुपहले जुगनुओ की तरह चमकती हैं

एक दरार मे से शैतान
मिचमिची आँखो से झाक रहा है

उसके हाथ मे दूरबीन है जिससे
वह सात योजन तक देखता है
उसके कान सितार की खूँटियो की तरह
सुडौल हैं ।

सन्त पीटर सो रहा है
स्वग की घडी अनवरत रूप से खर्राटे भर रही है
शैतान एक दरार मे से झाँकता है

नीचे
कुचले हुए होठ आह भरते हैं, कापते हैं
क्या वे प्राथना कर रहे हैं
वे प्रेम पीडित हैं
उलझी हुई बाहे और प्रगाढ रूप से उलझ जाती हैं
प्रेम प्रेम पर छा जाता है

ईश्वर की इच्छा पूरी होगी।
दो एक चाहे रह जायें
बाकी सब जहन्नुम रवाना किये जा रहे हैं।

—कार्लास द्रमन्द अन्द्रा द

आधी रात

आधी रात
लालटेन के पास
बिस्तुइया पतिंगो को खा रही है

गली मे कोई नही आ जा रहा है
नशे मे चूर शराबी भी नही

फिर भी परछाइयो की एक कतार चल रही है
उन सबो की परछाइयाँ जो इधर से गुजरे हैं
वे सब जो अभी जिन्दा हैं या मर चुके ह

नदी अपने किनारो पर सर रखकर रो रही है
रात कुछ कह रही है ।
(यह रात नही—वह जो इससे भी बडी असीम रात है)

—मा'युएल बान्देरा

जगलों का गीत

ये हवाओं में कापते हुए जगल है
झूम रहे है, चाहे झकझोर रहे हैं
इस सिरे से उस सिरे तक
आज जगल कुछ बोलना चाहते हैं

और वह चीखते हैं, सिसकते है, सिर धुनते हैं,
जैसे किसी दु खान्त नाटक की कोई अभिनेत्री ।
हर विद्रोही शाख मे वही तडप है
हरेक मे वही छिपा हुआ भय
या वे शायद कोई चीज माँग रहे है
कौन-सी है वह चीज ?

इन जगलो मे भी चेतना है ? वे क्या माग रहे हैं
क्या वे पानी माग रहे हैं,
किन्तु अभी तो पानी का सैलाब आया था
जिसने पूरे जगल को झकझोर दिया था
सैकडो पेड उखाड दिये थे, निभयता से
क्या वे युगो पुराने कूडे को भस्म कर देने के लिए
पवित्र आग की माग पेश कर रहे थे
या वे कुछ माग नही रहे है
केवल बोलना चाहते हैं
और बोल नही पाते ।

क्या उन्होने अपनी सुकुमार जडो के कानो से
धरती की पर्तों मे छिपा कोई भेद पा लिया है
ये जगल हवाओ मे काँप रहे हैं, झूम रहे हैं
तडप रहे हैं,
ये जगल किसी सन्निपात-ग्रस्त जनता की भीड की तरह है।

सिर्फ छोटे सुकुमार बाँसो का एक
छोटा-सा कुज अलग खडा
धीमे धीमे झूम रहा है
जैसे इस जनव्यापी पागलपन पर मुसकरा रहा हो

—मा'युएल बान्देरा

ब्राज़ील का गीत

यह स्वच्छ धूप—
खामोश खजूर
चमकती चट्टानो
जगमगाहटो
ज्योति-रेखाओ
प्रकाश स्फुलिंगो—की घडी है
मैं विशाल ब्राजील का सगीत सुन रहा हूँ

मैं सुन रहा हूँ—इगुआस्सू के गरजते हुए घोडे नग्न चट्टानो को कुचल रहे हैं,
आर्द्र झोको मे नाच रहे हैं, भीगे खुरो से फेन और हरे-भरे सगीतवाली
सुबह को चीरने बढ रहे हैं

मैं तेरा गम्भीर स्वर सुन रहा हूँ, तेरा खूँख्वार और गम्भीर स्वर, ओ अमेजन नदी !
तेरे अलसाये सैलाब, तेल की तरह गाढे, क्षण प्रतिक्षण विस्तार तोडते
हुए, किनारो से कीचड निगलते हुए, सदियो पुराने पेडो की
जडें उखाड फेंकते हुए, द्वीपो को बहाकर खीच ले जाते हुए और

समुद्र को पागल भमे की तरह शहतीरो तना शाखो और
झाडियो से मथते हुए

मैं सुन रहा हूँ पछुवा हवाओ मे धरती को चिटखते हुए, धरती
जो खानाबदोशो के
नगे धूलभरे पाँवो के नीचे हाफने लगती है, धरती जो धूल
बनकर
खामोश बादलो के झझावात के रूप मे जो ज़ीरो की सडको
पर
सर धुनती घूमती है, क्रेटो के सूखे मैदानो मे धूल बनकर
बिछ जाती है ।
मैं वन कान्तार का विहग रव सुन रहा हूँ । अलापे, तान, चह-
चहाहट, चमक,
कूक, केका, चोचो की कटकटाहट मोटे तारो की तरह
गम्भीर झकार वाली
ध्वनिया, ढोल की गमक, ककश गला का स्वर, पखो की
फडफडाहट
झिंगिलयो की झकार, फुसफुसाहट, सपनोली पुकारे,
लम्बी दोहरी
पुकारें—आकाश के नीचे घने जगल ।

मैं पानी के चश्मो को हँसते हुए सुनता हूँ लालची मछलियो को
गुमराह
करते हुए, पानी के नीचे छिपी चट्टानो की दरारो मे मछलियो
के आश्रयो को कुरेदते हुए जल की कलकल ध्वनि ।

मै सुनता हूँ गन्ने पेरते हुए कोल्हुओ की चूँ रूँ रूँ, कडाह मे
गिरते हुए मीठे

रस की मीठी ध्वनि, रबड वृक्षो के बीच बालटियोकी
खटर पटर
और राहे बनाती हुई कुल्हाडियाँ
और शहतीरें चीरते हुए आरे
और दलदलो मे सोते हुए घडियालो को देखकर दात
किटकिटाने
वाले पेक्ककारियो की आवाज

मै सुनता हूँ सारे ब्राजील को गाते हुए, बोलते हुए, पुकारते हुए
झूमती हुई साडिया
चीखते हुए भोपूँ
खडखडाती, हाफती, चीखती, गरजती हुई मिलें
विस्फोट होती हुई नलिया,
घूमते हुए क्रेन,
चलते हुए पहिये
भागती हुई रेलें,
घाटियो और पठारो की आवाज,
गाय बैलो की घण्टिया,
घोडो की हिनहिनाहट,
चरवाहो के गीत,
घण्टो की घनघनाहट,
सट्टे के बाजारो की चीख पुकार,
तोतों की तरह नम्बरो की रटन,
गगनचुम्बी अट्टालिकाओ के नीचे
सडको का शोर शराबा,
उन विभिन्न जाति के लोगो की भाषाएँ
जिन्हे बन्दरगाहो की समुद्री हवा
जगलो की ओर बहा लाती है—

इस पवित्र धूप की घडी मे मैं ब्राज़ील का गीत सुन रहा हूँ
ब्राज़ील के समस्त वार्तालाप हवाओ मे उड रहे है
कहवा की झाडियो के पास किसानो की बातचीत
सोने की खानो मे मजदूरो की बातचीत
फौलाद की भट्टियो मे श्रमिको की बाते
देहाती घरो के दालानो मे सैनिक अफसरो की बातचीत
लेकिन इन सबो से ज्यादा स्पष्ट जो मुझे सुनाई पड रहा है
इस पवित्र धूप—
खामोश खजूर
चमकती चट्टानो
जगमगाहटो
ज्योति रेखाओ
प्रकाश स्फुलिगो के कण मे
वह है ओ ब्राज़ील ! तेरे पालनो के पास गायी जाने वाली
लोरियो का स्वर
तेरे अनगिनत पालने, जिनम दुधमुँहे भोले भाले सरल बच्चे
सो रहे है !
कल आने वाली पीढी के लोग !

—रोनाल्द द कारवैल्यो

मैक्सिको

दोपहर–जाडे की

दोपहर—खिडकियो के परदो का उठा देना
चमकते हुए आगन का भी खूबसूरत कमरे-सा लगना
धूप मे सेब—लाल सेब की गर्म महक
और छोटी छोटी छते   ऐसी बातें जो प्यार जगाये

शीशे के गिलास मे ठण्डे पानी से गला सीचना
और गिलास मे उस स्नेह-भरे कमरे मे उडते हुए
छोटे छोटे देवदूतो की छाया देखना
नाशपाती को छूकर धरती की गोलाई का अनुमान करना
यह सोचना कि कुछ बदल जाता है
फिर भी पता नही क्या बात है कुछ भी नही बदलता

अन्त मे एक परिपक्व दृष्टि
जो सभी उलझनो मे मूल सूत्र पहचान लेती है
मूल सूत्र है सहज जीवन की साधारण बातें
रोटी, शहद, धूप, गीत
मूल तत्त्व है—सहज-मन वाला आदमी
जो गुलाब की पाँखुरियो को तोडता हुआ
मेजपोश पर नाखूनो से किसी का नाम लिखता है।
जाडे की दोपहर मे।

—*हेम तारेंस बोदो*

अँगूठा

ओह कौन उसे निकालेगा
इस कुँए में मेरी अँगूठी गिर गयी है
एक दिन शाम को।

उस पर दो ही तो अक्षर लिखे थे
मैंने उसे भी खो दिया
मैंने अपने गीत और अपने आँसू खो दिये
मैंने अपनी किस्मत खो दी—
अब कुँए की जगत पर सुबह शाम
चक्कर लगाने से क्या फायदा

मेरी अँगूठी मेरी सहेली थी
उसे कोई ला दो। मुझसे चाहे कुछ ले लो
अगर एक शाम के लिए
वह मेरी अँगुली में फिर आ जाय
तो मैं उससे कितनी बातें बताऊं
यूँ तो वह चाँदी की ही थी
लेकिन वह मेरी पहली ही अँ
उसका दाम कोई मुझसे पूछे

उस अँगूठी को हुआ क्या था
मालूम की अतल

छिपे हुए काले दर्पण में वह
अपना रूप देखने को ललचा उठी थी
या लहरों में बनती मिटती परछाइयों में
उसने अपने भविष्य को पहचान लिया था
या गहराइयों से उठती हुई किसी प्रतिध्वनि की
आह ने उसका हृदय छू लिया था
उसे कोई ला दो मुझ से चाहे कुछ ले लो !
ओ नीचे तैरने वाले कछुए
अपनी पीठ पर रख कर मेरी अँगूठी ऊपर ला दोगे ?
हा, मेरी अँगूठी—
एक शाम को इसी कुँए में गिर गयी थी !

—एनारो एस्त्रादा

निशा-गुलाब

एक रात को। कोहरे भरी रात को
मेरी खिड़की के पास एक गुलाब खिला
सफेद स्वच्छ हिम-सी पाखुरियाँ और रात भर वह खिलता रहा
मेरी निगाहों के आगे।

लेकिन सुबह हुई कि वह आसू की तरह पिघल कर गिर
गया—खो गया।

फिर एक गुलाब खिला—सगीत का—
बर्फ की तरह धीरे-धीरे मेरी आत्मा पर गिरता रहा
लेकिन सहसा सुबह होते-होते दर्द भरी नीरवता मे
खोखली छाया मे, क्रूर मूर्च्छना और अज्ञात भय मे बदल
गया।

अन्त मे मेरे स्वप्न मे एक गुलाब खिला—प्यार का—
उल्लास मे उसकी जड़ें थी मुस्कानो की पाखुरिया थी
लेकिन ज्यो ही मेरी आँख खुली

वह ध्वस्त उपवन मे दूसरे मुरझाये फूलो की तरह
मुरझा कर गिर गया—
कहते हैं जो प्यार करता है उसे हमेशा झूठे सपनो की फसल
काटनी पड़ती है।

—राफ़ाएल सोलाना

मैं अभी तुम्हे जानता भी नही

मैं अभी तुम्हे ठीक से जानता भी नही
पर अभी ही मन मे सोच रहा हूँ
क्या तुम कभी न समझोगी कि तुम्हारा व्यक्तित्व
मेरे खून मे सोयी हुई लपटो को किस तरह धधका देता है।

जाने कब तक प्रतीक्षा करनी होगी—
थोडे दिन — बहुत दिन
ओह सभी दिन एक से लगते है
अनन्त महासागर से लम्बे अथाह—
और धैय हममे से भला किसे है ?

मै अभी तुम्हे ठीक से जान भी नही पाया हूँ
लेकिन अभी ही शहर, बादल, प्राकृतिक दृश्य,
यात्राएँ सभी की छाप मेरे मन पर से मिट गयी है
और आश्चय से मै देखता हूँ कि
मै अभी भी एक पत्थर मे कैद हूँ
और आसमान मे एक भी बादल नही है।

कैसे ये शब्द पुननूतन बनेगे, जब कि
अभी जब मैं तुम्हारे पास हूँ ये चले जा रहे हैं
और तुम्हारी हथेलियो के उभार मे
अनन्त दिशाओ का विस्तार
दिखा रहे हैं।

—कार्लो पेलिसर

निशा-गुलाब

एक रात को ! कोहरे भरी रात को
मेरी खिड़की के पास एक गुलाब खिला
सफेद स्वच्छ हिम-सी पाँखुरियाँ और रात भर वह खिलता रहा
मेरी निगाहो के आगे ।

लेकिन सुबह हुई कि वह आँसू की तरह पिघल कर गिर गया—खो गया ।

फिर एक गुलाब खिला—संगीत का—
बर्फ की तरह धीरे-धीरे मेरी आत्मा पर गिरता रहा
लेकिन सहसा सुबह होते होते दर्द भरी नीरवता मे
खोखली छाया मे, क्रूर मूर्च्छना और अज्ञात भय मे बदल गया ।

अन्त मे मेरे स्वप्न मे एक गुलाब खिला—प्यार का—
उल्लास मे उसकी जड़ें थी मुस्कानो की पाँखुरियां थी
लेकिन ज्यो ही मेरी आंख खुली

वह ध्वस्त उपवन मे दूसरे मुरझाये फूलो की तरह
मुरझा कर गिर गया—
कहते है जो प्यार करता है उसे हमेशा झूठे सपनो की फसल काटनी पड़ती है ।

—राफ़ाएल सोलाना

मैं अभी तुम्हे जानता भी नही

मैं अभी तुम्हे ठीक से जानता भी नही
पर अभी ही मन मे सोच रहा हूँ
क्या तुम कभी न समझोगी कि तुम्हारा व्यक्तित्व
मेरे खून मे सोयी हुई लपटो को किस तरह धधका देता है।

जाने कब तक प्रतीक्षा करनी होगी—
थोडे दिन – बहुत दिन
ओह सभी दिन एक से लगते है
अनन्त महासागर से लम्बे अथाह—
और धैर्य हममे से भला किसे है ?

मैं अभी तुम्हे ठीक से जान भी नही पाया हूँ
लेकिन अभी ही शहर, बादल, प्राकृतिक दृश्य,
यात्राएँ सभी की छाप मेरे मन पर से मिट गयी है
और आश्चय से मैं देखता हूँ कि
मैं अभी भी एक पत्थर मे कैद हूँ
और आसमान मे एक भी बादल नही है।

कैसे ये शब्द पुनर्नूतन बनेंगे, जब कि
अभी जब मैं तुम्हारे पास हूँ ये चले जा रहे हैं
और तुम्हारी हथेलियो के उभार मे
अनन्त दिशाओ का विस्तार
दिखा रहे हैं।

—कार्लो पेलिसर

रात्रि-गीत

रात क्या है ?
विशाल काले पखो का शिथिल आक्रमण
उसकी गोद मे अखिल सृष्टि कांपती है
सभी प्राणी अपने व्यक्तित्व की सीमाओ मे

आबद्ध कांपते है और अपने को खो देते है
और पराजित क्षणो की तेज धार मे
बह जाते है

ओ रुकी हुई हवा, ओ खामोश डाल
ओ अनन्त झील ! नीरव, नींद मे चलती हुई !
आकाश मे मिलन के मधुर सपनो मे डूबी हु[illegible]ओ

ओ आदमी की नसो मे बहता हुआ गाढ़ा [illegible]
जिससे बाहर छलक आने को रात मचल [illegible]

और ओ आदम[illegible] आदमी मे
जहाँ मे गमी गु[illegible] उठती

आत्मलीन

आँखें बन्द कर लो प्राण !
और पलकों की घनी गुलाबी छाँह में
अपने को अँधेरे में खो जाने दो

तुम्हें महसूस होगा कि
बन्द गुफाओं में छिपे हुए झरने की तरह
यह दिल की धड़कन है
वहाँ, बहुत दूर पर सैकड़ों प्रच्छन्न आवाजें
वृत्त बनाती हुई लगातार, गूँजती हुई
गिर रही हैं

अपने अस्तित्व को अँधेरे में डुबो दो
अपनी मांसलता में
अपने हृदय में अपने को डुबो दो
तुम्हारी हड्डियाँ जमी हुई बिजलियों की तरह—
तुम्हारी टेढ़ी तिरछी हड्डियाँ—
तुम्हें चकाचौंध कर देंगी ! बेहोश कर देंगी
ये हड्डियों का फासफोरस
अन्धकार की गहराई में
धना की तरह तैरता है !

नींद में

रात्रि-गीत

रात क्या है ?
विशाल काले पखो का शिथिल आक्रमण
उसकी गोद मे अखिल सृष्टि काँपती है
सभी प्राणो अपने व्यक्तित्व की सीमाओ मे

आबद्ध कापते है और अपने को खो देते है
और पराजित क्षणो की तेज धार मे
बह जाते ह

ओ रुकी हुई हवा, ओ खामोश डाल
ओ अनन्त झील ! नीरव, नीद मे चलती हुई !
आकाश से मिलन के मधुर सपनो मे डूबी हुई धरती

ओ आदमी की नसो मे बहता हुआ गाढा काला खून
जिसके बाहर छलक आने को रात कहते हैं

और ओ आदमी—नीद मे डूबे आदमी की गम करवट
जहाँ से नयी सुबह अँगडाई लेकर उठती है ।

—आक्टावियो पाज़

आत्मलीन

आंखें बन्द कर लो प्राण !
और पलकों की घनी गुलाबी छांह में
अपने को अंधेरे में खो जाने दो

तुम्हें महसूस होगा कि
बन्द गुफाओं में छिपे हुए झरने की तरह
यह दिल की धड़कन है
वहां, बहुत दूर पर सैकड़ों प्रच्छन्न आवाजें
वृत्त बनाती हुई लगातार, गूंजती हुई
गिर रही हैं

अपने अस्तित्व को अंधेरे में डुबो दो
अपनी मांसलता में
अपने हृदय में अपने को डुबो दो
तुम्हारी हड्डियां जमी हुई बिजलियों की तरह—
तुम्हारी टेढ़ी तिरछी हड्डियां—
तुम्हें चकाचौंध कर देंगी ! बेहोश कर देंगी
तुम्हारी हड्डियों का फासफोरस
शरीर के अन्धकार की गहराई में
जलती हुई प्रवंचना की तरह तैरता है !

उस पिघली हुई शीतल नींद में

अपने सारे आवरण उतार फेंको प्राण
तुम्हारा व्यक्तित्व क्या है
महज किसी विराट महासागर द्वारा
किसी तट पर फेंकी गयी फेन प्रतिमा मात्र
ओ अनन्त नारी अपने अनन्त अस्तित्व में अपने को लीन
कर दो

एक सागर दूसरे सागर में विलीन हो जायगा
अपने को भूल जाओ, मुझको भूल जाओ
उस अनन्त समाधि में
सारी चीजों का—चाहे वह होंठ हो
या चुम्बन या प्यार
सभी का कायाकल्प हो जाता है
जैसे रात का दद तारे बनकर
चमक उठता है।

—आक्टावियो पाज़

घिरा हुआ उद्यान

पुराने जर्जर मकान सा मेरा अपना प्रतीक्षारत मन
जिस पर दस्तक दे रही है बार बार

—आवाजें जो हुआ करती थी
आत्माएँ जो कभी जन्मी ही नही
भविष्य से या विस्मृत अतीत से आती हुई

प्यार की पहली रात की साकेतिक आवाजें,
पुराना पडा हुआ गीत चाँदनी रात मे
तमाम जिन्दगी व्यर्थ खोजा हुआ अनपाया लक्ष्य

अब पहचान पाया इस आगन्तुक को एक जमाना था जब
इस आवाज से एक आवेग जाग उठता था—जिसे जिन्दगी
सुसस्कृत सकोच से आज दबा ले जाती है

आत्मा अब खामोश हो गयी है, बन्द कर लिया है उसने
अपना कक्ष, जला लिया है शाम का दिया
और अब अन्दर से कोई जवाब नही आता

—एनरीक गोंजालेज मार्टिनेज़

द्वीप

मैं अपने मे झाँकता हूँ
अपने ही कदमो के जीने से
अपने मे गहरे उतर कर
पाता हूँ समय का पीला चेहरा
गुजरी घडियो की झुरिया
और एक दीघ अन्ध-अन्तराल—अस्तित्व और विस्मरण के बीच।

उठी, मगर निष्क्रिय तलवारो के हरे मैदान पर
सूरज और चट्टान के बीच
भूरी खाल के नीचे के कौधते प्रकाश की ओर
मै पुराने रोमाचो की गुफा मे से उतरता हूँ

१

मुझे मिलता है एक शिशु कभी कभी ,
एक अबोध शिशु अपनी जिज्ञासाओ के सलीब पर टँगा,
रहस्य और पीडा के बन्दरगाह मे लगर डाले
छोटे नये जहाज की तरह

धुँधले कोहरे मे से स्मृति
उभर कर कहती है
"हाँ उदास होने की बात है, हाँ
पर तुम्हारी बिल्ली अब भी उतनी ही प्यारी

जमुहाइयाँ ले रही है
और तुम्हारी जगलो और समुद्रो की
सुकुँवार नायिका अब भी डाकुओ के चगुल मे है
"उदासी की बात है, हाँ
पर अब भी वह आद्रता और उल्लास की जडी
कुँए की जगत पर उगी मूल रही है
पृथ्वी से सवालात पूछती हुई
और हेमन्त के अपराह्लो मे मुर्झाकर सूखती हुई।
"हाँ, उदासी की बात है,
पर पुस्तको के पृष्ठ, सब काल्पनिक और प्रत्युत्पन्न
दद से भरे हुए है
और तुश फल झड कर सड गये हैं
"शायद उदासी की बात है
लेकिन सबका सब्र रहता है, बाट जोहता है और बना
रहता है।"

२

स्वर्ग और नरक के बीच के ढूह की ओर
चट्टान को
अन्धे जल से, उसकी गोलक हीन अपलक दृष्टि से
छेदते हुए
उसकी अन्धी दूरियो की धधकती लपटो से
छेदते हुए
विशाल सुरग, खडी, अभेद्य।
कटी डालियाँ और अँधेरे के गह्वरो
के घेरे के पार
तुम हो अपनी मुसकानयुक्त
अर्द्धपारदर्शी छाया,

तुम हो अपनी कथा कहानियो वाले वातावरण के साथ
फुदकती तितलियो और रोशनियो के साथ
अपनी दिव्य विश्राम मुद्रा
की खामोशी मे

३

मैं समर्थन खोजना चाहता हूँ
सुबह को स्थापित करना चाहता हूँ
मैं पाना चाहता हूँ वह जीवन जिसने मुझे जिस्म दिया है
यह आकार
यह सुकुमार हल
यह यातना

मैं चाहता हूँ धरती मेरे चारो ओर लिपट जाय
मैं चाहता हूँ एक गहन धातु
सदा सजीव उद्दीप्त
चरण चिह्नो की शृखला मेरे पीछे।

इसके लिए मै सवाल पेश करता हूँ अपनी नयी अन्तरात्मा से
अपनी आदिम स्मृति से
मैं अपने बाबत पूछता हूँ उस डूबे बच्चे से
उस मौन की सुरग के अथाह जल को मथते हुए
मै पूछता हूँ उस छाया से
मैं पूछता हूँ
अलसायी धाराओ, खामोश मैदानो, उसमे उगी निष्क्रिय
तलवारो के बाबत।
और अस्तित्व और विस्मरण के उस अनन्त अन्तराल में
उम्र के धुँधले उत्खनन के बाद

निकलता है कुछ नहो
सिवा समय का पीला बीमार चेहरा
कुछ नही
सिवा विस्मरण ।

—गिलबर्ती एल० कैण्टान

वेनेज़ुएला

वेनेजुएला

मासल-सगीत

एक सावले सितार की तरह
तुम्हारे निरावरण सावले तन के सगीत को मै पो चुका
तुम्हारी अलकें काली थी, रेशमी थी
काली—मगर शोक सूचक नही
चाँदनी जैसे दातो से
मैने तुम्हारे शरीर के सगीत की सबसे परिपक्व
उठान को चिह्नित कर दिया—
हम चाँद की दूधिया परछाइयो मे
नहाये हुए थे—

तुम्हारे स्वर रात को चीरते हुए
पक्षी की तरह, खून सने सुनहले तीर की तरह
उड रहे थे
ओह ! ओह ! तुम्हारे तन के सगीत ने
मुझे पागल कर दिया था !

तुम्हारी अलकें काली थो–रेशमी थी
काली—मगर शोक सूचक नही
मेरे हाथो मे जूही के फूल थे
उनमे से हर फूल—तुम्हारे तन की सिहरन
तुम्हारी सिसकारियो और शिकायतो का प्रतीक था !

दूधिया चाँद, महकदार मिठास
गीत और दर्द के धूपछाँही धागों से
बुने हुए छत्र के नीचे खड़ी हुई
मेरी नन्ही जिंदगी—
मेरी साँवली धूप !

तुम्हारी अलकें काली थीं—रेशमी थीं
काली—मगर शोक सूचक नहीं !

—एंगेल मीगेल फेरमेल

अन्तहीन कहानी

तुम दुखी क्यो हो
याद रखो कि हम लोगो ने एक अन्तहीन कहानी लिखी है
जिसके एक छोर पर छोटी सी चीटी है
दूसरे छोर पर दूर, सुदूरतम नक्षत्र

चट्टान और हरे-भरे कुज
खण्डहर और बच्चो के पालने
सभी उस कहानी के अग हैं
हल लोगो ने ऊमर बजर ज़मीन को इतना सुख दिया है
कि वह अपने अन्दर छिपे नक्षत्रो और फूलो को
पहचान गयी है ।

संगीत, चुम्बन और तितलियो से बुनी हुई
हमारी कहानी सृष्टि की आदिम कहानी है
प्रतिध्वनियो, छायाओ और कोहरे के
छलना महलो की तरह
हमारी कथा रहस्यमयी है
युगो से परे है

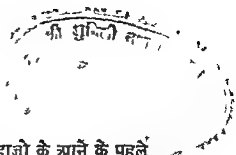
धरती मे दबी ढँकी जलधाराओ के ढग
की कहानी
वेदनामय जरूर होती

हमारी आँखें नहरें जरूर बन गयी होती
पर हमारी कहानी तो धरती से सितारो
की ओर उठने वाली कहानी है
और सितारो की ऊँचाइयो से खण्डहर
और चीड के कुज कितने छोटे लगते हैं।

हमारी कहानी पर वे सभी देवदूत घिर आयेंगे
जो अभी पैदा ही नही हुए
वे फूल और जो रात के अन्धेरे मे खिल कर अनजाने ही-
मुरझा जाते है
नववधू के फूल मुकुट से झरने वाले नीबू के फूल
इस कथा से महक उठे हैं।
तुम सुन रही हो न ? समझ रही हो न ?

आदम गा रहा है
हवा निश्वासें भर रही है
हवाएँ करवटें बदल रही है।

—ऑटो द सोला



आक्रामक हवाई जहाज़ो के आने के पहले

अगर सुबह खिले हुए ताजे कमलो की छाया मे
सोये हुए इन बच्चो को भी अन्त मे मरना है
अगर चाँद की छाया मे खडी उस दीवार को गिरना है

तो ओ कब्रो के भेडिये !
तुम कोई चीज साबित न छोडना, नही तो हमारा
दुख दुगुना हो जायगा ।

कार्नेशन के फूल और खिडकी पर झूलती लतरे
कहती हैं हमे भूल जाओ !
तितलियाँ उडते-उडते भीगी घास पर पडे
मुर्दो पर बैठ जाती है !

ओ कब्रो के भेडिये !
तुम गिरती हुई दीवारो का शोर
और उनमे कुचलते हुए बच्चो की चीत्कार सुनोगे ?
क्या तुम सुबह को भी—
कोहरे की कब्र मे दफन कर दोगे ?

अगर इस पतझड के चाद की छाया मे
सभी चीजो को तुम ध्वस्त करने आये हो
तो कोई चीज साबित मत छोडना

[illegible] के [illegible] को भी मत छोड़ना
[illegible] को मासूम बालियाँ याद आती हैं।

[illegible] मत छोड़ना
[illegible] की याद दिलाती है।

[illegible] मत छोड़ना जो
[illegible] की तरह सिसक रही है।

—ऑटो द सोला

नया समर्पण

जब पत्थर के नीचे मेरी हड्डिया छितरा जायें
और मेरी कब्र पर
एक झाड-झखाड के सिवा कुछ न रहे
और जब तुम्हारी कब्र पर एक गुलाब फूले
और सिर्फ वही—
तुम्हारे यौवन की स्मृति रह जाये
जब हमारे आज के मीठे चुम्बन के क्षण की—
नशीली साँसे
हवा के हजारो झोको मे बिखर जायँ
जब हमारे नाम तक सिर्फ प्रतिध्वनि-विहीन
ध्वनिया मात्र रह जायें।
और तुम सिर्फ गुलाब मे रहोगी—मै झाड-झखाड मे शेप
रहूँगा
और हमारा प्यार इन भटकी हवाओ मे

सुनो मेरी बात सुनो
मै चाहता हूँ हम दोनो सदा अमर रह
लोगो के होठो पर, लोगो के दिलो मे
इन्सान की जिन्दगी की अनादि प्रवहमान धारा मे
हम और तुम दोनो रहे
बच्चो की हँसी मे
मनुष्य की आगामी शान्तिमय सस्कृति मे

उस समय में कहीं दुख नहीं।

इसलिए आओ
हम अपने [illegible], [illegible], [illegible]
और [illegible] का [illegible] कर दें
[illegible] सब [illegible]
हम [illegible] का [illegible] कर द
[illegible] को [illegible] था।

—[illegible]

स्पेन

स्पेन

पूर्णिमा झील के किनारे

उजली रात मे,
झील की सेज पर
नीद-डूबे दर्पण-जल
जिन पर पूनम का चाद
नक्षत्र-सेना के साथ रखवाली कर रहा है

और एक भरे बबूल-वृक्ष का साया
लहर हीन दपण मे, उजली रात
जिसमे जल पालना बन जाता है
महानतम गूढतम ज्ञान का

प्रकृति अपनी बाहो पर आस्मान का
च दोवा सम्हाले है
आस्मान का गिरता हुआ चन्दोवा

और रात के मौन मे
प्रेमी की प्राथना सजग है
एकान्त प्रेम-विभोर
जिसका एक मात्र वैभव प्रेम है।

—मिगुएल द उनामुनो

गलियारे

बादल खुल गया
इन्द्रधनुष पहले से चमक रहा था,
और खेत
सूरज और फुहारो की लालटेन पर चित्रित से थे

मैं चौंक कर जाग गया
कौन मेरे सपनो की जादू खिड़की पर बादल बन आया था
डर और अचरज से मेरा दिल बुरी तरह धड़क रहा था
फूल लदा नीबू,
बाग मे साइप्रेस का कटा कुन्दा,
हरे खेत, सूरज, फुहार, इन्द्रधनुष
        तुम्हारी अलको मे उलझी जल बूँदे

आह यह सब तो स्मृति मे अनुभावित था
जैसा हवा मे साबुन का बुल्ला।

—*अन्तोनियो मशादो*

मुझे सज्ञा दो

विवेक, मुझे वस्तुओ को ठीक ठीक सज्ञा दो
मेरे शब्द स्वत सिद्ध, स्वत सार्थक हो
मेरी आत्मा के द्वारा नवरचित

वे जो जानते नही
मेरे माध्यम से उपलब्ध करें
वे जो भूल रहे हैं
मेरे माध्यम से उपलब्ध करें
वे जो उन्हे अतिशय प्यार करते है
मेरे माध्यम से उपलब्ध करे

विवेक, ठीक ठीक सज्ञा दो मुझे, और अपनी सज्ञा
और उनकी सज्ञा और मेरे शब्दो
की सज्ञा

—*जुआँ रेमों जिमिनेज़*

आज रात

आज रात दरवाजे खुले छोड दो
कि कही वह जो दिवगत हो चुका है शायद
आज रात लौटना चाहे

खुला रहने दो कि देखें
कही हम उसके रूप से मिलते हुए तो नही हैं,
कि कही हम आकाश मे उन्मुक्त फैली
उसकी ही आत्माके कोई अश तो नही है,
कि देखें शायद महान् अनन्त मे से कुछ आये जो हममे
घुल जाय
कि हम यहाँ अशात मृत हो जाय
और अशत , वहाँ उसमे जो उठें

आज सारे घर को खुला छोड दो

लगता है जैसे सचमुच सशरीर उपस्थित है नीली रात मे
हमारे साथ रक्त की तरह,
और तारो मे फूलो की भाति

—*जुआ रेमों जिमिनेज़*

लोभ का देवदूत

जो ससार के नक्शे पर नही है
उस देश के लोग
उस नगर के चौराहो पर कह रहे थे

यह आदमी मर चुका है
पर जानता नही
वह बैको, इस्पात की चिमनियो, नक्षत्रा, सुनहरे धूमकेतुओ
पर कब्ज़ा करना चाहता है
खरीदना चाहता है वह
जो अलभ्य है यानी
आकाश
और जानता नही कि
खुद मर चुका है

भूगर्भ के कम्प उसकी भौहो की
सिकुडन हैं
कटे कगारो की धँसान,
उन्मत्तो का प्रलाप
फावडो से धरती के खुदने का स्वर—
ही उसके श्रवण हैं
उसकी आखें
गैस की धुँआ भरी लपटे

नम सोने के गलियारे
उसका हृदय
चट्टानो का विस्फोट
डाइनामाइट
उल्लास का स्फोट

वह खानो के सपनो मे डूबा है

—राफ़एल आल्बर्ती

निर्वासन का गीत

कौन हो तुम जो इतने भयभीत,
मुझे पुकारते हो
सुदूर से, शब्दहीन—
और स्तब्ध मौन हवाओ पर
चुपचाप
बोलते हो मेरा नाम

कौन हो तुम
क्या चाहते हो, क्यो सिसक रहे हो तुम
और इन सुदूर आवाजो मे
कौन है जो दम तोड रहा है,
कौन हो तुम जो इस मूक पुकार से
मेरे अस्थिपजर तक को
मास से बाहर खीच रहे हो

मेरे दाँतो के नीचे एक
जमे हुए शब्द का स्वाद है
मेरी जीभ पर एक मृत भय का स्वाद
और मेरे हृदय मे एक बद धडकन का

रक्त मे वृषभ चर्म प्रवाहित है,

समुद्रो मे सूखे हुए आँसुओ का सूखा सागर
जिन्होने मुझे कभी पुकारा था
वह तो कब के जा चुके हैं

—राफ़ाएल आल्पर्ती

चाँद झाँकता है

जब चाँद उगता है
शाम की घण्टियाँ खामोशी मे डूब जाती हैं
और अभेद्य रहस्यमय रास्ते दीखने लगते हैं

जब चाँद उगता है
समुद्र ज्वार मे पृथ्वी पर छाने लगता है
और हृदय बन जाता है
अनन्त प्रसार मे एक छोटा सा द्वीप

जब चाँद उगता है
हज़ार हज़ार यकसाँ बिम्बो मे
सौ थैलियो मे से रुपहले सिक्के
ग्लानि से रो देते है ।

—फेडेरिको गार्सिया लोर्का

प्यार हमारे बीच उगा

प्यार हमारे बीच मे उगा
जैसे चाँद
दो ताड वृक्षो के बीच
जो कभी आलिंगन मे बँधे नही

हमारे दोनो जिस्मो की छुपी हुई आवाज़
लोरी की ओर बढी
मगर कडवे गीत झकार उठे
होठ पथरा गये

परस्पर जकड लेने की वाछा ने
मासलता को स्पदित किया
अस्थियो को धधका दिया
लेकिन जब बाहे फैली
और मिली
तो मिलते ही निष्प्राण हो गयी

प्यार डूब गया हमारे बीच
चाँद की तरह
और खा गया हमारे एकाकी जिस्मो को

और हम अब दो प्रेत है
एक दूसरे की खोज मे आकुल
और दूरियो मे मिलते हुए

—मिगुएल हर्नान्देज़

आवाज़

अगर आखो से पी सकता मै
आवाज को, देख सकता तो
किस कदर देखता आवाज के रूप मे तुम्हे,
तुम्हारी आवाज मे एक जोत
जो मुझपर चमकती है,
सुनने की चमक,

जब बोलती हो तुम
तो दिशाएँ धधक उठती है
कि वह विराट अन्धकार
जो मौन है टूट जाता है

तुम्हारी आवाज मे उजराइ है
तडके सुबह की,
दिन की, जब वे तरो ताजे मेरे पास आते है।
जब तुम कोइ
बात बोलती हो
तो एक उल्लास ऊर्ध्वोन्मुख।
एक दोपहरी छा जाती है
यद्यपि दीखता नही।
तुम रात को बोल दो
तो रात रात नही रहती

यह कमरा एकान्त नही रहता
अगर तुम्हारी आवाज़ आ जाय अशरीरी और हल्की
क्योंकि तुम्हारी आवाज़ स्वत अपने इच्छा-तनका निर्माण
करती है

शून्य अन्तराल मे अगणित आकार
सुकोमल सम्भावित आकार उदित हो जाते हैं
तुम्हारी आवाज से ।
होठ और बाहे जो तुम्हे खोजते हैं छले जाते हैं
और होठो की आत्माएँ, बाँहो की आत्माएँ
चारो ओर खोजती है उन अशरीरी सूक्ष्म दिव्य आकारो म,
जो तुम्हारी आवाज से बन गये हैं
और श्रुति के उजाले मे
आँखो से जो परे हैं इस लोक मे
—वे दोनो—सम्पूर्ण उज्ज्वल—हमारी ओर से
आलिंगन करते है—हम तुम नही—वरन
वे दोनो प्रेमी जिनके लिए न दिन है न रात
सिवा तुम्हारी तारो-घुली आवाज़ या तुम्हारी आवाज़ की धूप

—पेद्रो सालिनस

सोवियत रूस

छोटा काला आदमी

एक छोटा काला आदमी शहर मे से दौड गया।
सीढियो पर चढकर उसने सारी लालटेने बुझा दी।

धीमे धीमे गोरा चिट्टा प्रभात आ रहा था
जब यह काला आदमी सीढियो पर था

शान्त सुकुमार छायाएँ शहर पर तैर रही थी
लालटेनो की पीली धारियाँ सो रही थी
सुबह की उजियाली देहरी पर बिछ रही थी
पर्दों म भिद रही थी, दरवाजो मे झांक रही थी।

शहर कितना बेजस सा, कितना श्रीहीन सा
लगता है जब प्रभात आने वाला होता है

बाहर घुटनो मे सर छिपाये छोटा काला अदमी
जार जार रोता है, सिसकता रहता है।

—अलेक्जेण्डर ब्लाक

प्रलय-दिवस की भेरी

समस्त धरा पर एक रव फैल जाता है
एक मर्मर, एक हलचल।
भेरी का आह्वान समस्त आकाशमें गूँज जाता है
"लो बन्धु, हमारे लिए आह्वान हो रहा है। उठो जागो!"

"नहीं, अभी अन्धेरा अटल है,
मै उठूँगा नही, जागूँगा नही
मुझे उठाओ मत, जगाओ मत
मेरी कब्र को खटखटाओ मत।"

"अब तुम सो नही सकते, इस बार
आह्वान का स्वर कठोर है,
आखिरी पुकार है यह
जैसे गर्भाशय से नया जीवन प्रसूत होता है
वैसे ही मकबरो से सब उठ रहे हैं।"

"नही मैं नही उठ सकता। मेरे सारे अनगाये गीत
मन के मर चुके। मेरी पलको पर मृत्यु की मोहरें हैं।
उनके मिथ्या आह्वानो पर मैं विश्वास नही करता।
मैं नही उठूँगा, मैं उठ सकता ही नही
बन्धु, मैं लज्जित हूँ, सकुचा रहा हूँ—
धूल, विकृति, सड़ायँध, गलीज़।"

"बन्धु, प्रभु ने हमारी कब्र, हमारे कारागार देख लिये हैं।
अब सबको मुक्त होना पडेगा
सबको अपने कृत्यो का निर्णय सुनना पडेगा
देवदूत उसका सिंहासन वहन कर रहे हैं
हमारा प्रभु हमारा पिता अवतरित हो रहा है
जो मृतक हैं उन्हे जीवित होना पडेगा—
खुशी से या नाखुशी से
बन्धु—तुम उठोगे, जागोगे।"

—*डिमिट्री मर्फोव्स्की*

समस्त धरा
एक मर्मर, ८
भेरी का आह्व
"लो बन्धु, ए'''।

"नही, अभी अन्धे
मैं उठूँगा नही, जाग,
मुझे उठाओ मत, जा
मेरी कब्र को खटखटा

"अब तुम सो नही सक,
आह्वान का स्वर कठोर
आखिरी पुकार है यह
जैसे गर्भाशय से नया जीव
वैसे ही मकबरो से सब उठ

"नही मैं नही उठ सकता।
सब के मर चुके। मेरी पलकों
उनके मिथ्या आह्वानो पर मैं
मैं नही उठूँगा, मैं उठ सक्ता हो
बन्धु, मैं लज्जित हूँ, सकुचा रहा
धूल, विकृति, सडायँघ, गलीज।

पर कालो के पास
पाई नही
अत विलो के
हाथ मे झाड़ू है
और वह खडा चौराहा
बुहारता है

जिन्दगी भर विलो
बुहारता रहा है
और बिना शक

उसके द्वारा बुहारा गया
कूडा, महासागरो जैसे
कूडेखानो को भर दे

इसीलिए झर गये ह
विलो के बाल

ौर इसीलिए धँस गया है
का पेट।

जन
विनम्र दृश्य प्रस्तुत करते हैं

विलास है

काला और गोरा

अगर आप देखें
    हवाना को
        अपने सेरवोनो मे से,

वह द्वीप—
    पूरा बहिश्त है,
        किसी चीज की कमी नही

ताड के घने कुजो मे
    एक पाव से खडे
        सारस

कोलेंरिया
    चतुर्दिक् फूले हुए
        वेदादो
            लहराते हुए।

मगर
    हवाना मे
        सब कुछ विभाजित है

गोरो के पास
    डालर हैं—
        और वे समूचे मालिक हैं

पर कालो के पास
पाई नही
अत विली के
हाथ मे झाडू है
और वह खडा चौराहा
बुहारता है

जिन्दगी भर विली
बुहारता रहा है
और बिना शक

उसके द्वारा बुहारा गया
कूडा, महासागरो जैसे
कूडेखानो को भर दे

इसीलिए झर गये है
विली के बाल

और इसीलिए धँस गया है
विली का पेट।

विली
के चन्द मनोरजन
एक उदास, विनम्र दृश्य प्रस्तुत करते हैं

छह घण्टे की
नीद
उसका एक मात्र विलास है

और, कभी जब किस्मत तेज हो
तो कोई भागता चोर
या शराब का इन्स्पेक्टर

जाते जाते
बेचारे नीग्रो की
ओर एक अघेला फेंक देता है

क्या कुछ फायदा हो सकता है
अगर लोग
सर के बल चलने लगें ?

इस तमाम धूल का
कुछ इलाज तो
आखिर होना चाहिए !

फिर आदमी के सर मे हजारो बाल है
जो धूल फैलाने मे

सहायक होते हैं,
पर पाँव तो
आदमी के पास केवल दो है।

खुशनुमा
प्राडो
सुगन्ध और गीत-भरा
गुजर जाता है,

कभी उदात्त, कभी अनुदात्त
उद्भ्रान्त जाज़ के
स्वर आते हैं।

आदमी,
जो दिमाग से खाली है

समझ सकता है
कि हवाना
ही वह जगह है जहाँ आदम का बहिश्त था।

पर कुछ उलझनें
चिली के दिमाग मे
बसी हैं

ज्यादा तो नही
क्योंकि कम बोया गया है
उसके दिमाग मे
कम उगा है,

एक चीज़ और केवल एक चीज़
उसके दिमाग मे टिकी है

किन्तु वह
गहरी नक्श है,
स्मारक के पत्थर-सी

"गोरे खाते हैं
अनन्नास
पके और रस भरे

काले खाते हैं
   अनन्नास
      कीचड़ में सड़े हुए

गोरों के सामने
   चुनने की स्वतन्त्रता है
      उसे हलके काम मिल सकते हैं

काले
   मेहनत का काम करते हैं
      क्योंकि वही उन्हें मिलता है !"

सिर्फ चन्द
   समस्याएँ हैं
      जो बेचारे विली को परेशान करती रहती हैं

पर उनमें से एक
   बहुत गाठ-गठीली है
      सबसे गाठ-गठीली है,

और जब
   वह उसको कुरेदती है,
      तो बिलकुल उसे उद्भ्रान्त बना देती है—

इतना उद्भ्रान्त, कि
   उसकी झाड़ू
      उसके काले हाथों से गिर जाती है।

और हुआ यह कि
उद्योगपतियो मे सबसे बडा उद्योगपति—
शक्कर-सम्राट्—

—जिन दिनो विलो के मन म
सशय घुमड रहा था—

मिलने आया,
सफेद झकाझक
पोशाक मे,
सिगार-सम्राट् के
दफ्तर मे
जिसके आस-पास विलो मडरा रहा था।

नीग्रो
जाकर खडा हो गया
चर्बीदार छैल-छबीले के सामने—

"जरा सुनिए सरकार
हजूर
आप बडवार मनई हैं, बडे लोग है—

लेकिन शक्कर
जो इतनी सफेद है, इतनी गोरी है,

उगायी जाती है,
पेरी जाती है, बनायी जाती है
काले भुच्च काले नीग्रो के द्वारा ?

काल
चुरट
गोरे मुँह मे ठीक नही लगते—

वे कही अच्छे लगते हैं
चेहरे मे
जो काला हो,

और अगर
शक्कर
आप के लिए इतनी सुखदायी है

तो खुद
आप क्यो नही
पायचे समेट कर
खेत मे जाते ?'

अब ऐसा सवाल
सुनकर
आप जाने नही तो नही ही दे सकते,

शक्कर सम्राट् का
गोरा चेहरा
बिलकुल जद पड गया

घुमनी नचैया
की तरह
उसने घूमकर एक भरपूर हाथ दिया

और फिर
उस काले को छुए हुए
दस्ताने को भी फेंककर
काले विली को फर्श पर
तड़पता छोड़कर
चला गया

नीचे गिरे विली के चारों ओर
खूबसूरत पेड़ दीखते हैं

हरे-भरे
उसके सिर के ऊपर
घने कदली-कुंज

उसने अपने हाथ से
नाक से गिरता रक्त पोंछा

(बेचारा जितना कमाता है
उसमें कहाँ है गुंजायश
अट्टी-पट्टी की)

विली ने अपना
जबड़ा छूकर देखा
अपनी टूटी नाक साफ की

और उठा ली फिर से
अपनी बुहारी, उसे
कहाँ से मालूम होता

कि

वे नीग्रो

जो ऐसा सवाल उठाना चाहते हैं

वे भेजें इसे

मास्को में

कोमिण्टर्न को ?

—वाल्डीमीर वाल्डीमिरोविच मायकोवस्की

आशाएँ हेमन्त द्वारा चित्रित

आशाएँ, हेमन्त के द्वारा चित्रांकित, चमक रही हैं,
मेरा धैर्यवान् अश्व चलता जा रहा है, चुपचाप मौन नियति
की तरह
उसके नम भूरे होंठ छूते हैं अस्तरको
जब मेरा लबादा झूलता, लहराता सीधे नीचे लटक आता है

एक दूर जाती हुई राह पर अनजान लीकें, जो
ले जाती है न विश्राम को, न युद्ध को, बुलाती है और
धुँधलाती जाती है,

जाते हुए दिन की सुनहरी एड़ियाँ झिलमिला कर छिप जायेंगी
और बीतते वर्षोंके हृदय में मेरे तमाम श्रम दफन हो जायेंगे।

—सर्जी येसेनिन

निरभ्र शरद में

निरभ्र शिशिर मे घाटियाँ नीली पडी हुई कांपती हुई,
नाल जडे टापो की तीखी टप टप।
सूखी घासें फूले लहँगे लपेटे इकट्ठी होकर
ताबे के पत्तो पैसे लुटा रही ह हवा मे झूमती डालियो मे

निर्जन गह्वरोसे पतला मेहराब उठ रहा है,
कोहरे घुँघरा आये हैं हवाओ मे और काई की तरह फैल
रहे है,
और शाम, बहुत पास झुक कर पियराई नदियो के
स्वच्छ जल मे अपने ठण्ड से नीले पडे पाव धो रही है।

—सर्जी येसेनिन

घूंप का देवता

काली बकरिया चराती थी मै अपनी बहन के सँग सँग, वे
वे गेरुई चट्टानो के पास चर रही थी। घास कडी थी और
चुभती थी। पहाडियो की तलहटी मे बडे बडे ढोके
पीठ सेंकते हुए आराम से सो रहे थे
और खाडी स्वच्छ नीली चमक रही थी

मै एक जैतून की छांह मे सोयी थी
उसके उलझे हुए रुपहले आच्छादन
मे मेरे उनीदे अगो पर वह
आया, मकडी के तप्त जाले की तरह
या मधुमक्खियो के गुनगुनाते हुए
बादल की तरह   मेरे चारो ओर

उसने मेरे घुटने खोल दिये
मेरे पाव जैसे सुलग उठे
उसकी श्वेत लपटें मेरे
कुर्ते पर चाँदी के रग मे सुलग
उठी। उसका कसमसाता हुआ
आलिंगन, भारी और मीठा

उसने मुझे पीठ के बल लिटा दिया

आकाश औंधा लगने लगा
मेरे निरावृत वक्ष को कुचाग्रों तक
ताम्रवर्णी बना दिया

—इवान ब्युनिन

सफेद पत्थर

जैसे साफ बावड़ी मे एक सफेद पत्थर पड़ा हो
वैसी ही पथरीली और सफेद, एक स्मृति मुझमे सोयी है
अब मै उसके लिए कोई प्रयास नही करती और न
प्रयास करने की इच्छा ही है मुझमे
उस स्मृति मे कितनी पीड़ा है कितना सुख !

मुझे लगता है कि कोई अगर मेरी आँखो मे झाके
तो वह उसे देख सकता है—स्थायी, विवर्ण
और उसे देखकर वह व्यक्ति और भी
दुखी और चिन्तनशील हो जायेगा

प्राचीन काल मे देवता शाप देकर मनुष्यो को
पत्थर बना देते थे, किन्तु उनमे एक वेदना
छोड़ देते थे जो बराबर सुलगती रहती थी, कचोटती रहती थी
ये वेदनाएँ अनन्त काल तक सुलगती रहेगी,
और धीरे धीरे मैं खुद एक स्मृति बनती जाती हूँ ।

—अन्ना अरमातोवा

हवा

मै व्यतीत हुआ, पर तुम अभी हो, रहो।
हवा, चीखती झल्लाती हुई हवा—झकझोर रही है
मकानो को, जगलो को
चीड के अलग अलग पेडो को नही

वरन् सबो को एक साथ—तमाम सीमाहीन दूरियो को—
किसी खाडी मे लगर डाले हुए, लहरो पर उठते गिरते हुए
तमाम जहाजो की तरह,
और हवा उन्हे झकझोर रही है
केवल चचलता वश नही
न निष्प्रयोजन क्रोध से अन्धी होकर
वरन् अपनी चरम पीडा मे से,
मन्थन म से,
तुम्हारी लोरी के लिए उपर्युक्त शब्द
खोजते हुए

—बोरिस पास्तरनक

पतझर

मैने बिखर जाने दिया है अपने कुटुम्ब को
बिखर गये है मेरे प्रियजन
एक आजीवन अकेलापन
मेरे स्वभाव मे मेरे मन मे बस गया है,

और यहाँ मै हूँ, तुम्हारे साथ एक छोटे से घर मे।
बाहर है जगल, निजन, रेगिस्तान की भाति।
गीत के अनुसार—पथ और पगडण्डियाँ
कब की घास से ढक गयी हैं

काठ की दीवारें उदास हैं
क्योकि उनमे केवल हम दो है, उन्हे अपलक घूरते हुए
पर हमने कभी बन्धनो का अतिक्रमण नही किया।
हम ईमानदारी से नष्ट हो जायेगे।

एक बजे हम मेज पर बैठ जाते हैं,
उठते हैं तीन बजे
मै अपनी किताब लिये हुए, तुम अपना कसीदा
सुबह हमे याद भी नही रहता
कि कब हमारे होठ होठो से अलग हुए।

पत्तियो ! सर सर मर मर झरो और अपने को छरवा दो

सदा से ज्यादा शान से, सदा से ज्यादा बेकौसपन से
कल तक की कड़वाहटो के प्याले को
और भी लबरेज़ कर दो आज के दर्द से

निष्ठा, लालसा और सुख को
रेशा रेशा बिखर जाने दो, पतझर की गरजती झंझा मे
और तुम जाओ और लीन हो जाओ इस चिटकते पतझर मे
खामोश हो जाओ, या बौरा उठो

तुम उतार फेकती हो अपने वस्त्र
जैसे झाड़ियाँ, अपनी पत्तियाँ झाड़ देती हैं,
और रेशमी डोर से कसे एक ड्रेसिंग गाउन मे लिपटी
मेरी बाँहो मे लहरा जाती हो

तुम इस विनाशगामी पथ की एक मात्र मिठास हो—

जब जि़न्दगी बीमारी से भी बदतर हो जाय
तब सौन्दर्य केवल दुस्साहस की मिट्टी मे पनप सकता है
यही एक दुस्साहस का सूत्र हमारा बन्धन बन गया है
हमारा मगल सूत्र।

—बोरिस पास्तरनक

प्रातःकाल

तुम मेरी नियति थी, सब कुछ,
और फिर आया युद्ध, विध्वंस।
और कितने, कितने दिनों तक
न तुम्हारा अतापता, न कोई खबर

इतने दिनों बाद
फिर तुम्हारी आवाज़ ने मुझे झकझोर दिया है
रात-भर मैं तुम्हारा अभिलेख पढ़ता रहा हूँ
महसूस हुआ जैसे कोई मूर्च्छा टूट रही हो

मैं चाहता हूँ लोगों में मिलना, भीड़ में,
भीड़ की प्रातःकालीन हलचल में—
मैं चाहता हूँ हर चीज़ की धज्जियाँ उड़ा देना
ताकि वे घुटने टेक दें

और मैं सीढ़ियों से नीचे दौड़ जाता हूँ
गोया उतर रहा हूँ पहली बार
उन बर्फ़ानी सड़कों में
उनके सूनसान फुटपाथों पर

चारों ओर बत्तियों की रोशनी है, घरेलूपन है, लोग जाग
रहे हैं

चाय पी रहे है, ट्राम पकडने दौड रहे हैं
बस महज़ चन्द मिनट और
कि शहर की शकल बदल जायेगी

बर्फीला अन्धड एक जाल बुन रहा है
घनघोर गिरते बर्फ का जाल, फाटक के पार।
लोग वक्त पर पहुँचने की हडबडी मे
अधूरी थाली, अधूरी चाय छोडते हुए

मेरा मन उनमे से एक एक की ओर से महसूस करता है
गोया मै उनकी काया मे जी रहा होऊँ
पिघलते बर्फ के साथ पिघलता हूँ मै
सुबह के साथ मैं तेज पडने लगता हूँ

मुझम है लोग—अज्ञातनामा लोग—
बच्चे अपने घर मे तमाम उम्र गुज़ार देनेवाले लोग, वृक्ष।
मैं उन सबके द्वारा जीत लिया गया हूँ
यही मेरी एक मात्र जीत है।

—बोरिस पास्तरनक

वसन्त

मै बाहर सडक पर से आ रहा हूँ बसन्त जहाँ
चिनार का वृक्ष अचरज मे खडा है, जहाँ विस्तार हिम्मत
हार बैठा है
और इमारत भयभीत खडी है कि कही गिर न पडे
जहाँ हवा नीली है, मैले कपडो के बण्डल जैसी
अस्पताल छोडते हुए रोगी के हाथो मे—

जहाँ शाम खाली खाली सो है एक तारा कोई कहानी
कहना शुरू करता है
और बीच मे कोई बोल देता है, उत्कण्ठित नेत्रो की पातो
पर पाते
घबरा जाती हैं, इन्तजार करती हुई उस सत्य का जिसे
वे कभी न जान पायेंगी, उनकी अथाह दृष्टि खाली है।

—बोरिस पास्तरनक

एक कविता

अगर मुझे मालूम होता कि आगे क्या होगा
तभी जब मेरा नाट्य काय आरम्भ हुआ था
कि शब्द रक्त के प्यासे हो जायेंगे, हत्याप्रिय
गला थाम लेंगे, किसी मनुष्य का दम घोट देंगे
ऐसी उलझन भरी जीवन प्रक्रिया से खेलने के लिए
मैं साफ नही कर देता—
इतनी सुदूर थी मेरी शुरूआत
इतनी भयाक्रान्त थी मेरी चिन्ताएँ।

किन्तु यह युग तो पुराना रोमवासी है
जो चमत्कारोक्तिया और कलाबाजिया देखते देखते
अधीर होकर चाहता है कि अभिनेता सिफ सवाद न बोले
बल्कि सचमुच स्टेज पर अपना दम तोड दे

अनुभूतिया लिखा देती है एक पक्ति और भेज देती है
उसे गुलाब की तरह रगमच पर, और उसके
अर्थ यह हैं कि कला का काम खत्म हो गया है
और अब ससार जाने और भाग्य जाने

—बोरिस पास्तरनाक

हमारा गीत

धूप मे नहाये हुए स्टेपीज से लेकर
बर्फ ढँकी घरती, जमे हुए समुद्रो के प्रदेश तक
पूर्वी रूस के धूमाच्छादित पर्वत शिखरो मे
पश्चिमी रूस के श्यामल कुजो तक—
    ससार का महानतम राष्ट्र, शान्ति के उद्देश्य से
    लडे गये युद्धो का विजय-चिह्न लिये खडा है
    उसके श्रमिको का अथक श्रम
    उसकी सम्पत्ति और वैभव मे निरन्तर वृद्धि कर रहा है

(कोरस)

    स्टालिन के अमर सिद्धान्तो से अनुप्रेरित
    हम अनन्त सम्भावनाओ के देश म रहते है
    उसके द्वार सूर्य की ज्योति और सौन्दर्य के प्रति खुले है
    वह तमाम विश्व के ईमानदार लोगो का आश्रय है,
    आशा है

रोम मे, गगा के तट पर
काहिरा म, लन्दन मे
आज शान्तिसेना के दस्तो के लिए
हमारा देश ध्रुवतारा है
    हम फैलते हुए युद्ध की आग को बुझाते है
    हम लडते है न्याय और आजादी के लिए लडते हैं
    शान्ति आन्दोलन हमे अनुप्रेरित करता है

हम महान् सोवियत भूमि के नागरिक हैं

(कोरस)

स्तालिन के अमर सिद्धान्तो से अनुप्रेरित
हम अनन्त सम्भावनाओ के देश मे रहते हैं
उसके द्वार सूर्य की ज्योति और सौन्दय के प्रति
खुले हैं
वह विश्व के तमाम ईमानदार लोगो का आश्रय है,
आशा है ।

—कोन्स्तान्तिन सिमानोव

हालैण्ड

काला वसन्त

धूप मे मौत का आरम्भिक स्वाद,
मधुर उपभोग को शुरू करते हुए,
गुनगुने खेतो पर प्रवाहित ।

नगी सडको पर पवित्र चरणो से हम जाते है
उसके रुतबे से हम आक्रान्त है
और कही पराजय भोगी जा चुकी है

और हर स्त्री प्रस्तुत है
अपने रक्त को उन काले सूर्यो
मे घुलाने के लिए जो हमारे रक्त की छोरो से उगते है

ओह वसन्त—धूप-मादक और गहरे रगो से आप्लावित ।

—गेरि आरतर बर्ग

कन्या

मैं अभी बहुत सुकुँवार हूँ और क्यो यह जीवन निरन्तर
मुझमे अपने को बार बार पलटता है, मेरा रक्त बहुत
निश्शब्द है, देखो
मेरी भयभीत हथेलिया जिनसे मै अपनी गोद को ढाके हूँ
जिममे लज्जा के दाग ह—पतले और विस्मय हत कर
देनेवाले।

मेरे उरोज अभी छोटे हैं, मात्र शोभा के उपकरण
मै उन्ह सगीत की तरह अपने झीने रेशमी पट मे धारण
करती हूँ
मुझे छोड दो, इस मुग्धा वय के अपवाद मे, मै अभी हूँ
ही कितनी ?

—अन्द्रियों मोरिऍ

पिता को

पिता हम ने साथ सफर किया है
फूल मालाओ से रहित सुस्त रेलगाडियो म जो,
रातो को दस्तानो की तरह कभी पहनती कभी उतारती ह
हम साथ रहे है जब तक
अंधेरे ने हमे चारो ओर से मूँद नही दिया

एक हरे रथ के खुशनुमा नन्हे झकोरे मे
तुम कहा सैर के लिए निकल गये हो
पिता, या अभी दिन ने अपने दस्ताने
उतार कर उस मेज पर नही रक्खे
जहाँ गोधूलि मधुर तृप्ति के भराव निश्चित आमन्त्रिता
की तरह आने को हैं

मेरे होठ, मेरे कोमल होठ भिंचे हैं।

—हैन्स लाडीजेन

फसल

रात । ग्रीष्म रात मे अस्त हो रहा है
तुडे मुडे पख गिर रहे हैं । अपनी परिधि को सँकराते हुए
बादल पर्वतो को कस रहे हैं
गाव मे मन्द ममर है और होठो का स्पन्दन

पहले कभी सुनहली निगाहे इतनी दूरियो तक नही पहुँची
झपकते बनो मे नीद-डूबे जीव पडे है
और हेमन्त के समुद्र पर चाँदी के जाल

इक्का दुक्का फुहारें इतने सुकुमार खेल है
कि कामना के फल गिरते हैं
और हाथ फैलते हैं और सलीबो
को धन्यवाद का चुम्बन मिलता है और एक खजर
और तृष्णाएँ बुझायी गयी हैं अन्धेरे की अग्नियो मे

—ल्यूसबर्ट

अश

मैं पुनजन्म लूँ इसके पहले सारी परिधि को
सकुचित होकर, आर्द्र होना पडेगा और तिमिराच्छादित।
वह चलती गयी—पर ज्योति पीछे छूटती गयी
और फिर ममुद्र तट के रेतीले टीलो पर उसे एक आश्चय
दीखा

एक मेमना जिसके होठो पर सिंह का रक्त लगा था,
एक गौरैया जिसने सप निगल लिया था
और एक मज़लूम जिसने अत्याचारी का मासाहार किया था
वे निश्शब्द और सज्ञाहीन बैठे थे
गौरैया आकर उसके सामने खडी हो गयी।

हम स्वग के पिछले दरवाजे से
गलत देश मे जा निकले थे
सप ने अपनी विषभरी पूँछ से
वज्र को काट दिया था, माग निर्देशन किया था
पिछला दरवाज़ा टूट गया
वृत्त पूरा हो गया था

अब मेमना रक्त के धब्बा से रँगा है
गौरैया की आवाज फट गयी है
मज़लूम की नसो मे आदमखोर है।

—यसालिस

सुन्दर क्या है ?

सँकराती पथरेखा
अगारो के फश पर चलना
चट्टानो की परत पर परत
क्षितिज पर तैरती अकेली मछली
सुदूर प्रान्तो मे विद्रोह
विराम ।

और पुन आरम्भ

आखो मे गरम सलाखें
फूटी मूँगफलियो से मृत शरीर
उनका भी एक औचित्य है
कुत्तें तत्र का एक औचित्य है

विराम ।

और पुन आरम्भ

दुर्दिन म बाहर गडे शिविर
घृणा के हाथो मे राइफलें
आखिर सही कौन है ?

क्या जीसस ?
क्या मनुष्य मात्र को प्यार करना गलत है ?

विराम ।

और फिर से आरम्भ

सक्रामक हत्याएँ
किन्तु बँधे हाथ उलट कर पडते हैं
'यह मेरा जीवन है सम्राट्
और अपना जीवन मैं क्यो न जियूँ ?'

विराम ।

और फिर से आरम्भ

क्योकि जब सब धोखा खा रहे है तो केवल
एक मिथ्या का अपराधी नही हो सकता
क्योकि जब सब घृणा पा रहे हैं तो केवल
एक अकेला घृणा नही कर सकता

और पुन आरम्भ

मै जानता हूँ कि बन्द आकार खुलगे
उडान को पख मिलेंगे, सगीत को गायन—
क्योकि मानव की सारी शक्ति की
सार्थकता शिव मे है
और समस्त अशिव नष्ट होगा
क्योकि अशिव अस्थायी है

क्योंकि काला और गोरा,
अँगरेज और जर्मन
अयथार्थ

वे केवल प्रतिच्छायाएँ हैं
उनके आकार, वर्ण, पक्ष और पूँछें
की तसवीरों की तरह अपने नाम—
शरीर में स्थायी नहीं हैं—
वे अपने में जीवन्त हैं और उनमें यथार्थ निहित है
और जो यथार्थ है वह सदा जीवन्त है

विराम।

मैं मानता हूँ सत्य को
मैं विश्वास करता हूँ कि जो सद्भाव
मुझमें है वह सबमें होगा—
मुझमें जो श्रेष्ठतम है
वह सबमें है
जो सुन्दर है
केवल वही पृथ्वी पर टिकेगा
मुझे विश्वास है कि हर वस्तु के
पूर्णत्व का रूप
निर्धारित किया जा चुका है
और यदि हम अपने रूप में ठीक ठीक
उतर नहीं पाये हैं
तो भी कोई हानि नहीं

शायद बँधे आकार खुलेंगे
नयी उड़ानको पंख मिल जायेंगे ?

क्या सगीत को गायन मिल जायेगा ?
क्या अशिव का विध्वस होगा ?
क्या मनुष्यो के जीवन स्वच्छन्द बनेंगे ?
क्या शक्ति शिव के लिए होगी ?
क्या मनुष्य की शक्ति को उसका सूय मिलेगा ?
क्या मनुष्य की शक्ति सूर्य बिन्दु की भाति प्रदीप्त हो उठेगी ?
क्या मनुष्य की शक्ति मत्यु से मोर्चा ले सकेगी ?
सही क्या है ?
क्या युद्ध ?

विराम ।

और फिर आरम्भ

सँकराती पथरेखा
सुन्दर फश पर चलना
आग की परतें
अब मुक्ति बिलकुल निकट है
कि कोई मनुष्य दूसरे मनुष्य को घृणा नही करेगा
क्योंकि वह काला है,
क्योंकि वह पीला है,
क्योंकि वह गोरा है,
या—क्योंकि वह अँगरेज है
या जमन है
या धनी है
या निधन है,
क्योंकि हम सब—मनुष्य है

विराम ।

और पुन आरम्भ

मुक्ति मे अब विलम्ब नही,
कोई मनुष्य दूसरे पर नही पनपेगा
क्योकि कोई मनुष्य अकेले उसका
मालिक नही हो सकता जो सबका है
क्योकि जो सबके लिए है उसको एक विनष्ट
नही कर सकता

इस भयानक माग पर ही
मनुष्य अपने सहयोगी को सहारा देता है
मैं मानता हूँ कि चाहे अभी हम
अँधेरे मे जा रहे हो
शताब्दिया चाहे बीत जायें पर
उजाला
सारे ससार पर फूटेगा
और मेरी आखें आज ही चकाचौध हो रही है

विराम।

और पुन आरम्भ